आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 06 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जून, 2012 ★ आषाढ़, 2069

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

दूध की धरती खून से लथपथ..!

गोमांस निर्यात का कड़वा सच

सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात

व्हिएतनाम, मलेशिया, फिलिपाइन्स, कुवैत, अंगोला, ओमन, इराक, कोंगो, सिरिया, इरान, अर्मेनिया, कोटेडआयवारे, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई

इजिप्त, सौदी अरबिया, अरब अमिराती, जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल, घाणा, कतार पाकिस्तान, बहीरन, अझरबैजन, तजाकिस्तान, अल्बेनिया, नामिबिया, चीन, अफगाणिस्तान, देशो में यह मांस निर्यात हो रहा है।

पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?

अहिंसा तीर्थ

रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र

'अहिंसा तीर्थ', कुसुंबा, अजंता रोड, जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212

सौजन्य

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

"नयनतारा", सुभाष चौक, जलगाँव
✆ 0257-2223903

"स्वर्णतीर्थ", आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद
✆ 0240-2244520

"नयनतारा इस्टेट", उन्दवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक
✆ 0253-2315644

जहाँ विश्वास ही परंपरा है। *मानवीय आहार शाकाहार।*

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जावन्तऽविज्जापुरिसा,
सव्वे ते दुक्खसंभवा।
लुप्पंति बहुसो मूढा,
संसारम्मि अणंतए॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.1

जितने विद्याहीन पुरुष,
वे जग में दुःख बढ़ाते हैं।
बहुधा अनन्त इस भवसागर में,
मूढ कठिन दुःख पाते हैं।।

जून, 2012
वीर निर्वाण संवत्, 2538
आषाढ़, 2069

वर्ष 69 अंक 6

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	वीतराग ध्यान-शिविर	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
	वाग्वैभव(4)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
प्रवचन-	दुःखों का अन्त : दृष्टिपरिवर्तन से	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	12
अध्यात्म-	विचार और अनुप्रेक्षा : एक चिन्तन	-पूज्य श्री उमेशमुनि जी म. 'अणु'	23
दीक्षा-अर्द्धशती-	सरलता, साधना एवं संयम की त्रिवेणी (2)	-श्री सम्पतराज चौधरी	30
	उनके गुण को मैं क्या गाऊँ	-श्रीमती नीलू डागा	64
चिन्तन-	भारतीय संस्कृति के उन्नयन में आध्यात्मिक जीवनदृष्टि की भूमिका	-प्रो. सागरमल जैन	37
	उत्तर आधुनिक युग में श्रावकाचार : परिवर्तन सोच का	-डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	39
प्रासङ्गिक-	गोवंश का कत्ल एवं मांस-विक्रय मौलिक अधिकार नहीं	-डॉ. उदय मुनि	48
पद्य-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(15)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	52
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Social Relevance of Sāmāyika	*-Dr. Samani Shashi Prajñā*	57
युवा-स्तम्भ-	भ्रष्टाचार-उन्मूलन में युवाशक्ति का योगदान	-श्री पदमचन्द गांधी	66
नारी-स्तम्भ-	अच्छा इंसान तो बने बालक	-डॉ. इन्द्रा जैन	75
बाल-स्तम्भ -	चलों साथियों जैन उपाश्रय	-डॉ. दिलीप धींग	77
कविता/गीत-	भ्रूण परीक्षण नहीं कराऊँगी	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	36
	अप्रमाद अनिवार्य नितान्त	-डॉ. दिलीप धींग	47
	भगवन् मुझे उपासक	-महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.	51
	इक देव मेरे अरिहंत	-मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.	74
	प्रभु अन्तर में रहते हैं	-श्री मगनचन्द जैन	79
	जिनकी महिमा को गाता संसार है	-आचार्य श्री विजयराज जी म.सा.	95
	मान गुरुवर महान् हैं	-श्री गजेन्द्र कुमार जैन	121
विचार-	पैसा ही नहीं, धर्म संस्कार भी देखिए	-श्री प्रियेश जैन	65
	अन्धविश्वास	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	116
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (27)	-संकलित	80
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	84
चातुर्मास-सूची-	मरत्नसंघ के संत-सतियों के चातुर्मास	-संकलित	86
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		96
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		117

सम्पादकीय

वीतराग ध्यान-शिविर

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

इस बार राजस्थान के मदनगंज-किशनगढ़ में आयोजित वीतराग ध्यान-साधना-शिविर में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। शिविर का आयोजन 7 से 17 मई 2012 तक वहाँ के प्रसिद्ध आर.के. कम्यूनिटी सेन्टर में आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. की सन्निधि में हुआ था। 'वीतराग ध्यान-प्रक्रिया', 'जैन धर्म में ध्यान', 'वीतराग-योग', 'कायोत्सर्ग' आदि पुस्तकों के लेखक एवं विशिष्ट ध्यान-साधक श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा का इस शिविर में पूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

प्रायः मनुष्य अपने मन के अनुसार चलता है। जैसा मन कहता है वह वैसा करता है। उसकी इन्द्रियाँ मन के अधीन होती हैं एवं वह मन के अधीन। वह कभी सोच भी नहीं पाता कि वह मन को अपने नियन्त्रण में रखकर इस चक्र को बदल सकता है। वीतराग ध्यान की प्रक्रिया इसमें सहायक है। इस ध्यान-साधना में मन को एक साधन के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इसके लिए उसे शान्त, सजग एवं सूक्ष्म बनाया जाता है। मन जितना शान्त होगा, उतना ही उसका सजगतापूर्वक उपयोग किया जा सकता है। उसका सजगतापूर्वक उपयोग करने पर मानव को यह विश्वास हो जाता है कि वह मन की अधीनता से मुक्त होकर उसको अपने आध्यात्मिक विकास में सहायक बना सकता है।

"मन एव मनुष्याणां, कारणं बंधमोक्षयोः" मनुष्य के बंधन और मुक्ति का प्रमुख कारण उसका मन है। अनियन्त्रित मन मनुष्य के पतन का कारण है तो नियन्त्रित मन उसके आध्यात्मिक विकास का साधन बनता है। आज मनुष्य अपने से जितना दुःखी है उतना किसी अन्य से नहीं। वस्तुतः दुःख का कारण व्यक्ति स्वयं ही होता है। अन्य निमित्त तो उसमें गौण भूमिका निभाते हैं। यह दुःख क्यों उत्पन्न होता है तथा इसका निवारण कैसे किया जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर अपने मन का निरीक्षण करने पर सहज ही हो सकता है।

सुख-लोलुपता एवं दुःख से भयभीत होना मनुष्य के दुःख का प्रमुख कारण है। उसकी चित्तवृत्ति इस प्रकार अभ्यस्त हो जाती है कि उसे मनचाही होना ही अच्छा लगता है, अनचाही होना नहीं। वह स्वयं अपने को बदलने के लिए तत्पर नहीं होता, स्वयं को सदैव सही साबित करता रहता है एवं दुःख के कारणों को दूसरों पर मंढता रहता है। जब आत्म-निरीक्षण की प्रक्रिया से कोई गुज़रता है तो उसे यह ज्ञात हो सकता है कि उसका चित्त ही

मलिन है, उसे मलिनता ही अच्छी लगती है, इसलिए वह मलिनता की ओर दौड़ता रहता है।

ध्यान का अभ्यास अपने मन को एवं चित्त को निर्मल बनाने का साधन है। इसमें गहन साधना की एवं धैर्य की आवश्यकता होती है। दृष्टि भी सम्यक् बनानी होती है। जो इस अभ्यास से गुज़रता है उसे अपने मन को नियन्त्रित करने का आत्मविश्वास जाग जाता है तथा वह मन के विकारों को बढ़ने से रोक सकता है।

स्वाध्याय के साथ ध्यान का अभ्यास निरन्तर रहे तो विकारों पर सरलता से विजय पायी जा सकती है तथा संवरपूर्वक पूर्व कर्मों की निर्जरा की जा सकती है। चित्त जब विकाग्रस्त होता है, कर्म जब उदय में आते हैं, तो प्रायः मनुष्य उनके भोग में बह जाता है, किन्तु ध्यान-साधना का अभ्यासी साधक कर्म की उदयावस्था में भी उन्हें समभावपूर्वक देखना सीख लेता है एवं नये प्रगाढ बंधन से बच जाता है। यही आत्मविकास का मार्ग है कि हम अपने कुसंस्कारों से अप्रभावित रहकर उन्हें समाप्त करने का अभ्यास कर लें। ध्यान-साधना हमें यही सिखाती है।

संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जो अपने को शक्ति-सम्पन्न बनाना न चाहता हो। किन्तु एक ओर वह शारीरिक बल, अधिकार-लालसा एवं धनादि की शक्तियों के माध्यम से शक्ति-सम्पन्न बनने का प्रयत्न करता है, परन्तु दूसरी ओर भीतर से पराधीनता के दुःख से दुःखी रहता है। आध्यात्मिक-विकास के मार्ग में जो इन्द्रियों और मन को नियन्त्रित करते हुए विकारों पर विजय प्राप्त करने में सफल रहता है, वही आत्मिक दृष्टि से स्वाधीन एवं शक्ति-सम्पन्न होता है। पराधीन व्यक्ति को शक्ति-सम्पन्न नहीं कहा जा सकता।

ध्यान-साधना के माध्यम से प्रज्ञा का जागरण होता है अथवा कहें कि विवेकशीलता का विकास होता है। अविवेकशील मानव के लिए धन, यौवन, प्रभुत्व आदि अनर्थ के कारण होते हैं, जबकि विवेकशील व्यक्ति इनका सदुपयोग कर आत्महित एवं परहित साध लेता है। उसके जीवन की दिशा बदल जाती है। वह चित्त में उठने वाले विकारों को समतापूर्वक देखने में समर्थ हो जाता है तथा इस समता के माध्यम से ही उन्हें निर्बल एवं क्षीण करने में समर्थ बनता है।

आज के भागदौड़ के युग में मानव एक-दूसरे को देखकर दौड़ लगाए जा रहा है। लक्ष्य का उसने कभी शुद्ध चित्त से निर्धारण नहीं किया। सत्य का जिज्ञासु व्यक्ति हर कार्य सोच-समझकर करता है। इसीलिए आचारांग सूत्र में कहा है- "अप्पणा सच्चमेसेज्जा" सत्य का अन्वेषण व्यक्ति स्वयं करें। ध्यान-साधना सत्यान्वेषण में सहायक होती है। सत्य में मनुष्य को अपनी बुद्धि लगानी चाहिए एवं धैर्य रखना चाहिए। उतावले मनुष्य को सत्य की प्राप्ति होना दुष्कर है। उसका चित्त सदैव उद्विग्न बना रहता है।

ध्यान-साधना के अन्तर्गत प्रारम्भ में अपने चित्त को शान्त बनाने के लिए पूर्ण मौन की आवश्यकता होती है। आवश्यक कार्यों के लिए भी बोलने का निषेध रहता है। संकेतों के माध्यम से समझाने से भी बचने की आवश्यकता होती है। श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसना और स्पर्शन इन्द्रियों को नियन्त्रित करने के लिए उत्तेजक निमित्तों से बचा जाता है। आहार भी एकदम सात्त्विक होता है। गरिष्ठ आहार साधना में वर्जनीय है। सायंकालीन आहार की मात्रा न्यून होती है, इसलिए उसे अल्पाहार कहा जाता है। शरीर में आलस्य न हो, चित्त में प्रमाद न हो, इसके लिए आहार में सात्त्विकता बरती जाती है। पाँच अणुव्रतों एवं अन्य कुछ व्रतों की साधना भी इस ध्यान-साधना के दौरान अपने आप हो जाती है। हिंसा, झूठ, चोरी से तो वहाँ विरमण होता ही है, ब्रह्मचर्य की साधना भी निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्न होती है। महिलाओं एवं पुरुषों के बैठने की तथा ठहरने की व्यवस्था पृथक् होती है। उन दिनों बाह्य परिग्रह भी कुछ नहीं होता। आन्तरिक परिग्रह को जीतने का भी प्रयत्न ध्यान-साधना में किया जाता है।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी महाराज जैन परम्परा के विशिष्ट संत हैं, जो साधना, मेधा, तत्त्वज्ञान, सेवा, श्रद्धा, तपस्या, आत्मीयता आदि विभिन्न गुणों से समृद्ध हैं। अप्रमत्त पुरुषार्थी होकर वे समस्त श्रेय अपने गुरु को देते हैं। गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज एवं आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज की वे पूर्ण कृपा स्वीकार करते हैं। ध्यान-साधना का उन्हें अच्छा अभ्यास है। आचारांगसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, भगवतीसूत्र, दशवैकालिकसूत्र आदि विभिन्न आगमों के आधार पर उन्होंने वीतराग-ध्यान साधना और उसकी प्रक्रिया को इस ध्यान शिविर में भलीभाँति पुष्ट किया है। वे इसे संवर और कर्म-निर्जरा की अमोघ साधना मानते हैं। शिविर में गुरुजी श्री कन्हैयालाल जी लोढा की उपस्थिति से ध्यान-साधकों को उनकी समस्याओं का समुचित समाधान मिलता रहा।

मदनगंज में हुई ध्यान-साधना से 124 श्रावक-श्राविका लाभान्वित हुए। जिनमें 1-2 जैनेतर साधक थे। इनके अतिरिक्त 3 संतों एवं 18 महासतियों ने भी इस ध्यान साधना का लाभ लिया। तत्त्वचिन्तक मुनिश्री ने जिस साधना के अमित बल से ध्यान की गहराई में प्रवेश कराया वह निश्चित ही सबके लिए लाभकारी रहा। प्रारम्भ के तीन दिन श्वास-प्रेक्षा का अभ्यास करवाया गया, जिसके अन्तर्गत अपने श्वास के आवागमन को देखा जाता है। सामान्य जीवन में हमें यह भी ज्ञात नहीं होता कि श्वास कब आता है और कब जाता है? वह नासिका के किस भाग को छूता है, बाहर निकलने पर होठ के ऊपर के भाग को कहाँ छूता है? ध्यान-साधना के प्रारम्भिक तीन दिनों में साधक आँख मूँद कर ध्यान-साधना में कमर सीधी रखकर बैठता है तो वह इन सबके बारे में जान लेता है। इन सबको जानकर भी उसे समता में रहना होता है। न राग करना होता है न द्वेष। प्राचीन काल में कायोत्सर्ग में जो श्वासोच्छ्वास

की गणना का प्रसंग आता है वह सम्भवतः श्वासोच्छ्वास के प्रेक्षण से ही सम्बद्ध है।

तीन दिन की इस साधना के पश्चात् ध्यान का प्रमुख कार्य प्रारम्भ होता है, जिसमें सिर से पैर एवं पैर से सिर तक शरीर में उठने वाली संवेदनाओं को देखा जाता है। यह संवेदनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव है। मुनिश्री ने व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र के 15वें शतक के आधार पर कहा- ''पच्चणुभवमाणे अणिच्चजागरं विहरइ'' साधक प्रत्यक्ष अनुभव करता हुआ सजगतापूर्वक संवेदनाओं की अनित्यता को जानता है। संवेदनाएँ शरीर में उठती रहती हैं, उनमें सदैव परिवर्तन होता रहता है। उन्हें साधक स्वयं अपने मन के द्वारा जानता है। अनित्य संवेदनाओं के प्रति न राग करना उचित है और न द्वेष। इसलिए साधक उन संवेदनाओं को जानते हुए सोचता है- ''पियं न विज्जइ किंचि, अप्पियं पि न विज्जइ'' (उत्तराध्ययनसूत्र 9वाँ अध्ययन) अर्थात् इन संवेदनाओं में न कोई मेरे लिए प्रिय है और न अप्रिय। संवेदनाओं को जानता हुआ साधक आत्म-चेतना का अनुभव करता है। यह आत्म-चेतना का अनुभव चिन्मयता का अनुभव है। सतत चिन्मयता का अनुभव तभी सम्भव है जब मनुष्य समतापूर्वक पुरुषार्थ करे। प्राचीन कर्म-संस्कारों को तोड़ने एवं नवीन संस्कारों के अंकित न होने के लिए यह ध्यान साधना एक अमोघ उपाय है। साधक धीरे-धीरे अभ्यास करता हुआ अपने क्रोध, मान, माया और लोभ को भी देखने लगता है तथा प्रतिक्रिया न करता हुआ समता में रहना सीख लेता है। समता में धर्म है। आचारांग सूत्र में कहा गया है- ''समयाए आरिएहिं धम्मे पवेइए''। वेदना की तीव्रता या मन्दता से कोई अन्तर नहीं पड़ता। अल्पवेदना में भी जीव समता के द्वारा महानिर्जरा कर सकता है तथा राग-द्वेष की धारा में बहने वाला प्राणी गाढ़ कर्म-बंधन को प्राप्त हो सकता है।

यह वीतराग ध्यान-साधना दुःखों से निर्वाण प्राप्त कराने वाली है- ''निवाणट्ठाए वीयराग-झाण-साहणं भवउ''। साधक के लिए स्वाध्याय जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही महत्त्वपूर्ण ध्यान है। ध्यान भी एक तप है, जिसमें कर्म-पुद्गल दग्ध हो जाते हैं। गृहस्थ जीवन अनेक संकटों एवं आपदाओं से घिरा होता है। उसमें चित्त को निर्मल बनाए रखना दुष्कर होता है। किन्तु इस ध्यान-साधना के माध्यम से उसकी निर्मलता संभव है। अपने मन को नियन्त्रण में रखकर उसे विकार रहित बनाना हो तो अवश्य ही वीतराग-ध्यान साधना के शिविर में भाग लेना चाहिए। मुनिश्री के सान्निध्य में भोपालगढ़ एवं फिर गोटन में ध्यान शिविर आयोजित हुए थे, जो सफल रहे। यह तीसरा शिविर भी अत्यन्त सफल कहा जा सकता है। ध्यान की गहराई में जो जितना उतरता जाएगा उसे अपनी आत्मा उतनी ही निर्मल अनुभव होती जाएगी। फिर वह स्वयं अपना नाथ हो जाएगा।

★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

सत्य-दर्शन

इह जीविए राय! असासयंमि, धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो।
से सोयइ मच्चु-मुहोवणीए, धम्मं अकाऊण परंमि लोए।।
जहेह सीहो व मियं गहाय, मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले।
न तस्स माया व पिया व भाया, कालंमि तम्मंसहरा भवंति।।
न तस्स दुक्खं विभयंति नाइओ, न मित्तवग्गा, न सुया, न बंधवा।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं, कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं।।
चिच्चा दुपयं च चउप्पयं च, खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं।
कम्मप्पबीओ अवसो पयाइ, परं भवं सुन्दर-पावगं वा।।
तं इक्कगं तुच्छसरीरगं से, चिईगयं दहिय उ पावगेणं।
भज्जा य पुत्तोऽवि य नायओ य, दायारमन्नं अणुसंकमंति।।
उवणिज्जइ जीवियमप्पमायं, वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं।
पंचालराया! वयणं सुणाहि, मा कासि कम्माणि महालयाणि।।

अर्थ-

हे राजन्! इस अशाश्वत मानव-जीवन में जो अधिक पुण्यकर्म नहीं करता है, वह मृत्यु के मुख में पहुँचने पर, शोक (पश्चात्ताप) करता है। और धर्म नहीं करने के कारण परलोक में भी पश्चात्ताप करता है।

जैसे यहाँ सिंह मृग को पकड़ कर ले जाता है, वैसे ही अन्तकाल में मृत्यु निश्चित ही मनुष्य को ले जाता है। मृत्यु के समय में उसके माता-पिता और भाई-बन्धु कोई भी हिस्सेदार नहीं होते हैं।

उसके दुःख को जाति (ज्ञाति) के लोग बँटा नहीं सकते, न ही मित्रवर्ग और न पुत्र एवं बंधु ही दुःख में हिस्सा बँटा सकते हैं। वह स्वयं अकेला ही प्राप्त दुःख को भोगता है, क्योंकि कर्म कर्त्ता का ही अनुसरण करता है।

द्विपद-सेवक आदि, चतुष्पद-पशु आदि चौपाये जानवर, खेत, घर और धन-धान्य आदि सब कुछ छोड़कर यह पराधीन जीव स्वकृतकर्मों को अपने साथ लिए सुन्दर अथवा असुन्दर (पापयुक्त-खराब) परभव को जाता है।

उस जीवरहित एकाकी चिता पर रखे हुए तुच्छ शरीर को तो अग्नि से जलाकर भार्या (पत्नी) और पुत्र भी तथा जाति के लोग भी अन्य आश्रयदाता का अनुसरण करते हैं।

राजन् कर्मों के द्वारा यह जीवन किसी प्रकार की भूल किये बिना मृत्यु के समीप ले जाया जा रहा है। और यह वृद्धावस्था मनुष्य के वर्ण (रूप रंग या कांति) का हरण कर रही है। पांचालराज! मेरी बात सुनो, पंचेन्द्रियवधादि महानिकृष्ट पापकर्मों को मत करो।

-उत्तराध्ययन सूत्र, तेरहवाँ अध्ययन, चित्त-सम्भूतीय, गाथा-21-26

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

साधर्मि-सेवा

- आज लोग थोथे बाह्याडम्बरों में लाखों, करोड़ों की धनराशि खर्च कर देते हैं, जबकि दूसरी ओर समाज के लाखों भाई-बहन ऐसी कमजोर स्थिति वाले हैं, हजारों ऐसी विधवाएँ हैं, हजारों ही ऐसे होनहार बालक-बालिकाएँ हैं, जो अभाव की स्थिति में बड़े ही कष्ट से अपना गुजर-बसर कर रहे हैं।
- कोई भाई लखपति था, लेकिन विवाह आदि में अधिक खर्च हो गया और कर्जा हो गया, यह बात आपको साधर्मी भाई होने के नाते मालूम है, किन्तु इस बात को बाहर प्रकट करने में उसका व्यावहारिक रूप गिरता है तो आप उसकी कमजोरी प्रकट नहीं करें। इसके अतिरिक्त कोई साधर्मी भाई उदार है, व्रतधारी है, गुणी है, हजारों के बीच में बैठा है, लेकिन लोग उसको जानते नहीं हैं तो उसके गुणों की बड़ाई लोगों के सामने करके उसको चमकाना, उसके गुणों का अनुमोदन करना अभीष्ट हो सकता है।
- जहाँ साधर्मी वात्सल्य है वहाँ किसी को देनदारी के कारण आत्महत्या करने का अवसर नहीं आयेगा, क्योंकि जागरूक समाज किसी व्यक्ति को दुःख के कारण मरने नहीं देगा, हर संभव उसकी सहायता करेगा। कोई भाई बीमार है तो उसके साथ सहानुभूति दिखाने से उसका आधा रोग चला जायेगा। तन से, धन से डिगने वाले को स्थिर करना आपका काम है। मन से, श्रद्धा से डिगने वालों को मजबूत करना हमारा काम है।
- जिस भक्ति-प्रदर्शन की रीति-नीति में स्वधर्मी भाइयों का कष्टनिवारण नहीं किया जाता, उनको वात्सल्य की दृष्टि से देखने का किंचित्मात्र भी प्रयास नहीं किया जाता और स्वधर्मी बन्धुओं के मुरझाये हुए मुख कमल प्रफुल्लित कर उन्हें धर्म-मार्ग में स्थिर नहीं किया जाता तो उस सारे बाह्याडम्बर को विडम्बना मात्र ही समझना चाहिये। संतों की प्राचीन वाणी ने ठीक कहा है-

न कयं दीणुद्धरणं, न कयं साहम्मियाण वच्छल्लं।
हिअयम्मि वीअरागो, न धारियो हारिओ जम्मो।।

अर्थात्-सामर्थ्य शक्ति पाकर भी यदि दीनों का उद्धार नहीं किया, सहधर्मी भाइयों से वात्सल्य-प्रेम नहीं किया, उनके दुःख को अपना दुःख समझकर मिटाने का प्रयत्न नहीं किया और हृदय में वीतराग प्रभु की आज्ञा को धारण नहीं किया तो सब कुछ करके भी उसने अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (4)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

तप और दान

- जितनी-जितनी मात्रा में पाप बढ़ते जा रहे हैं, उतनी-उतनी मात्रा में धर्म और धर्मी संगठित नहीं होंगे तो मुकाबला नहीं कर पाएंगे।
- जितने विकार बढ़ रहे हैं, उतनी मात्रा में यदि सदाचार नहीं होगा तो समस्या हल नहीं होगी।
- पहले घर सुधारा जाए, घर वालों को संस्कार देने की पहली आवश्यकता है।
- संयम जीवन है, धन है, शोभा है, असली रत्न है। जहां संयम है, वहाँ शान्ति है।
- सामान्य-सी, किन्तु अनपेक्षित इच्छा को नहीं रोकने से कभी-कभी एक व्यक्ति ही नहीं, पूरा समुदाय बदनाम हो जाता है।
- जीवन में आई बुराइयाँ संयम से समाप्त हो सकती हैं।
- संयम आत्मा और समाज दोनों का उत्थान करता है।
- दान उसे भी लाभ पहुँचाता है, जो दान करता है और उसे भी जिसको दान दिया जाता है।
- अभयदान शास्त्रों में श्रेष्ठता के शिखर पर आरूढ़ है।
- देकर कभी कोई कुछ खोता नहीं है, अपितु जितना देता है उससे भी अधिक ही पाता है।
- दुःखी पर अनुकम्पा लाकर भोजनादि देना अनुकम्पा-दान है।
- अगर आप दान देने के बदले में पत्थर पर अपना, अपने पूर्वजों का नाम लिखवा रहे हैं तो आपका दान, सात्त्विक दान की श्रेणी में नहीं आएगा।
- कर्त्तव्य समझकर उदात्त भावना से देना सात्त्विक दान है।
- अभयदान, सुपात्रदान और ज्ञानदान से निर्जरा होती है।
- देने वाले का धन कभी देने के कारण से कम नहीं होता।
- सौ हाथों से संचय करिये, पर साथ ही हजार हाथों से देते जाइये।
- मानव! अगर तेरे भाग्य चमक रहे हैं, तेरी अन्तराय टूटी हुई है, तो दिये जा।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-1 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

दुःखों का अन्त : दृष्टिपरिवर्तन से

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा 01 अगस्त, 2011 को जोधपुर चातुर्मास में फरमाए गए प्रवचन का लेखन श्री पुखराज जी मोहनोत, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

तीर्थंकर भगवंतों की देशना रहस्यों से परिपूर्ण है। किसी एक सूत्र को वहाँ जिस प्रसंग में कहा जा रहा है, जिस अपेक्षा से कथन हो रहा है, उसकी प्रधानता रखते हुए उसमें अन्य-अन्य अपेक्षाओं को भी गौणरूप से स्वीकार किया जाता है।

दर्शन एक महानद है, जिसके दो अंतिम छोर हैं, दो विशेष बिन्दु हैं। प्रथम बिन्दु है- कूटस्थ नित्यता का। यह वेदान्त दर्शन की मान्यता है, जिसमें 'ब्रह्म सत्यं, जगन् मिथ्या' को सत्य कहकर शेष सभी को नकार दिया गया है। कूट का अर्थ है पर्वत का शिखर। इसका तात्पर्य है पर्वत-शिखर की तरह सब कुछ अचल है। तदनुसार जगत में जो कुछ है, एकांत नित्य है। एकांत नित्य जहाँ भी माना जाता है, वहाँ सिद्धान्तानुसार लोक में सब अपरिवर्तनशील है।

दर्शन का जो दूसरा छोर है, अंतिम बिन्दु या मान्यता है, उसका कहना है- ''यत् सत् तत् क्षणिकं''। यह बौद्ध सिद्धान्त कहता है सभी चीज अनित्य है, ध्रुव है, अशाश्वत है। यह क्षणिकवाद है। एकान्त नित्य अथवा एकान्त अनित्य इन दो दर्शनों के मध्य शेष सारे दर्शन आ जाते हैं। जैन दर्शन के ग्यारह अंग-सूत्रों में द्वितीय अंग-सूत्र सूत्रकृतांग में दर्शन संबंधी विवेचन मिलता है। स्याद्वादमंजरी भी जैनदर्शन की विशद व्याख्या करती है। तीर्थंकरों की वाणी ने विश्व के समस्त दर्शनों की सच्चाई को पूर्णतः स्पष्ट कर जन-जन के सम्मुख रखा है। कहा गया है-

पंथों का झूठा झगड़ा, जनता का मानस बिगड़ा।
भेद सहिष्णुता की रखी सच्चाई तूने।।
वीर जिनेश्वर सोई दुनियाँ जगाई तूने।।

आपको शायद नहीं पता कि दर्शनशास्त्रों एवं न्यायग्रंथों में जैन-दर्शन को मिथ्यादर्शनों का समूह कहा गया है। इस कथन की वास्तविकता को हमारे पूर्वाचार्यो ने इस प्रकार दर्शाया है- जैसे समुद्र में अनेक नदियां आकर मिलती हैं, उसी प्रकार जैनदर्शन में विश्व के सारे दर्शन-सिद्धांतों का समावेश हो जाता है। आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने 32

'द्वात्रिंशिका' की रचना की। उनमें एक श्लोक का भाव है- हे वीतराग प्रभु! आपके दर्शन में समस्त दर्शन घुल-मिल कर एक बन गए हैं। समुद्र के पानी में जैसे बरसात आने पर अनेकानेक नदियों का पानी समाविष्ट हो जाता है। समुद्र में मिलने के बाद जैसे गंगा के नीर, सिंधु के जल या यमुना के पानी को कोई छांटना चाहे, अलग करके बताना चाहे तो यह संभव नहीं है, ठीक वैसे ही जैनदर्शन भी है।

सांख्यदर्शन असत्य नहीं है तो पूर्ण सत्य भी नहीं है। किसी एक द्रव्य की अपेक्षा से उसे सत्य के निकट माना जा सकता है। बौद्धदर्शन के लिए भी यही बात है। उसे पर्याय की अपेक्षा से सत्य माना जा सकता है। अब इनमें से अपेक्षा को हटा दो तो ये दर्शन पूर्णतया मिथ्या बन जाते हैं। अल्बर्ट आइन्स्टीन का सापेक्षवाद पदार्थ (Matter) की अपेक्षा बताता है, वीतराग भगवंतों का अपेक्षावाद सम्पूर्ण लोक व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करता है।

जैन दर्शन परिणामी नित्यवादी कहा गया है। उसके सिद्धान्त में परिणमन करती हुई प्रत्येक वस्तु की पर्याय तो बदलती है, पर उसका मूल स्वरूप कभी नष्ट नहीं होता। यथा जीव विभिन्न गतियों, योनियों में जन्म लेता हुआ, पर्यायों में परिवर्तन करता हुआ भी जीव ही रहता है, अजीव नहीं बनता। निज स्वरूप को नहीं छोड़ना जीव, पदार्थ आदि का नित्य धर्म है, अतः नित्यवाद है और प्रतिपल कुछ न कुछ परिवर्तन होना यह उनकी पर्याय प्रकृति है जिसे पर्यायवाद कहा गया है। जैन सिद्धांत नित्यवाद और पर्यायवाद दोनों अपेक्षाओं को स्वीकार करता है। स्पष्ट है- एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को प्रभावित तो करता है, पर वह दूसरे द्रव्य में परिणत नहीं हो सकता।

पर्याय दृष्टि से क्षणिकवाद सत्य है, द्रव्यदृष्टि से नित्यवाद सत्य है। क्षणिक भी सही, नित्य भी सही, परन्तु क्षणिक ही सही नहीं, नित्य ही सही नहीं। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य में परिणत तो नहीं हो सकता, पर प्रभावित करता है।

सिद्ध भगवंत लोकाग्र में जाकर अवस्थित हो जाते हैं। लोकाग्र के आगे अलोक में वे नहीं जाते। क्यों? कारण यह है कि धर्मास्तिकाय द्रव्य लोक में ही होता है, अलोक में नहीं। धर्मास्तिकाय का गुण है- गति में सहायक बनना। गतिसहायक द्रव्य जहाँ तक है, बस वहीं तक जीव स्थित या अवस्थित हो सकता है। सिद्ध भी जीव है अतः वह लोकाग्र में ही अवस्थित रहेगा, आगे तो गतिसहायक द्रव्य ही नहीं है। इस प्रकार मुक्तात्माओं पर भी दूसरे द्रव्य का प्रभाव होता है तो हम पर यदि हो तो आश्चर्य ही क्या?

हमारे भीतर आत्मा है, पर हम मुक्तात्मा नहीं, क्यों? कारण आप जानते हैं। अनादि से यह जीव पुद्गलों का गुलाम बना हुआ है, पुद्गलों से प्रभावित है। पुद्गलानंदी बना हुआ है, अपने को नख-शिख पुद्गलों में डुबो रखा है तथा चैतन्य स्वरूप आत्मा को भुला रखा

है। उसकी अनन्त शक्ति को भुला रखा है उसने। अपने पर बाह्य भौतिक पदार्थों, पुद्गलों को हावी बना रखा है उसने। अनादिकाल से इन पुद्गलों की, इस भौतिकी जगत की भूल-भूलैया में फंसा हुआ, जन्म-मरण के चक्र में चार गति, चौरासी लाख योनियों के चक्कर काट रहा है। इतना आदी बन गया है पुद्गलों का कि रोम-रोम, रग-रग में पुद्गलासक्ति बसी है, अतः उसने शुद्ध चेतन पर भरोसा करना ही छोड़ दिया है, अपनी अन्तर की अनंत ज्ञानादि गुणों, शक्तियों पर उसे विश्वास ही नहीं रहा। याद दिलाया जाता है उसे तब भी वह आत्मप्रतीति के लिए तत्पर नहीं होता। परिणामी नित्यवाद में ही यह घट सकता है।

सिद्ध स्वरूपी है आत्मा मेरी, काल अनादि से कर रही फेरी,
पुद्गल लीला में नाच नचंता...,
कृपा तेरी बरसी है गुरु भगवंता।

इसका परिणाम आज तक यह जीव भोग रहा है। जन्म-मरण, रोग-शोक, दुःख-दारिद्र्य आदि की पीड़ा पुनःपुनः भोग रहा है। जन्म लेता है, जीवन भर कष्टों को सहन करता है, उन्हीं कष्टों को सुख मानता हुआ मरण को प्राप्त कर लेता है। फिर जन्म, कर्मभोग और मरण। फिर जन्म-वेदना-जीवन के दुःख-मरण की मारणान्तिक वेदना। निरन्तर यही हो रहा है। एक शरीर से दूसरे शरीर में, एक गति से दूसरी गति में। अनंत चक्र। एक पुद्गल समूह से दूसरे पुद्गल समूह में परिवर्तन का अनंत क्रम।

अन्तर में परमात्मा के समान निर्मल, पर बाहर के प्रभाव से प्रभावित होकर यह स्वयं ही ताना-बाना बुनता रहता है। बंधे हुए कर्म भोगता है जीव, हर गति, हर जाति, हर जन्म में। पूर्व कर्म को भोगते हुए दुःख-सुख में शुभाशुभ भावों का तरतम प्रवाह होता है। कर्मबंध की बात करें तो प्रवाह की अपेक्षा से जीव के सतत रूप से कर्मबंध होता ही रहता है। आठ कर्मों में से आयुष्य कर्म को छोड़कर शेष सातों कर्मों का बंधन हरपल-हरक्षण-हर समय होता ही है। इन सात की कालावधि अंतः कोटाकोटि सागर है।

इस कर्म-बंध प्रवाह के कारण जीव थोड़े समय सुख का आभास पाता है और लम्बे समय तक दुःखों को भोगता है। समय की अपेक्षा से ही नहीं, सामग्री की अपेक्षा से भी उसे सुख सामग्री तो अत्यल्प मिलती है, उससे कई गुणा सामग्री ऐसी मिलती है जो उसके लिए दुःखों, कष्टों एवं पीड़ा का कारण बनती है।

द्रव्य की अपेक्षया प्रज्ञापना सूत्र के तीसरे पद में संसार के समस्त जीवों को 256 राशियों में विभक्त किया गया है। इनमें से 16 राशि के जीव साता वेदनीय का अनुभव करते हैं, शेष 240 राशि के जीव असाता वेदनीय को भोगते हैं। वे मात्र दुःख और पीड़ा ही प्राप्त करते हैं जीवन में। गिनती के हिसाब से या आनुपातिक हिसाब से 240 में 16 का भाग

दीजिए, एक भाग के पीछे पन्द्रह असाता मिलती है। कितना अलाभ, कितनी हानि, कितना नुकसान।

काल की अपेक्षया विपाक सूत्र के दो भाग- सुख विपाक व दुःख विपाक। पहले दुःख विपाक बाद में सुख विपाक। इसमें सुखों की अपेक्षा दुःख शत, सहस्र, लक्ष, कोटि गुणित अधिक बताये गये हैं। उत्तराध्ययन सूत्र के चौदहवें 'इषुकारीय' नामक अध्ययन में राजपुरोहित भृगु के दो पुत्र जो जातिस्मरण ज्ञान के कारण अपने पूर्व जन्म को देख संसार-विमुख बन, विरक्तात्मा हो दीक्षा की कामना कर बैठते हैं। वे अपने माता-पिता के मोह और संसार के प्रति आकर्षित बनाने हेतु उनके प्रयत्न को देख कहते हैं-

खणमित्तसुक्खा बहुकाल दुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ काम-भोगा।।

-उत्तराध्ययन 14.13

'खणमित्तसुक्खा' अर्थात् काल की अपेक्षा से सांसारिक-सुख कामभोगादि क्षणमात्र के लिए सुखदायी होते हैं, वे सुख की अनुभूति देते हैं, परन्तु फिर लम्बे समय तक वेदना देते हैं, पीड़ा की अनुभूति कराते हैं, दुःख से जीवन को कष्टमय बना देते हैं।

'पगामदुक्खा अणिगाम सुक्खा' पद में बताया है कि अनुभाग की अपेक्षा से सुख का वेदन किञ्चित्मात्र होता है। अंतर में उसकी अनुभूति दुःख की अपेक्षया बहुत ही कम होती है, जबकि दुःख का वेदन बहुत ही भयंकर रूप से होता है।

कर्मप्रकृति में वर्णन आता है आठ कर्मों की प्रकृतियों की स्थिति का। उसमें सातावेदनीय की उत्कृष्ट स्थिति 15 कोटाकोटि सागरोपम की है, जबकि असाता वेदनीय की स्थिति 30 कोटाकोटि सागरोपम की है। अर्थात् साता से असाता की स्थिति दो गुनी है।

उत्तराध्ययनसूत्र में उल्लेख मिलता है कि ब्रह्मदत्त ने 700 वर्ष की आयुपर्यन्त चक्रवर्ती पद का सुखभोग किया, इस सुख में आसक्ति का परिणाम था नरकगति। ज्ञानी बताते हैं कि उसे आयुष्य की एक-एक श्वास के सुख के पीछे लाखों पल्योपम की स्थिति तक नारकीय-जीवन का दुःख भोगना पड़ा।

अपने दोषों को देखने, उनकी आलोचना करने, मन में पश्चात्ताप करने से जीवन में सरलता आती है। यही सरलता आत्म-विकास की पहली सीढ़ी है। कहा भी है- **''सोही उज्जुय भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ।''** सरल हृदय में ही धर्म का निवास होता है। जहाँ धर्म का निवास, वहीं वास्तविक सुख की प्राप्ति होती है। जीवन में सरलता कब और कैसे आएगी? जब-जब दुःख आएगा और उसकी अनुभूति से दुःख के विपाक पर चिंतन-मनन की स्थिति बनेगी, तब वही स्थिति अंतर में सरलता के उद्भव का कारण होगी। दुःख

का प्रभाव जागृति प्रदाता होता है।

एक परिवार है। उसमें माता, पिता, पुत्र, पुत्री, सास, बहू आदि अनेक सदस्य हैं। माता-पिता अपनी संतानों के लिए कितना दुःख उठाते हैं। उनके जन्म के समय, पालन-पोषण के समय, शिक्षा के समय, शादी के समय, धंधा सिखाते समय! दुःख ही दुःख सहन करते हैं, केवल अपने बच्चों की कुशलता और योग्यता के लिए। कोई बीमार हुआ तो उसके स्वास्थ्य की चिंता सताती है, अस्पताल ले जाते हैं, डॉक्टर के घर भी जाते हैं, कभी डॉक्टर को घर पर बुलाते हैं। दवायें लाकर समय पर देते हैं। दिन में सेवा और रात भर जाग कर भी सेवा। क्यों? संतान के स्वास्थ्य के लिए अनेक प्रकार से अनेक दुःख उठाते हैं। आप गृहस्थ हैं, आपसे कुछ छुपा नहीं? बहुत कुछ जानते हैं, अनुभवी हैं, इस विषय में आप। यही बच्चे बड़े होते हैं, जवान होते हैं, व्यापार-धंधे में उनकी चलने लगती है, परिवार में भी वे निर्णय लेने लग जाते हैं, परिवार की सत्ता खुद-ब-खुद उनके हाथ चली जाती है। माता-पिता वृद्ध हो जाते हैं, अशक्त बन जाते हैं, शरीर दुर्बल हो जाता है और इन्द्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं। तब वे बच्चे मां-बाप को कैसा संभालते हैं? कितना ध्यान देते हैं- उनके खान-पान, उनके स्वास्थ्य और उनकी सुविधाओं पर? चारों तरफ से जो हालात हमारे सुनने में आते हैं, उनसे तो साफ है कि वृद्धावस्था में उनके हालात दयनीय, बदतर एवं अत्यंत चिंताजनक हो जाते हैं।

उस कष्टपूर्ण उस दर्दनाक एवं बेचैन बनाने वाली दशा आने पर माता-पिता के मन में क्या विचार आते हैं? क्या सोचते हैं? यही वे बच्चे हैं जिनके लिए हमने जीवन भर कष्ट उठाया, जिन्हें स्वस्थ-समृद्ध बनाने के लिए स्वयं दुःख सहे, जिन्हें सुखी देखने के लिए पीर, फकीर, बाबा, संन्यासी, भोपा, पुजारी, जाने किन-किन के पास गए? क्या लिखा है उनकी रेखाओं में, यह जानने पंडितों, ज्योतिषियों के घर के फेरे दिए।

आज वे ही बच्चे माता-पिता के भरण-पोषण, खिलाने-पिलाने, दवा-चिकित्सा कराने से मुख मोड़ लेते हैं। माता-पिता तीन, चार, पांच और इनसे भी अधिक संतानों को पालते रहे, पर वे सभी मिलकर भी अपने माता-पिता की देखभाल नहीं कर पाते। सुख देना तो दूर, सुनते हैं कुछ बेटे जान-बूझकर उन्हें कष्ट देते हैं। कभी लगता है कि वृद्धावस्था के कारण उनका घर में रहना भी उन्हें नहीं सुहाता। उन बूढ़ों को वृद्धाश्रम छोड़ आते हैं। घर में रहें तो झिड़कते हैं, कोसते हैं, बुरा-भला कहते हैं। अभी दो-चार दिन पहले ही किसी भाई ने न्यूज-पेपर की खबर बताई थी कि एक पुत्र ने अपने माता-पिता की हत्या कर, स्वयं आत्महत्या कर ली। सास-बहुओं के किस्से तो नित्य सुनने को मिलते हैं। कितनी बहुओं को जला दिया जाता है, कितनी सासुएँ अपने प्राणों का हवन कर देती हैं और कितनी ही

बहुएँ स्वयं आत्महत्या करने के लिए विवश बना दी जाती हैं।

फिर कहाँ है सुख? सुख एक मात्र संयमी जीवन में है, अणगार-धर्म में है। आचारांग सूत्र में आया है- **''से जहाति अणगारे उज्जुकडे णियागपडिवण्णे, अमाय कुव्वमाणे।''** 'अणगार कौन होता है? किसे कहते हैं संयमी?' समाधान किया है- 'जो सरल आचरण वाला हो, मोक्ष-मार्ग के प्रति एकनिष्ठ होकर चलता हो और कपट रहित हो'- वही अणगार कहला सकता है।

अणगार कहलाने के लिए तीन गुण या विशेषण होने आवश्यक हैं- **1. उज्जु कडे-** अर्थात् ऋजुकृत। सरल प्रकृति का होना। इस गुण में अणगार धर्म के वीर्याचार की सम्पूर्ण शुद्धि परिलक्षित हो रही है। **2. णियागपडिवण्णे-** नियाग-प्रतिपन्न। मोक्षमार्ग में एक निष्ठ बनना। यह गुण अणगार के ज्ञानाचार व दर्शनाचार की पूर्ण विशुद्धि का संकेत करता है। **3. अमायं कुव्वमाणे-** कपट रहित बनना। इस गुण द्वारा अणगार के तपाचार की विशुद्धि को लक्षित किया गया है।

बंधुओं! सुख पाना है तो सरल बनें, धर्म में चित्त रखें और माया या कपट का त्याग करें।

जीव सरल कब और कैसे बनता है? जब वह अपने दोषों को देखता है, उनकी आलोचना करता है, निंदा-गर्हा करता है। जीव ऐसा तब करता है जब वह अपने दुःख-विपाक का अनुभव कर उन पर चिन्तन-मनन में लगता है। चिन्तन में यह आता है कि इसमें दोष किसी का नहीं, स्वयं मेरा है। मैंने ही पूर्व में कुछ ऐसा किया है, जिसका परिणाम मुझे इस तरह मिल रहा है। इस जन्म में नहीं तो अपने किसी पूर्व भव में किए कर्म का विपाक है- यह दुःख, यह पीड़ा यह वेदना। बाह्य जगत में जहाँ-जहाँ, जितनी-जितनी वेदना दिखाई दे रही है, घोर कष्ट और असह्य पीड़ा सहते जन, पशु, पक्षी दिखाई दे रहे हैं, वे जो भोग रहे हैं, उस नरक-सम वेदना को मैंने कितनी ही बार भोगा है। कहीं पशु कट रहे हैं, कोई पीटा जा रहा है, किसी को चाकू-छुरा मारा जा रहा है तो चिंतन यही कि ये सब नरक मेरे साथ भी घटित हो चुके हैं।

परिवार में माता और पुत्र दो जने हैं। गुरु महाराज पधारे हैं शहर में। 95 वर्ष की माता के अन्तर में गुरुवाणी सुनने की प्यास और पुत्र को भी गुरुमुख से जिनवाणी श्रवण की चाह। होता यह है कि माता को प्रवचन स्थल पर छोड़कर 65 वर्ष का पुत्र घर जाकर घर का कार्य करता और भोजन बनाता है। एक दिन पुत्र ने मन की पीड़ा प्रकट की- ''गुरुवर! बहुत चाहता हूँ कि व्याख्यान श्रवण करूँ, पर जाने किस जन्म के कर्मों का फल मिल रहा है, नहीं सुन पाता। यह कैसी अन्तराय?'' पर फिर भी स्वाध्याय का रस है। इस भाई ने कर्म-

प्रकृतियों की चर्चा के समय पूछा- ''गुरुदेव! व्यक्ति झूठ बोलता है, चोरी करता है, अन्य बुरे कर्म करता है, इनके पीछे कारण क्या? पिछले जन्म में उसने ऐसे-कैसे कर्म किए कि उसे ये अशुभ कर्म करने पड़ रहे हैं?''

बंधुओं! इस तरह के प्रश्नों का उठना, जिज्ञासाओं का जगना भी लक्ष्य के निर्धारण तक ले जा सकता है। अपने ही द्वारा अपने लक्ष्य के निर्धारण का यह कदम वास्तविक और सर्वप्रथम प्रयास है जिससे वह सुपथ पर अग्रसर होता है। निज के प्रकाश में लक्ष्य का निर्धारण कर निर्णय लेना ही साधना की ओर बढ़ना है, साधक बनने का प्रथम प्रयास है। वह साधक ही क्या जिसे जीवन का लक्ष्य पता न हो। अपने जीवन के लक्ष्य से परिचित होना ही जीव का मूल उद्देश्य है। इस मूल लक्ष्य की प्राप्ति जीव को एक दिन होनी ही है। कैसे प्राप्त होता है यह लक्ष्य?

जीव अनादि से संसार-भ्रमण कर रहा है। जो अनादि का मिथ्यादृष्टि (प्रथम गुणस्थानवर्ती) जीव है, उसके अन्तर में भी आशा की एक किरण सदैव विद्यमान रहती है। वह किरण है-''जीव कितना ही दर्शनावरणीय कर्म से आवृत्त हो, पर उसका दर्शन कभी विपरीत नहीं होता।'' पच्चीस बोल के स्तोक में नौवां बोल है- उपयोग बारह। बारह उपयोग में पांच हैं ज्ञान के- मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय व केवलज्ञान। तीन हैं अज्ञान अर्थात् विपरीतज्ञान के- मति अज्ञान (विपरीत मति), श्रुत अज्ञान (विपरीत श्रुत), विभंग ज्ञान (विपरीत अवधि)। ध्यान रखना है कि ज्ञान विपरीत बनता है, पर दर्शन नहीं। आगे के चार उपयोग दर्शन के हैं- चक्षु, अचक्षु, अवधि और केवल दर्शन। पहले गुणस्थानवर्ती जीव अर्थात् मिथ्यादृष्टि में ज्ञानात्मा नहीं होती, ज्ञान नहीं होता। मिथ्यात्व के प्रभाव से मिथ्याज्ञान अर्थात् विपरीत ज्ञान होता है- कुमति, कुश्रुत। दर्शनावरणीय के क्षयोपशम का विपरीत प्रभाव नहीं होता है। प्रथम से बारहवें गुणस्थान तक चक्षु दर्शन, अचक्षुदर्शन की विद्यमानता रहती है। ज्ञान सविकल्प होता है, जबकि दर्शन निर्विकल्प होता है। ज्ञान में वस्तु के विशेष धर्म की जानकारी होती है, यही उसकी सविकल्पता है और दर्शन में वस्तु के सामान्य धर्म को जाना जाता है, वहाँ निर्विकल्पता है। पन्नवणा सूत्र में साकार और अनाकार का अनुपात 3:1 बताया है। साकार 192 राशियों के पीछे 64 अनाकार राशियाँ होती हैं।

जीव में दर्शनावरणीय कर्म कितना ही क्यों न हो, पर जीव का दर्शन विपरीत नहीं होता। ज्ञान साकार है, उसमें दोष आता है, आ सकता है, पर दर्शन जो अनाकार है, उस पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं होता। बस, समझ लीजिए जीव-विकास का यही प्रथम सोपान है। इसे समझ लिया जीव ने और इस निर्दोषता पर श्रद्धा बनी, विश्वास हुआ तो सुगमता से

जीव सम्यग्दर्शन की अनुभूति कर सकेगा। बाह्य पुद्गल चाहे जितना प्रभाव डाल दे, तीन लोक की सारी कर्मवर्गणा कर्म बन जाएं, अनंत जीवों के कर्म एक जीव के लग जाएं,(यद्यपि ऐसा न कभी हुआ और न कभी होगा, यह तो मात्र एक कल्पना है(न भूतो, न भविष्यति) तब भी जीव के चैतन्य गुण को दबाने में सक्षम नहीं है।

वस्तुतः जीव की, चैतन्य की शक्ति असीम, अपार है, पर जीव को यह विश्वास नहीं होता। वह अपने अविश्वास के कारण बाह्य पुद्गलों में आकर्षित बन, उनमें ऐसा आसक्त बनता है स्वयमेव पुद्गलों को शक्तिमान बना, खुद उनका गुलाम बन जाता है। हीरे, पन्ने, माणक, मोती, स्वर्ण, रजत, रुपये, पैसे आदि क्या हैं? इनकी शक्ति क्या है? यदि मानव इन्हें महत्ता नहीं दे तो सब व्यर्थ हैं, धूल के समान हैं, कोई कीमत नहीं इनकी। पर मनुष्य ने महत्त्व देकर इनको मूल्यवान बना दिया है।

विजातीय आकर्षण, वैभाविक परिणति से, मिथ्यात्व और अज्ञान से

दुःख और सुख भी जीव ने स्वयं पैदा किए हैं। दुःखों का कारणभूत जीव स्वयं है। दुःख में यदि दुःख नहीं माने, समभावी रहे, निमित्त को दोष न दे, उसे कर्म काटने में सहयोगी माने तो दुःख फिर दुःख रहता ही नहीं। वह दुःख तो सुख का और कई बार तो परम सुख का कारण बन जाता है। गजसुकुमाल के सिर पर माटी की पाल बांधी गई, उसमें खेर की लकड़ी के धधकते अंगारे रखे गए। असह्य पीड़ा, असाधारण वेदना, पर गज तालु के समान कोमल काया वाले उस राजकुमार का चिंतन क्या? मेरे ही पूर्व कर्मों का फल है यह। जिसने भी किया वह तो निमित्त ही है। वास्तविक कारण तो मैं स्वयं हूँ। मुझे तो उसका अहसान मानना चाहिए जो मेरे कर्म भोगने, कर्म भोगते हुए उन्हें तोड़ने में सहयोग कर रहा है। सहनशीलता और समभाव की इसी चिंतन श्रेणी में आरूढ़ बन ऊपर चढ़ते हुए गजसुकुमाल मुनि परम सुख को प्राप्त कर जन्म-मरण से मुक्त बन गये।

उनके सिर पर अंगारे रखे थे सोमिल ब्राह्मण ने। सुबह प्रसन्न था सोमिल कि मेरी कन्या को त्रिखंडाधिपति वासुदेव श्री कृष्ण ने अपने छोटे भाई गजसुकुमाल की पत्नी के रूप में चुना है। पर संध्या समय उन्हीं गजसुकुमाल को मुनिवेश में श्मशान भूमि पर ध्यानस्थ देख क्रोधित हो जाता है। क्रोधित भी ऐसा कि गीली चिकनी मिट्टी की पाल मुनि के सिर पर पगड़ी की तरह बांधकर, उनमें धधकते अंगारे रख देता है। साधारण सोमिल के अंतर में इस महाविनाशकारी सोमिल को पैदा करने वाला कौन? वह स्वयं। परिणाम क्या? मृत्यु के पश्चात् नरकगामी बना वह। जीव मात्र अपने सुख-दुःख का कारण वह स्वयं है। उसका चिन्तन, उसकी भावनाएँ ही उसे शुभाशुभ परिणाम दिलाने में कारणभूत हैं।

क्या हो चिन्तन? मुझे जिन दुःखों की प्राप्ति हो रही है, उनमें कारणभूत कौन? जीव

स्वयं ही कर्म का कर्ता और कर्मों का भोक्ता है- **"अप्पा कत्ता विकत्ता य।"**

आज किसी व्यक्ति के मकान पर किसी अन्य ने अधिकार कर लिया। क्या होगा? क्रोध उत्पन्न होगा, द्वेष और ईर्ष्या जगेगी। लड़ाई-झगड़ा होगा। कोर्ट-कचहरी जाना पड़ेगा। समय एवं धन का नाश, शरीर का नाश होगा। परिवार में अशांति, क्लेश होंगे। इन सबके बाद भी मिलेगा क्या? कहा नहीं जा सकता।

व्यक्ति यदि यह सोचले कि मैंने भी कभी किसी भव में इसी तरह मकान पर नाजायज कब्जा किया होगा, जिसका परिणाम मैं इस जन्म में भोग रहा हूँ।

एक वृद्ध एवं वृद्धा के तीन बेटे। तीनों धन कमाने हेतु देश-परदेश में धंधा या नौकरी कर रहे हैं। घर में वे अकेले। अपने भाग्य को कोसने की जगह चिन्तन यह करें कि जब हमारी सत्ता थी, युवावस्था थी, परिवार में सबकुछ हमारे किए से होता था, तब हमने क्या किया? आज यदि हमारे साथ ऐसा हो रहा है तो इसमें दोषी कौन? अकेलापन भोगने के पीछे मूलकर्त्ता तो हम ही हैं। जैसा हमने किया, वैसा फल पा रहे हैं फिर भाग्य पर या अन्य किसी पर दोषारोपण क्यों?

आपमें से कई सिनेमा घर जाकर पिक्चर देखते हैं। आज नहीं देखते होंगे, घर-घर में टेलीविजन आ गया है, पर टी.वी. आने से पूर्व तो सिनेमाघर गए होंगे। क्या होता है वहाँ? पर्दे पर जो कुछ आप देखते हैं, कैसे दिखाई देता है? कहाँ से आते हैं पर्दे पर वे चित्र? जानते हैं न, पर्दे पर आने वाले चित्र आपके पीछे से रील द्वारा प्रेषित होते हैं। प्रकाश, जिस मशीन पर रील चलती है वह मशीन और जिस पर्दे पर चलते-फिरते, हँसते-रोते चित्र उभरते हैं वह पर्दा। ये सभी तो सहायक मात्र हैं। मूल वस्तु तो रील है।

यही बात प्रत्येक घटित सांसारिक घटना के संबंध में कही जा सकती है। निमित्त तो बहुत हो सकते हैं- पारिवारिक सदस्य, पड़ौसी, व्यवसाय-व्यापार का भागीदार, नौकर-चाकर आदि या फिर जगत में से कोई पदार्थ, सुनामी जैसी कोई घटना, कोई कुछ भी बन सकता है निमित्त। पर मूल कारण जीव के भीतर, स्व में निहित, अन्तरात्मा से संबंधित ही है। किन्तु जीव यह सब जानकर भी अनजान बना रहता है। कारण है जीव की कषायात्मा।

पच्चीस बोल में पन्द्रहवां बोल बताता है- आत्मा आठ हैं। 1. द्रव्यात्मा, 2. कषायात्मा, 3. योगात्मा, 4. उपयोगात्मा, 5. ज्ञानात्मा, 6. दर्शनात्मा, 7. चारित्रात्मा और 8. वीर्यात्मा। क्रोध, मान, माया, लोभ रूप कषाय चतुष्क की घनी कालिमा से आत्मा इतनी कलुषित बन जाती है कि वह दागी कषायात्मा ज्ञानात्मा को प्रकट नहीं होने देती। अनंतानुबंधी चतुष्क यदि है तो आत्मा अपने आपको भी नहीं पहचान पाती, न ही पहचानने का प्रयास कर पाती है।

यह प्रयास तब प्रारम्भ होता है, जब जीव के भीतर में निर्दोष बनने की व्याकुलता जगती है; जब वह अपने भीतर झांकता और अपने दोषों को शोधकर चिन्तन में उतरता है कि इन सारे दोषों का कारण स्वयं मैं हूँ। ऐसा चिन्तन तथा दोषमुक्ति की व्याकुलता जीव में सरलता का उद्भव करती है। सरलता ज्ञान को प्रकट करने का माध्यम है, अन्तर का ज्ञान सरलता से प्रकट होता है। वही ज्ञान जीव को दोषों का क्षय करने की क्षमता प्रदान करता है। दुःख के विपाक को जाना, समझा तब अन्तर में जागृति आई। ग्यारहवें अंगसूत्र 'विपाकसूत्र' के 'दुःख विपाक' नामक प्रथम श्रुतस्कंध में यही सब बताया, आपने सुना। दुःख में आज तक दूसरों को दोष देकर अपने दोषों में तथा दुःखों में वृद्धि की। अपने दोषों को देखने की, बात ध्यान में नहीं आई। अंतगड सूत्र का वाचन- विश्लेषण सुनेंगे आप पावन पर्युषण महापर्व के आठ दिनों में। इस सूत्र के तीसरे वर्ग के आठवें अध्ययन में गजसुकुमाल मुनि का वर्णन है। दीक्षा के दिन ही मुक्ति प्राप्त करने वाले अपने लघु भ्राता गजसुकुमाल मुनि के विषय में मुक्ति की बात, निर्वाण की बात, निष्प्राण बन जाने की बात सुन श्री कृष्ण क्षुभित हो जाते हैं तब अरिहंत अरिष्ट नेमि श्री कृष्ण से कहते हैं-'हे कृष्ण! गजसुकुमाल मुनि को प्राणरहित बनाने वाले पर तुम क्षोभ मत करो।'

श्री कृष्ण कहते हैं- ''भगवन्! जिस अधम पुरुष ने, मेरे लघुभ्राता के सिर पर अंगारे रख दिए और मैं गुस्सा न करूँ?''

अरिहंत अरिष्टनेमि बोले- कृष्ण! उस पुरुष ने तो तुम्हारे लघु भ्राता के प्रयोजन को, उनकी साधना को सिद्ध करने में सहायता की है।

प्रभु ने बताया कि जैसे तुमने अभी आते समय एक वृद्ध पुरुष पर करुणा करके ईंटों के ढ़ेर से एक ईंट उठाकर वृद्ध के बन रहे भवन में रख उसकी सहायता की और तुम्हारे इस कार्य को देख तुम्हारे साथ के सैनिकों ने एक-एक कर ईंटों के उस ढ़ेर की सारी ईंटें बन रहे भवन में पहुँचाकर कार्य पूर्ण कर दिया। उसी प्रकार उस पुरुष ने गजसुकुमाल मुनि के मुक्त बनने के प्रयोजन को पूरा किया है।

बंधुओं! तब भी श्री कृष्ण का क्षोभ शांत नहीं हुआ। वे प्रभु की बात को नहीं समझ पाये। सुनी, पर अंतर में उतर नहीं पाई प्रभु की बात।

यही होता है जीव के साथ। दुर्बुद्धि से दोष उत्पन्न होते हैं और दोषों से दुःखों की प्राप्ति होती है। दुर्बुद्धि क्या है? अज्ञान ही दुर्बुद्धि है जो कर्म रूपी दोषों को एकत्रित कर जीव को असातावेदनीय में पहुँचाता है।

एक सेठ साहब ने एक नौकर रखा। उसका काम था रात में घर की चौकीदारी करना, पहरा देना, निगरानी रखना। नौकर ने अपना कर्त्तव्य समझ कर पूरी सावधानी रखी। रात-

रात भर जागकर पहरेदारी की। सेठ-सेठानी, घर के अन्य सदस्य उसके भरोसे निश्चिन्त बन रात्रि को आराम की निद्रा लेते। एक दिन पड़ौस में चोरी हो गई। पड़ौसी दौड़ता हुआ उसके पास आया और पूछा- ''अरे भाई! मेरे घर रात में चोरी हो गई। सारा माल चोर चुरा ले गया। तुमने तो उसे देखा होगा।'' नौकर बोला- 'नहीं! मैंने तो नहीं देखा।' पड़ौसी चिल्लाया-'अरे! नहीं देखा तुमने, तो फिर कैसी चौकीदारी करते हो? चोरी हो गई और ध्यान नहीं रखते।' नौकर ने तब कहा- ''मैं जिससे वेतन पाता हूँ, जिसके घर का खाता हूँ, उसकी चौकीदारी करता हूँ। मेरे माता-पिता ने मुझे तो यही शिक्षा दी है कि-बेटा! जिसकी खाना बाजरी, उसकी बजाना हाजरी। मैं सेठ के घर की पूरी निगरानी रखता हूँ। बाकी सारे घरों में क्या हो रहा है, इससे मुझे क्या लेना-देना?''

बंधुओं! यह जीव क्या कर रहा है, क्या करता आया है आज तक? बिना वेतन के, मुफ्त की चौकीदारी। किसकी चौकीदारी? अपने घर, अपने मालिक की नहीं, बस बाकी सारी दुनिया की खोज-खबर लेता रहता है यह। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से लेकर आस-पास में जो भी हैं, सभी के दोषों पर इस जीव की नज़र रहती है, पर अपने पर नज़र नहीं जाती, अपने दोष, अवगुण, बुराइयाँ जीव नहीं देख पाता।

दोष पराया देखि करि, चल्या हँसत-हँसत।
अपने च्यंति न आवई, जिनकी आदि न अंत।।

कितना बड़ा अपराध करता आ रहा है यह जीव! महाभयंकर कर्मों को इस तरह प्रतिपल आमंत्रण दे रहा है, तब सरलता कैसे आ सकती है। दूसरों के दोष देखने पर तो वक्रता ही आती है।

अपने दोष देखकर, व्याकुल बन, जागृत हो जाता है तो दोष और दुःखों का अंत करने का प्रयास प्रारम्भ होता है। पुरुषार्थ आत्मविकास में जगता है। जब दुःखों का अंत होने को होता है तो पुरुषार्थ की तीव्रता बढ़ जाती है। जितना पुरुषार्थ करने में समर्थ हैं, उससे कम करते हैं तो वह माया, छल, कपट है। पूरा पुरुषार्थ करते हैं तो 'अमाय', सरलता। जहाँ सरलता वहाँ धर्म, वहीं मुक्ति के मार्ग पर कदम। अतः चिन्तन करें- परिणामी नित्यवाद-परिणति को शुद्ध नित्य में लगाकर दर्शन-विशुद्धि से विशुद्ध दर्शन, केवल दर्शन प्रकटा सकता है यह जीव- 'मैं कुछ नहीं, मेरा कुछ नहीं, मेरे लिए कुछ भी तो नहीं।'

प्रतिपल का ऐसा चिन्तन ही जीव को आत्मजागृत बना उसे आत्मविकास के पथ पर अग्रसर कर सकता है।

अध्यात्म

विचार और अनुप्रेक्षा : एक चिन्तन

पूज्य श्री उमेशमुनि जी म. 'अणु' *

जगत् के जीवों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- एक विचारशील वर्ग और दूसरा अविचारशील वर्ग।

जिनमें विचार करने की शक्ति नहीं होती है, ऐसे जीवों का बहुत बड़ा वर्ग है और जिनमें विचार-शक्ति है, वह वर्ग बहुत छोटा है। लेकिन अविचारशील जीवों के कई कार्य ऐसे प्रतीत होते हैं कि वे विचार-प्रेरित हों। जैसे-लता का मार्ग से दूर रहना, ऊर्ध्वारोहण करना, चींटियों का पंक्तिबद्ध चलना-हिलमिलकर कण-संचय करना, मधुमक्खियों द्वारा छत्ते का कलापूर्ण निर्माण करना, मधु-संचय करना आदि। किन्तु वे क्रियाएँ मात्र लोक आदि संज्ञा से प्रेरित होती हैं-मस्तिष्क के विचार से प्रेरित नहीं।

विचारशील जीवों के भी अनेक भेद-प्रभेद होते हैं। हमें अभी उन भेद-प्रभेदों की चर्चा नहीं करना है। फिर भी हमें यह जान लेना है कि विचार का विकास पशु-जगत् से ही प्रारंभ हो जाता है। नैरयिक और देव विचारशील प्राणियों की कोटि में ही हैं। परन्तु वे हमारे लिए इन्द्रिय-प्रत्यक्ष नहीं हैं और पशु-जगत् के समस्त जीव भी हमें चक्षुगम्य नहीं होते हैं। उनका अमुक स्थूल वर्ग ही दृग्गोचर हो सकता है। पशुओं में भी शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के विचार का विकास हो सकता है। उनमें कषाय से प्रेरित निम्न कोटि के विचारों का और मृदुता, प्रेम, अनुकम्पा आदि से प्रेरित उच्चकोटि के विचारों का अस्तित्व अनुभव-गम्य होता है और आज के युग में विविध प्रयोगों से ये बातें सिद्ध भी हो रही हैं। फिर भी विचारशील प्राणियों में जो स्थान मनुष्य का है, वह किसी भी जीव का नहीं है।

गर्भ से उत्पन्न मनुष्य विचारशील प्राणी ही है। जितनी वैचारिक जटिलता मनुष्य में है वैसी अन्यत्र नहीं। लेकिन प्रत्येक काल और प्रत्येक क्षेत्र के मनुष्य का न तो वैचारिक धरातल ही समान होता है और न वैचारिक विकास ही। फिर भी मनुष्य जैसा विचारशील प्राणी अन्य कोई नहीं है। बस, मनुष्य तो मनुष्य ही है- अपने आपमें अनुपम-असदृश। अपना, अपनी जाति का, अपने से विसदृश जीव-जातियों का और जड़ पदार्थों के चिन्तन से युक्त ज्ञान-विभाजन एवं विश्लेषण कौन प्रस्तुत करता है?- वही तो।

विचार-वैभव

जरा गंभीरता से चिन्तन करें तो लगेगा कि मनुष्यों का विचार ही वैभव है। हाथ में

* 18 मार्च, 2012 को उज्जैन में महाप्रयाण।

हथौड़ी लेकर पत्थर को तराशने वाले और खान से निकले हुए हीरे को खराद पर चढ़ाकर उसमें आँखों को चौंधियाने वाली चमक को प्रकट करने वाले हाथों के लोच में कौन रम रहा है? सागर के अतल गर्त तक पैंठने वाले और हिमालय के अत्युच्च शुभ्र शिखर पर पहुँचने वाले चरणों को कौन गति प्रदान कर रहा है? युद्ध के बजते हुए बिगुल पर जोश के साथ एक के पीछे एक चलते हुए सैनिकों के पद-चाप में और तबले की थाप पर थिरकते हुए कमल-से कोमल पदों के न्यास में किसकी ध्वनि गूँज रही है? सारी व्यवस्थाओं और विशृंखलताओं में, निर्माण और ध्वंस में, पुण्यों और पापों में या धर्म और अधर्म में कौन विलस रहा है? विचार ही तो। अरे! विचारों का विश्लेषण भी कौन करता है?- विचार ही तो। यदि मनुष्य में विचार का अभाव होता तो जो आज जितना विकास दिखाई दे रहा है, वह दृष्टिगोचर होता क्या?

दर्शन, तर्क, विज्ञान आदि विचार के ही शास्त्र हैं। क्या गणित शास्त्र ठोस विचार की भित्तियों पर प्रतिष्ठित नहीं है? वस्तुतः मनुष्य के समस्त विकास के अद्भुत विलास और समस्त विनाश की महालीला विचार की कृषि का ही परिपाक है।

विचार और साधना

जब मनुष्य अपने विचार पर ही विचार करना प्रारम्भ करता है तब उसे पता लगता है कि मैं कितने भी कार्य करता हूँ, उन सबके मूल में कोई न कोई विचार रहता ही है। फिर वह अपने और साथी मनुष्यों के विचारों को टटोलता है कि उन विचारों का मोड़ किस ओर है। वे विचार समाज में क्या फल निष्पन्न करते हैं और व्यक्ति के व्यक्तित्व को किस प्रकार गढ़ते हैं? इस सोच में विचार-शास्त्र के उत्पादन के बीजों का वपन होता है।

यों विचार मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं- शुभ और अशुभ। तीव्र आवेशात्मक भाव- क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान, राग, काम आदि अशुभ विचार हैं और इनके प्रतिपक्षी भाव- क्षमा, प्रमोद, अनुराग, विनय, वैराग्य, भक्ति आदि शुभ हैं। इन्हें क्रमशः ऋणात्मक और धनात्मक भाव भी कहा जाता है। इन दोनों प्रकार के भावों से तथारूप विचारों की परम्परा चलती है, जिससे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। फिर उन विचारों से प्रेरित क्रियाएँ होती हैं जो क्रमशः ध्वंसात्मक और निर्माणात्मक होती हैं। उन क्रियाओं का प्रारूप विचारों में ही तो बनता है। अतः विचार भी ध्वंस और निर्माण की ओर मोड़ लेते हैं। ये ध्वंसात्मक और निर्माणात्मक विचार ही समाज में बुरे-भले फल निष्पन्न करते हैं। बुरे फल निष्पन्न करने वाले विचारों का निषेध होने लगता है और अच्छे फल निष्पन्न करने वाले विचारों का विधान। इस प्रकार निषेध और विधि का जन्म होता है। पहले निषेध का ही आविर्भाव होता है और बाद में विधि का।

जब कर्मयुग का प्रारम्भ नहीं हुआ था, परन्तु उसकी भूमिका का निर्माण हो रहा था, तब कुलकरों ने तद्युगीन सामान्य अपराधों का, जिनमें ध्वंस के बीज थे, प्रतिकार किया अर्थात् उन्होंने दूसरी 'मा' दण्डनीति से स्पष्ट रूप से निषेधात्मक नीति को प्रकट किया। यद्यपि प्रथम 'हा' दंडनीति में भी ध्वनि तो निषेध की ही थी, फिर भी वह स्पष्ट नहीं थी। किन्तु 'हा' से भी कार्य तो निषेध का ही होता था और तीसरी 'धि' दण्डनीति में निषेध का स्वर अति उग्र हो गया है। इन तीनों नीतियों में वर्जना ही कार्य कर रही है। यदि वर्जना न हो तो स्वच्छन्दता पनपती है और समूह के लिये घातक परिणाम उत्पन्न होते हैं। उन विध्वंसात्मक कार्यों के निषेध से मनुष्यों के मन में यह बात जमने लगी कि ऐसे विचार अकरणीय हैं, जिनसे विध्वंस होता है। तब निर्माण आवश्यक होते हुए भी तथारूप साधनों के अभाव से निर्माण प्रारम्भ नहीं हो पाया। अतः निर्माणात्मक विचारों का स्पष्ट रूप से न तो आविर्भाव ही हुआ और न विद्यमान बीजात्मक विचारों का विकास ही हुआ। वे मात्र आंशिक रूप से संतति के परिपालन रूप में ही अत्यन्त सीमित रहे।

युगादिदेव प्रभु ऋषभदेव ने परिवर्तित होती हुई प्रकृति को निहारकर यह अनुभव किया कि मात्र निषेध से ध्वंसात्मक प्रवृत्ति का अभाव नहीं हो सकता। उन ध्वंसात्मक कार्यों को व्यवस्थित रूप देने से निर्माणात्मक विचारों की सृष्टि हो सकती है। अतः उन्होंने विध्वंसात्मक विचारों को निर्माण से जोड़ दिया। प्रकृति के उपादानों से कई शिल्प-कलाओं को जन्म दिया, जिससे विध्वंसात्मक विचार निर्माणात्मकता में परिणत होते गये तथा सौ शिल्पों और बहत्तर कलाओं का आविर्भाव हुआ। उन्हीं के सहजात निषेध और विधिरूप से क्रमशः शासन-तंत्र, सामाजिक नीति, नीति-शास्त्र, कुलधर्म आदि समयोपयोगी नीतियाँ प्रकट होकर विविध मोड़ लेती हुईं अनेकानेक रूपों में ढलती गयीं। इस प्रकार विधि-निषेध रूप विचार संसार के कार्यों में साधक-बाधक रूप में बनकर उनसे जुड़े रहे- जुड़े रहते हैं। पश्चात् भगवान ऋषभदेव ने गृह-त्याग करके धर्म-नीति का प्रादुर्भाव किया। अभी तक उन्होंने समाज के निर्माण, विकास, परिमार्जन और अलंकरण के विचार दिये थे, अब व्यक्ति के विकास, परिष्कार और संस्कार के विचार धर्मनीति के रूप में दिये।

धर्मनीति भी अशुभ विचारों से निष्पन्न प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह-वृत्ति के निषेध पर ही खड़ी की गयी। अशुभ विचारों का अभाव भी इष्ट है। इसलिये तथारूप विविध अनुष्ठानों का विधान किया गया जो निषेध की दृढ़ भित्ति पर विधि के रूप में नियोजित किये गये हैं। उन अनुष्ठानों में भी शुभ विचारों को प्रधानरूप से स्थान मिला है।

साधना का प्राण : विचार

विचार से आचार का निर्माण होता है। अशुभ विचारों से असदाचरण और शुभ विचारों से सदाचरण निष्पन्न होता है। अतः साधना से जन्म, संवर्धन और संरक्षण के लिए शुभ विचार परमावश्यक हैं।

शुभ विचार की परम्परा शुभ चिन्तन को जन्म देती है। शुभ विचार एक क्षण के लिये आकर तिरोहित हो जाते हैं। वे फिर कब आयें, इसका कुछ पता नहीं चलता। साधक को इसके लिये प्रतीक्षा में यों समय बिताना उचित नहीं है। अतः उसे शुभ विचार करने का अभ्यास करना चाहिये। उन शुभ विचारों को करना ही साधना-मार्ग में अभीष्ट है। ऐसे विचारों को श्रीमान् राजचन्द्र जी ने अन्वेषक के रूप में तत्त्वार्थ की उपलब्धि में साधन मानकर कहा है-

शुद्ध-बुद्ध चैतन्यधन, स्वयंज्योति सुख-धाम।
बीजुं कहिये केटलुँ, कर विचार तो पाम।।

-आत्मसिद्धि

(हे साधक!) तू स्वयं ज्योति-स्वरूप सुख (आदि गुणों) का नित्य वासस्थान, शुद्ध-बुद्ध चैतन्य-पिंड है और अधिक क्या कहें अर्थात् दूसरों की वाणी तो सीमित है, वह तेरा स्वरूप तुझे कैसे पूर्ण रूप से बता सकती है। तू स्वयं विचार तो अपने स्वरूप की थाह पा सकेगा अर्थात् आत्मोपलब्धि कर सकेगा।

दूसरे से सुनकर तत्त्व की जो किंचित् उपलब्धि होती है, वह विचार से- चिन्तन से अनुभव-गम्य होती है।

एक भारतीय महर्षि (सम्भवतः योगवाशिष्ठकार) की दृष्टि में विचार महान् आध्यात्मिक औषध है-

संसार-दीर्घ-रोगस्य, सुविचार-महौषधम्।
कोऽहं कस्य च संसारो, विवेकेन विलीयते।।

संसार रूपी दीर्घकालिक रोग का उत्तम विचार महा औषध है। मैं कौन हूँ और किसका हूँ इस विवेक से संसार विलीन हो जाता है। अर्थात् सुविचार मोक्ष का उपाय है।

जैन दृष्टि सुविचार को आराधना का सार-तत्त्व मानती है। सुविचार के अभाव में आराधना मृतप्रायः हो जायेगी। इसी भाव को मुखर करते हुए श्री माधवाचार्यजी महाराज फरमाते हैं-

'मुनिमाधव' कहे- 'विचार सार'
चौवीस जिनंद भज बार-बार।-स्तवन तरंगिणी

आराधना का सार-तत्त्व अथवा उपास्य से उपासक को संयोजित करने वाला तत्त्व विचार है। (अतः विचार को सार रूप में परिणत करने के लिये) चौबीस जिनेश्वरदेवों का पुनरपि पुनः स्मरण करो।

जिनेश्वरदेव की आज्ञा का अनुसरण करने वाला उत्तम विचार आराधना में बल पूरता है-प्राण फूँकता है।

विचार और अनुप्रेक्षा

व्यवस्थित रूप से किये जाने वाला विचार ही अनुप्रेक्षा में परिणत होता है। सभी विचार अनुप्रेक्षा नहीं हो सकते।

विचार के स्थूल रूप से चार विभाग किये जा सकते हैं, यथा- व्यावहारिक विचार, कलात्मक विचार, अन्वेषणात्मक विचार और साधनागत विचार।

जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिये जो चिन्तन किया जाता है, वह व्यावहारिक विचार है। इसमें जीवन के साधनों के उत्पादन, संग्रह, संरक्षण, वितरण, विकास, भोग आदि के विचार गर्भित होते हैं। किसी भी पदार्थ , भाव, चेष्टा आदि को आकर्षक, मनोरंजक, चित्त-चमत्कारक और व्यवस्थित रूप देने के विचार **कलात्मक विचार** हैं, जो कि समस्त कलाओं के मूल हैं। पदार्थ, भाव, विकार, रोग आदि के विश्लेषण, शोध आदि करने वाले विचार **विश्लेषणात्मक विचार** हैं, जो कि समस्त शास्त्रों, दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा आदि की नींव हैं। आत्मा में स्वशक्ति को प्रकट करने के लिये या किसी शक्ति के अवतरण के लिये जो विचार किये जाते हैं, वे **साधनागत विचार** हैं। इनमें मांत्रिक, तांत्रिक, तैर्थिक आदि सभी प्रकार की साधनाएँ संगृहीत हो जाती हैं। परन्तु हमें तो अन्य विचारों को छोड़कर मात्र जिनत्व को प्रकट करने के लिये किये जाने वाले साधनागत विचारों से प्रयोजन है, जो कि आराधना को भावरूप में परिणत करके लक्ष्य-सिद्धि में हेतु बनते हैं।

साधना के उपादान तीन हैं- ज्ञान, श्रद्धा और आचरण। इन्हीं की शुद्धि की प्रक्रिया आराधना है, जिसमें बाह्य साधन आलम्बन रूप में स्वीकृत होते हैं। ज्ञान-आराधना का आलम्बन श्रुतज्ञान, श्रद्धा (दर्शन) आराधना के आलम्बन देव, गुरु और सुधर्म और आचरण शुद्धि (चारित्र-आराधना) के आलम्बन जिन-प्रज्ञप्त संयम और तप हैं। इनसे सम्बन्धित विचार जिनत्व के साधनागत विचार हैं। यों तो अनुप्रेक्षा सम्यक् साधनागत विचारों से जुड़ी हुई है, परन्तु उसका सम्बन्ध प्रमुख रूप से श्रुतज्ञान से है।

साधना में अनुप्रेक्षा का स्थान

आगमों के परिशीलन से अनुप्रेक्षा के स्पष्ट रूप से दो प्रकार परिलक्षित होते हैं, यथा- सूत्रानुसारिणी अनुप्रेक्षा और भावानुलक्षी अनुप्रेक्षा। स्वाध्याय के चतुर्थ भेद से सूत्रानुसारिणी अनुप्रेक्षा का और धर्म-ध्यान तथा शुक्लध्यान की अनुप्रेक्षाओं से भावानुलक्षी अनुप्रेक्षा का विधान हुआ है। सूत्रानुसारिणी अनुप्रेक्षा धर्मध्यान का आलम्बन है तो भावानुलक्षी अनुप्रेक्षा प्रशस्त ध्यान की पोषिका भी है और आलम्बन भी।

अर्थानुसारिणी अनुप्रेक्षा सूत्र और अर्थ दोनों से संबंधित होती है। मूल आगम-सुत्तागम की मौन रूप से आवृत्ति, पूर्णरूप से सूत्रानुप्रेक्षा है। क्रम के अनुसार सूत्रों की आवृत्ति तीन प्रकार से होती है, यथा-अनुक्रम, पश्चात्क्रम और अक्रम, जिन्हें आगम की भाषा में क्रमशः पूर्वानुपूर्वी, पश्चादानुपूर्वी और अनानुपूर्वी कहा जाता है। आगम में किस क्रम से सूत्रों या गाथाओं की संयोजना है, उसी क्रम से आवृत्ति करना **अनुक्रम अनुप्रेक्षा** है। उल्टे क्रम से स्मरण करना **पश्चात्-क्रम-अनुप्रेक्षा** है और बिना क्रम के यथेच्छ स्मरण करना **अक्रम अनुप्रेक्षा** है।

क्रम कितने प्रकार का होगा- यह जानने के लिए सूत्र, गाथा या पद के नियत अंकों को परस्पर गुणा करना होता है। जैसे-नमोक्कार मंत्र में पाँच पद हैं। उनके नियत अंक क्रमशः-एक, दो, तीन, चार और पाँच हैं। इनका कितने प्रकार से स्थापन हो सकता है? यह जानने के लिए क्रमशः इन अंकों को परस्पर गुणा करना चाहिए। यथा- 1×2×3×4×5=120। इस प्रकार परमेष्ठियों का क्रम 120 प्रकार का होगा। पहली पंक्ति अनुक्रम से, अंतिम पंक्ति पश्चात्क्रम से और बीच की शेष 118 पंक्यिाँ अक्रम से रहेंगी। परन्तु उन्हें गणित के अनुसार ही स्थापित किया जाता है। यह बात आनुपूर्वी की पोथी से समझी जा सकती है।

अर्थानुसारिणी अनुप्रेक्षा के अनेक रूप हो सकते हैं। जितने अनुयोग= सूत्र के व्याख्यान के प्रकार होते हैं, उतनी ही प्रकार की यह अनुप्रेक्षा हो सकती है। अनुयोगद्वार के चार प्रकार कहे गये हैं, यथा-उपक्रम, निक्षेप, अनुगम और नय। इनके अनेक भेद-प्रभेद हैं, जिनके अनुसरण से अर्थानुप्रेक्षा में अत्यन्त जटिलता और दुरूहता आ जाती है।

वस्तुतः अर्थानुप्रेक्षा के दो विभाग किये जा सकते हैं, यथा- अर्थ-अन्वेषण रूपा और अर्थ-आवृत्ति रूपा। जिसमें सूत्र के अर्थ की खोज की जाती है वह अर्थ-अन्वेषण रूपा अनुप्रेक्षा है। उसके दो रूप हैं-शब्दार्थ-अन्वेषण और भावार्थ-अन्वेषण। निक्षेप और निरुक्त पद्धति से शब्दार्थ का अन्वेषण और नय-पद्धति से भावार्थ-अन्वेषण होता है। इन अन्वेषण-पद्धतियों के विवेचन रूप ही अणुओगद्दारसुत्त है और नय-पद्धति में मात्र

निश्चयनय से तत्त्वार्थ के (परिभाषा के) अन्वेषण रूप समयसार शास्त्र है।

धर्मध्यान की चार अनुप्रेक्षाएँ हैं-एकानुप्रेक्षा, अनित्यानुप्रेक्षा, अशरणानुप्रेक्षा और संसारानुप्रेक्षा। इन और अन्य अन्यत्वादि आठ भावनाओं और मैत्री आदि चार भावनाओं का अनुसरण करने वाली विचार-सरणि भावानुलक्षी अनुप्रेक्षा है। वह जैन कवियों और लेखकों का एक अति आकर्षक विषय रहा है। इस विषय में संस्कृत, प्राकृत और लोकभाषाओं में विपुल साहित्य का निर्माण हुआ है।

अनुप्रेक्षा का फल

सूत्रानुसारिणी अनुप्रेक्षा के प्रमुख पाँच कार्य हैं, यथा-जिज्ञासा की तृप्ति, अर्थ का संरक्षण, तत्त्वार्थ की हृदय में प्रतिष्ठा, साधना को आलम्बन-प्रदान और अन्तर के संशोधन-पूर्वक भावों का निर्माण, जो कि ध्यानरूप में परिणत होकर समस्त कर्मों का विनाश कर सकते हैं। भावानुलक्षी अनुप्रेक्षा आसक्ति, द्वेष, नैष्ठुर्य, ममत्व आदि दोषों पर सीधा प्रहार करती है और तीव्र वैराग्य तथा अभ्यास को जन्म देने के साथ धनात्मक दृढ़ अध्यवसाय का भी निर्माण करती है। वस्तुतः जैन साधना अनुप्रेक्षामयी है। स्वाध्याय के भेदरूप अनुप्रेक्षा का फल इस प्रकार बताया है।

अनुप्रेक्षा आयुष्य कर्म को छोड़कर शेष सातों कर्मों के गाढ़े बन्धन को ढ़ीले करती है। उनकी दीर्घकालिकी स्थिति अल्पकालिकी बना देती है। कर्मों के तीव्ररस को मंद कर देती है और बहुत प्रदेशवाले कर्मदलों को अल्प प्रदेशवाली बना देती है। आयुष्य कर्म कभी बँधता है तो कभी नहीं बँधता है। असाता-वेदनीय कर्म का पुनः-पुनः बन्ध नहीं होता और....संसाररूपी जंगल से जीव पार हो जाता है। **-उत्तरज्झयण सुत्त 29/22**

भावानुलक्षी अनुप्रेक्षा से जीव तत्काल श्रेणी पर आरोहण कर लेता है, ऐसा चरणानुयोग में प्रतिपादन है। अनित्य भावना भाते हुए सम्राट् भरतदेव को आरीसा भवन में केवलज्ञान हो गया। यद्यपि सूत्रानुलक्षी अनुप्रेक्षा के फल में भी यह फल गर्भित हो जाता है, फिर भी चरित-ग्रन्थों में भावानुलक्षी अनुप्रेक्षा का फल बड़े चमत्कारिक ढंग से वर्णित है।

-'नमोक्कार-अणुप्पेहा' पुस्तक की भूमिका से गृहीत

सूचना

जिनवाणी के कुछ पाठकों की जिनवाणी पत्रिका कार्यालय को लौटकर आ रही है। जिन्हें जिनवाणी का कोई अंक न मिले वे जयपुर स्थित जिनवाणी कार्यालय को सूचित करें तथा अपने सम्बद्ध पोस्ट ऑफिस में पता करें कि उनकी जिनवाणी घर तक क्यों नहीं पहुँच रही है?

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर(राज.), फोन नं. 0141-2575997

दीक्षा-अर्द्धशती

उपाध्यायप्रवर मानचन्द्रजी : सरलता, साधना एवं संयम की त्रिवेणी (2)*

श्री सम्पतराज चौधरी, सी.ए.

सरलता

उपाध्यायप्रवर सरलता की एक बेमिसाल प्रतिमूर्ति हैं। सरलता इतनी कि जो भी उनके पास आता है वह अभिभूत होकर सहज ही उनके प्रति श्रद्धावनत हो जाता है। आगमकारों ने संयम की सफलता में ऋजुता अर्थात् सरलता को प्रथम स्थान दिया है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है- ''सोही उज्जुअभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई'' अर्थात् ऋजु आत्मा की विशुद्धि होती है और विशुद्ध आत्मा में ही धर्म ठहरता है। सरलता वहीं पल्लवित होती है जहाँ निरभिमानता है, अहं का अभाव है और विनय का वास है। जीवन में सहजता और सरलता इतनी कि जहाँ भी आप विराजते हैं, वहाँ हर व्यक्ति की पहुँच सहज होती है। हर वर्ग और हर उम्र का व्यक्ति आपके निश्छल और सरल स्वभाव से प्रभावित हो जाता है। शैशव से युवावर्ग के व्यक्ति, जो स्वभावगत चंचल प्रकृति के होते हैं और जिनमें धर्म के प्रति कोई खास जागरूकता नहीं होती, वे भी शांत और निश्चल होकर आपके पास घंटों बैठे रहकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। आपके सरल व्यवहार का गुर है- अपना किसी को बनाना नहीं और पराया किसी को समझना नहीं।

आपकी सरलता का आभास इसी से मिल जाता है कि कोई बालक भी आपसे मांगलिक का अनुरोध करता है तो उसे तुरन्त मंगल पाठ फरमा देते हैं। कोई भी दर्शनार्थी या भक्तजन, सामायिक, पोरसी, उपवास आदि के पच्चक्खाण के लिये निवेदन करता है तो तुरन्त उसे पच्चक्खाण करा देते हैं। इसके लिये उनके चेहरे पर कभी भी झुंझलाहट का भाव नज़र नहीं आता। जब किसी ने लोगों द्वारा बार-बार मांगलिक फरमाने के लिये उपाध्याय भगवन्त की असुविधा का जिक्र किया तो आपने कहा कि अन्य परम्पराओं में श्रावकों को आकर्षित करने के लिये मंदिर है, मूर्ति है, गीत और संगीत है, परन्तु स्थानकवासी परम्परा में तो मांगलिक ही सर्व सुलभ साधन है जिससे लोगों को धर्म से जोड़ सकें। इसलिए इसमें क्या कजूंसी?

* वैशाख शुक्ला 13, दिनाँक 4 मई, 2012 को दीक्षा-अर्द्धशती प्रारम्भ होने के उपलक्ष्य में।

विनयशीलता

आपका नाम भले ही मान मुनि हो, पर आपमें 'मान' किंचित् मात्र भी नहीं है। आपके नाम की सार्थकता तो केवल इसी बात में घटित होती है कि आप आगम वाणी को बिना संशय के मान लेते हैं। उपाध्यायप्रवर ने प्रारम्भ से ही इस बात को आत्मसात् कर लिया कि अहंकार आत्मा और परमात्मा के बीच की दीवार है जो सत्य के साक्षात्कार से जीवन को वंचित रखती है। उन्होंने विनय को जीवन में उतार लिया और वही उनका स्वभाव बन गया। वे प्यासे चातक की तरह ज्ञान की अमृत बूँदे पीने गुरुजनों के समक्ष बैठले। गुरु के प्रति विनय उनके जीवन का मूलाधार रहा। उत्तराध्ययन सूत्र में विनीत शिष्य के तीन गुण बताये हैं- 1. गुरु आज्ञा और निर्देश के अनुसार प्रवृत्ति करना 2. गुरुजनों के सान्निध्य में रहकर उनकी सेवा-सुश्रूषा करना और 3. गुरु की चेष्टा और आकृति को देखकर गुरु के मनोभावों को समझ लेना। ये तीनों ही लक्षण उपाध्यायश्री में विद्यमान हैं। यही कारण है कि प्रसन्न हुए गुरुजनों ने उन्हें अर्थगम्भीर मोक्ष के प्रयोजनभूत आगमादि का ज्ञान-लाभ समीचीन रूप से दिया। श्रुत लाभ से वे संशयहीन एवं समाधि से संवृत हो गये हैं। अपनी विनयशीलता से गुरु हस्ती से वे एक ही चीज मांगते थे कि "गुरुदेव! मुझे उपाधि नहीं, अपितु समाधि दो।"

आचार्यप्रवर श्री नानालाल जी म.सा. आपके विनय गुणों से इतने प्रभावित थे कि वे आपको मान मुनि की जगह 'विनय मुनि' के नाम से ही सम्बोधित करते थे। वे कहते थे कि इनका भले ही मान मुनि हो, पर ये मान से कोसो दूर हैं। स्वयं गुरु हस्ती इनकी विनयशीलता से इतने प्रभावित थे कि उनके मन में इनके प्रति अगाध सम्मान की भावना घर कर गई। एक ज्योतिर्धर गुरु से ऐसा सम्मान पाने वाले शिष्य तो विरले ही होते हैं। श्रमण श्रेष्ठ पूज्य श्री समर्थमल जी महाराज सा का भी मानमुनि के प्रति अगाध वात्सल्य था। पाली में जब इन दोनों संतों का साथ में विराजना हुआ तो पालीवासी श्रमण श्रेष्ठ की मान मुनि पर बरसी कृपा से अभिभूत हो गये।

एक बार उपाध्यायश्री के जन्मदिन पर उनका अभिनन्दन करते हुए सुधी श्रावकरत्न श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें अभिमान तो छू भी नहीं पाया है, पर संघ को उन पर अवश्य मान (गर्व) है। आज उपाध्याय प्रवर की साधकोचित ख्याति सर्वत्र है, परन्तु उनमें अंश मात्र भी अभिमान नहीं है। मान का परिहार करना मार्दव धर्म है। धर्म सबसे पहले नमन का पाठ सिखाता है। उपाध्याय श्री फल से लदे हुए वृक्ष की तरह नम्र होकर झुके रहते हैं। संवत् 2068 में ब्यावर दीक्षा प्रसंग पर वे ब्यावर पधारे। वहाँ आगमन पर अपने उद्बोधन में उपाध्याय श्री ने कहा कि - "मैं आचार्य श्री के

निवेदन एवं आप लोगों की प्रेम भरी विनती से इस दीक्षा प्रसंग पर आया हूँ।'' फिर वहाँ उपस्थित साधु-साध्वियों की ओर इंगित करके कहा कि ''यहाँ आने के लिए यह भी सोच रही कि इतनी चरित्र-आत्माओं के एक साथ दर्शन भी हो जायेंगे।'' आपकी इस सहज विनयशीलता पर उपस्थित लोगों की आँखें भीग गई। उपाध्यायप्रवर का जीवन इस बात की सतत प्रेरणा देता है कि-

भाव विशुद्ध हुए बिना कैसा त्याग विराग।
मान करो मत त्याग का, करो मान का त्याग।।

शान्त-दान्त

कहा जाता है कि संत वही है जो शांत है। बाहर से ही शान्त नहीं, अन्दर से भी शांत होना चाहिए। गीता में कहा है कि जो निष्काम, निस्पृह और निरहंकार होता है, उसे ही शांति प्राप्त होती है। भगवान् महावीर ने कहा है कि आत्मस्वभाव ही धर्म है और उसी में शांति है। संयम और तप से उपाध्याय श्री ने अपने आन्तरिक विकारों का दमन कर दिया, इसलिए उन्हें 'दान्त' कहते हैं। ऐसी 'दान्त' आत्मा को ही जीवन में दुर्लभ शांति मिलती है। इन्हीं दिव्य गुणों के कारण जन-जन आपको शान्त-दान्त प्रबल पुरुषार्थी कहते हैं। शांति, उपाध्यायप्रवर के अंग-अंग से प्रस्फुटित होती है जो उनके सान्निध्य में आने वाले प्रत्येक जन को अपूर्व शीतलता प्रदान करती है। उनकी स्मित मुस्कान, प्रफुल्लित तेजस्वी चेहरा बरबस ही लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। गुरु हस्ती से जो अक्षय संकल्प लिये थे उनमें एक था- क्रोध नहीं करना। जो क्रोध नहीं करता है उसमें क्षमा का वास होता है। जिसमें क्षमा होती है उसमें शांति होती है। गुरुदेव मानचन्द्र जी के चेहरे पर कभी क्रोध नहीं देखा गया। उनकी ऐसी शांत प्रकृति को देखकर बड़ा आश्चर्य होता है और मन के उद्गार निकल पड़ते हैं कि-

ऐसी कला सिखाओ भंते! दुःख को शांति गीत बनालूँ।
नहीं रहे दुर्भाव हृदय में, सबको अपना मीत बनालूँ।।

जहाँ कहीं व्यर्थ की बात होती है, परिस्थितियाँ साधना के अनुकूल नहीं होती हैं, वहाँ वे कच्छप की भांति अन्तर्मुखी हो जाते हैं। वे उन बातों में कभी रस नहीं लेते। बातचीत में वे केवल व्रत-पालन और आत्म-कल्याण की ही प्रेरणा देते हैं। इसलिए जैन ही नहीं, जैनेतर लोग भी कहते हैं कि ऐसे पूर्ण निस्पृही संत का मिलना दुर्लभ है। शरीर से यथोचित कर्म करते हुए भी, संसार से असंग आत्मस्थिति में रमण करने वाले वे एक अद्भुत उदाहरण हैं।

सेवामूर्ति

आगम ग्रन्थों में जगह-जगह वैयावृत्य अर्थात् सेवा धर्म की महिमा व्यक्त की गई है। जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है, उपाध्यायप्रवर में यह गुण कूट-कूट कर भरा है, अतः इनको सेवामूर्ति कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। जो सेवा करता है, वह प्रशंसा का पात्र होता है।

वत्सलता

उपाध्यायप्रवर का हृदय और व्यवहार दोनों ही वात्सल्य गुणों से परिपूर्ण हैं। आपका स्वभाव अत्यन्त मृदु और कोमल है। असंगी रहते हुए भी उनके मन में करुणा और वात्सल्य के भाव सबके लिए हैं। वात्सल्य का गुण धर्म-संघ को सुदृढ़ बनाने और सुचारु रूप से चलाने में एक प्रभावशाली कीमिया सूत्र है। आपके चेहरे पर हर समय मुस्कान रहती है। आप कभी किसी से ऊँचे स्वर में नहीं बोलते हैं। प्रत्येक दर्शनार्थी के लिए आशीर्वाद की मुद्रा में 'दया पालो' की प्रेरणा के साथ आपका हाठ उठ जाता है। आपका मौन व्यवहार ही कुछ ऐसा है कि किसी भी दर्शनार्थी को आपसे कोई शिकायत नहीं होती। हर दर्शनार्थी आपके दर्शन कर परम प्रसन्नता का अनुभव करता है- यह आपका अतिशय है जो उत्तम पुरुषों का लक्षण है। कोई भक्त आये, न आये, उसे वे कभी उपालम्भ नहीं देतें। कोई अपना परिचय देता है तो वे उसके पूर्वजों के नाम तक बता देते हैं। अतीत की इस स्मृति से आने वाले धर्म-साधना में प्रोत्साहित हो जाते हैं। दिल्ली चातुर्मास में जब किसी ने पूछा कि अपनी परम्परा के यहाँ कितने घर हैं, तो मुनिवर ने तुरन्त उत्तर दिया कि सब अपने ही हैं। सुनने वाला आश्चर्य में पड़ गया। मैंने स्वयं अनुभव किया है कि उनके अमित वात्सल्य के कारण उनके समक्ष जाते ही मेरे संकल्प-विकल्प, तर्क-वितर्क, आकुल-व्याकुल होकर लौट जाते हैं।

आगम प्रेमी

पूज्य उपाध्याय श्री स्वयं तो आगम ग्रन्थों का स्वाध्याय नियमित रूप से करते ही हैं, परन्तु गुरु हस्ती की परम्परा को निरन्तरता प्रदान करते हुए, अपने सान्निध्य में रहने वाले मुनिजनों और साध्वियों को भी नित्य नियमित समय पर वाचना देकर उनकी जिज्ञासाओं का समाधान कर सारणा, वारणा और धारणा की शिक्षा से उन्हें संस्कारित करते रहते हैं। वर्तमान में आगमज्ञान प्रदान करने की यह परिपाटी लुप्त होती जा रही है, जो अच्छा संकेत नहीं है। आगम-वाचना के समय उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया जाता है। उपाध्यायप्रवर का स्पष्ट मन्तव्य है कि आगम की केवल मूल

गाथाओं का ही वाचन न हो, अपितु उसके साथ उनका अर्थबोध देना भी आवश्यक है ताकि आगम वाचना मात्र एक रूढि बनकर न रह जाए। अर्थबोध के अभाव में व्यक्ति आगम के आशय के साथ नहीं जुड़ पाता। आगम का भी यही निर्देश है- ''अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा।'' अर्थात् आगम वचनों को अर्थ सहित सीखें। मोक्ष पुरुषार्थियों में वीतराग भाव की अभिवृद्धि के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है।

उपाध्यायप्रवर की यह भी धारणा है कि प्रायश्चित्त के लिए केवल तपस्या अथवा आगम की मूल गाथाओं का ही स्वाध्याय न हो, अपितु आगम-वचनों को पढ़कर भी प्रायश्चित्त पूर्ण करने का विधान हो, जिससे प्रायश्चित्त के साथ आत्मज्ञान में भी वृद्धि हो। आपके प्रवचन सरल होते हुए भी आगमिक सूत्रों के रहस्यों को खोलने वाले होते हैं।

प्रवचन कुशलता

जिनशासन की प्रभावना और जिनवाणी के प्रसार के लिए साधना के साथ मुनि में प्रवचन कुशलता भी आवश्यक है। मुनिवर मान ने भी प्रवचन कुशलता का महत्त्व समझा और आगम ज्ञान के साथ-साथ प्रवचन की अपनी एक मौलिक शैली का विकास कर लिया। आपने यह ध्यान रखा कि प्रवचन आगमानुकूल हों और उसमें मनोविचार के लिए किस्से-कहानियाँ न हों। आगमिक सूत्रों की व्याख्या करते हुए वे इस बात का ध्यान रखते हैं कि प्रवचन सरल भाषा में हों और सामान्यजन के लिए बोधगम्य भी हों। आपकी आवाज शुरु से ही बुलन्द है, अतः बड़ी धर्मसभा में भी आखिरी पंक्ति में बैठा श्रोता उसे सुन सकता है। आपके प्रवचन गम्भीर सरित्-धारा की तरह होते हैं जो सुनने वालों पर अमिट प्रभाव डालते हैं। धीमी गति से बुलन्द आवाज में प्रभावशाली प्रवचन देना आपकी विशिष्टता है।

प्रवचन करते हुए आपश्री का ध्येय रहता है कि श्रोतागण आगमिक सिद्धान्तों के भी जानकार बनें। आपके प्रवचनों में कभी भी निरर्थक निन्दा, विकथा या उपालम्भ नहीं होता है। प्रवचन में शब्दों के अर्थ वे इस तरह उद्घाटित करते हैं कि सुनने वाला आश्चर्यचकित ही नहीं होता है, अपितु उनके प्रवचन का गहरा प्रभाव भी उसके मानस में अंकित हो जाता है। दिल्ली चातुर्मास के दौरान बीस वर्ष का एक युवक प्रायः उनके प्रवचन सुनने आया करता था। युवा वर्ग के लिए भी उनके प्रवचन कितने मार्मिक होते थे, यह बताने के लिए उसकी डायरी के कुछ अंशों को मैं नीचे उद्धृत कर रहा हूँ-

''पंडितरत्न श्री मानमुनि जी म.सा. के प्रवचनों को श्रवण करने का मुझे अपूर्व सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैंने पाया कि आपश्री किस सरलता और सूक्ष्मता से शास्त्र व व्याकरण की उलझनों का निवारण करते हैं। आपके वचन इतने मार्मिक होते हैं कि वे अन्तःस्थल को छू जाते हैं एवं अपनी एक अमिट छाप अंकित कर जाते हैं। शब्दार्थ की

सूक्ष्म व मौलिक व्याख्या आप इस तरह करते हैं कि श्रोतागण विस्मित एवं मंत्रमुग्ध हुए बिना नहीं रहते, उदाहरण के लिए-

एक संत की व्याख्यान सभा में श्रावकगण भारी संख्या में उपस्थित थे। संत अनात्मार्थी थे, सोचने लगे- अहो! मेरा कितना प्रभाव है। मेरे प्रभाव के वशीभूत हो मेरे प्रवचन श्रवण करने हेतु कितनी भीड़ उमड़ती है।

संत समझता है कि यह उसका प्रभाव है, परन्तु मैं यह समझता हूँ कि यह उसका परभाव है, क्योंकि उसकी आत्मा अपने स्वभाव में न होकर, अभिमान के मद में चूर है, अर्थात् परभाव में है। आत्मार्थी हमेशा यही समझते हैं कि अगर इतने श्रावकगण श्रवण करने आते हैं तो यह जिनवाणी का प्रभाव है, मेरा योगदान तो केवल निमित्त भर का है।

आपके प्रवचन गद्यमय होते हुए भी पद्यमय प्रतीत होते हैं। फिर अगर कोई उनको ही पद्य का रूप दे देने का प्रयत्न करे तो इसमें कैसा अचरज। मैंने भी उन्हें भजन व छोटी-छोटी कविताओं का रूप देने का प्रत्न किया है। (भजन उद्धृत नहीं किये जा रहे हैं, केवल प्रवचन पर आधारित कुछ छोटे-छोटे छंद दिये जा रहे हैं)

वेश नहीं और केश भी, नहीं मुनि की पहचान।
करे क्लेष को शेष जो, है वो संत महान्।।
आत्मा और परमात्मा में, कर्म का ही भेद है।
काट दे यदि कर्म तो, भेद है ना खेद है।।
त्यागी बहु मिल जाएंगे, मुश्किल वैरागी होना।
करना सामायिक सहज है, मुश्किल सामायिक होना।।
लोग भ्रम में पड़े हैं, कि धर्म परलोक की कमाई है।
पुण्य फल चाहे मिले फिर, धर्म तत्काल फलदायी है।।
ले लिया विज्ञान ने, आज ज्ञान का स्थान है,
छोड़ दर्शन किया प्रदर्शन, मानी उसी में शान है।
छूट गया आचार अब, केवल प्रचार का भान है,
भूल गए हम रत्नत्रयी, जो जैन धर्म की शान है।।
डरता है भगवान् कि भक्त न जाएँ टूट,
धर्म के सम्बन्ध में देता खुल्ली छूट।
देता खुल्ली छूट, कि डरते भक्त भी यहाँ,
रूठ कहीं जाएँ न भगवान्, भरते हाँ में हाँ।

मैं तो डरता एक बात से, जो है सत्य अटूट,
टूट-रूठ के झंझट में, धर्म न जाए छूट।।''

(डॉ. सुनील चौधरी की दिल्ली चातुर्मास की डायरी से)

आपश्री के प्रवचनों से युवा वर्ग के द्वारा सूत्र ग्रहण करने की यह एक छोटी सी बानगी है। **(क्रमशः)**

-कार्याध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,
14, वरदान अपार्टमेण्ट्स, 64, इन्द्रप्रस्थ-एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

क्षणिका

भ्रूण परीक्षण नहीं कराऊँगी

■ *श्री गणेशमुनि जी शास्त्री*

शादी के बाद
बहू से बोली सास,
बहू! मुझे तुम पर है पूरा विश्वास
तुम मुझे पोते का मुँह दिखाओगी
बेटी को जन्म दिया तो
तुम ही पछताओगी
बहू बोली- माँ जी,
आप भी किसी की बेटी हैं
इस बात पर ध्यान दीजिए
यह ममता की कसौटी है
इसकी परीक्षा मत लीजिए
बेटी तो लक्ष्मी का रूप होती है
मैं तो उसे भी प्यार से
सीने से लगाऊँगी।
मगर भूलकर भी
भ्रूण परीक्षण नहीं कराऊँगी।

-अम्बा शोध संस्थान, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.)

चिन्तन

भारतीय संस्कृति के उन्नयन में आध्यात्मिक जीवनदृष्टि की भूमिका

प्रो. सागरमल जैन

संस्कृति जीवनशैली है और दर्शन जीवनदृष्टि है। जीवनशैली के मूल में जीवनदृष्टि होती है, दोनों अवियोज्य हैं। भारतीय संस्कृति भारतीय-दर्शन पर आधारित है, अतः भारतीय संस्कृति का उन्नयन भारतीय दर्शन या भारतीय जीवनदृष्टि पर ही निर्भर है।

अतः प्रथम प्रश्न है- भारतीय जीवनदृष्टि क्या है? यद्यपि भारत में अनेक दर्शन पुष्पित एवं पल्लवित हुए हैं, फिर भी उन सबकी जीवनदृष्टि समान ही है। भारतीय दर्शन अनेक हैं, किन्तु जीवनदृष्टि एक ही है। यहाँ तक कि चार्वाक जैसे नास्तिक दर्शन की जीवनदृष्टि भी भौतिकवादी या भोगवादी न होकर मूलतः आध्यात्मिक ही है, चार्वाक भी एक ऋषि है। ऋषिभाषित नामक जैन ग्रन्थ में उन्हें दान्त और विरत कहा गया है, वे भी संसार परिभ्रमण से मुक्ति के आकांक्षी हैं। वे चाहे 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' की बात कहते हैं, फिर भी वे 'ऋणं कृत्वा मद्यं पिबेत्' की बात नहीं करते हैं। जैन और बौद्ध भी चाहे अनीश्वरवादी हों, फिर भी वे भौतिकवादी या भोगवादी नहीं हैं। प्राचीन भारतीय दर्शनों में चाहे वे श्रमण-परम्परा के दर्शन हों या वैदिकधारा के दर्शन हों सभी मूलतः भोगवादी नहीं हैं, त्यागवादी हैं। भारतीय संस्कृति के मूल उपनिषद् हैं, उपनिषदों में भी सबसे छोटा और सबसे महत्त्वपूर्ण मात्र 18 मन्त्रों में सीमित ईशावास्योपनिषद् के सम्बन्ध में महात्मा गाँधी ने कहा था कि यदि समग्र भारतीय साहित्य नष्ट हो जाये, किन्तु ईशावास्योपनिषद् का प्रथम श्लोक भी बचा रहा, तो मैं पुनः भारतीय संस्कृति को जीवित कर दूँगा। ऐसा क्या है, इस उपनिषद् में? इस उपनिषद् के प्रथम श्लोक का एक वाक्यांश है- 'तेन त्येक्तन भुंजीथाः अर्थात् त्यागपूर्वक भोग करो, संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसे व्यक्ति अपना कह सके। सभी दैवीय, ईश्वरीय या प्रकृति प्रदत्त है। मनुष्य को उनके उपयोग का एक सीमित अधिकार तो है, किन्तु स्वामित्व या मालिकाना हक या अधिकार नहीं है। भारतीय संस्कृति एकान्ततः भोग का निषेध नहीं करती है, किन्तु उसमें त्याग की प्रधानता रही है। वह त्यागपूर्वक भोग की बात करती है। अतः भारत का सांस्कृतिक उत्थान त्याग के आध्यात्मिक मूल्यों के विकास में निहित है।

आध्यात्मिक त्यागपरक मूल्यों के विकास के लिए जीवनदृष्टि में परिवर्तन आवश्यक है। हम सभी विकास या उत्थान की बात करते हैं। इसका अर्थ है, हम वर्तमान में सन्तुष्ट नहीं हैं, दशा बदलना चाहते हैं, किन्तु जब तक दिशा या दृष्टि नहीं बदलेंगे दशा बदलने वाली नहीं है। भोगवादी या भौतिकवादी जीवनदृष्टि भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के उत्थान या विकास में सहायक नहीं हो सकती। आध्यात्मिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा में ही भारत का सांस्कृतिक उत्थान सम्भव है।

जब तक व्यक्ति की भोग-वृत्ति, लोभवृत्ति, ममत्ववृत्ति, अहंवृत्ति पर नियत्रंण या संयम का अंकुश नहीं लगेगा, सांस्कृतिक उत्थान कैसे सम्भव होगा? भौतिक सुख-सुविधाएँ, उपभोक्तावादी संस्कृति, अर्थ-प्रधानता आदि हमारे सांस्कृतिक आध्यात्मिक जीवन-मूल्यों के विकास में सहायक नहीं हो सकते हैं।

आज धर्म और अध्यात्म प्रदर्शनात्मक बन गये हैं, प्रदर्शन की भूख में दर्शन गौण हो गया है। सांस्कृतिक विकास तभी होगा जब हम 'प्रदर्शन' के स्थान पर 'दर्शन' को प्रधानता देंगे। प्रदर्शन बाह्य है, जबकि दर्शन आन्तरिक या आत्मिक है। प्रदर्शन बाह्य भौतिक प्रगति का सूचक हो सकता है, किन्तु वह आन्तरिक विपन्नता का ही सूचक है। भौतिक जीवनदृष्टि हमें दैहिक सुख-सुविधा देकर आर्थिक सम्पन्नता तो दे सकती है, किन्तु उसमें पारस्परिक सौहार्द, सहयोग, समर्पण और सेवा के जीवनमूल्य निराकृत हो जाते हैं, अतः भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा ही मर जाती है और फिर उसका उत्थान कैसे सम्भव होगा?

संस्कृति समाज सापेक्ष है, संस्कृति समाज पर आधारित है और समाज की संरचना त्याग और समर्पण के जीवन मूल्यों पर आधारित है। समाज परिवारों का समूह है और परिवार उसके सदस्यों की त्याग-भावना पर खड़ा होता है। यदि पत्नी की पति के प्रति और पति की पत्नी और अपनी संतान के प्रति त्याग तथा उनके हित साधन की वृत्ति न हो तो, परिवार बनेगा ही नहीं और परिवार के बिना समाज तथा समाज के बिना संस्कृति ही नहीं होगी। अतः सांस्कृतिक उत्थान के लिए त्याग और समर्पण के जीवन मूल्य आवश्यक हैं। इन मूल्यों के प्रति निष्ठा और इनके आत्मसात् होने पर ही भारत का सांस्कृतिक उत्थान सम्भव है।

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

लेखकों हेतु सूचना

जिनवाणी के नारी-स्तम्भ, युवा-स्तम्भ एवं बाल-स्तम्भ के लिए विशेष रचनाएँ आमन्त्रित हैं।

-सम्पादक, जिनवाणी मासिक पत्रिका

विचारात्मक आलेख

उत्तर आधुनिक युग में श्रावकाचार : परिवर्तन सोच का

डॉ. अनेकान्त कुमार जैन

हर धर्म या दर्शन के साथ उसकी आचार मीमांसा भी किसी न किसी रूप में प्रकट होती है। कोई भी धर्म या दर्शन समाज से पृथक् होकर नहीं रह सकता। कोई भी समाज बिना आचार-मीमांसा के सभ्य नहीं हो सकता, इसलिए यह जरूरी समझा गया कि प्रत्येक धर्म-दर्शन व्यक्ति और समाज को एक आचार मीमांसा दे। सामाजिक व्यवस्था के संचालन के लिए तो यह जरूरी था ही, साथ ही धर्म-दर्शन के मुख्य उद्देश्य मोक्ष के लिए भी अत्यन्त आवश्यक था। इस संदर्भ में जैन धर्म-दर्शन ने भी एक सशक्त आचार-व्यवस्था व्यक्ति और समाज को दी। मूलत: निवृत्तिप्रधान धर्म होने के नाते जैन धर्म-दर्शन के सामने यह समस्या तो थी ही कि जिन सांसारिक दु:खों से निवृत्ति का उपाय बताने का यत्न किया जा रहा है उसी संसार और समाज की सुव्यवस्था के लिए कौन सी आचार-व्यवस्था दी जाये जो मुक्ति मार्ग में बाधक भी न हो और सामाजिक रीति-नीतियों और सभ्यताओं का सुसंचालन भी ढंग से चलता रहे।

जैन आचार की वैचारिक पृष्ठभूमि

निश्चित रूप से जैन दार्शनिक ऐसी आचार-व्यवस्था को जन्म नहीं दे सकते थे जिससे संसार बढ़े, प्रत्युत वे संसार और समाज में भी ऐसी आचारमीमांसा के हिमायती थे जिससे सांसारिक प्रपञ्च घटे और अन्ततोगत्वा व्यक्ति मुक्ति की ओर उन्मुख होकर अपना आत्मकल्याण करके सदा के लिए जन्म-मरण रूपी संसार का नाश कर दे। इसीलिए आचार-मीमांसा को दो प्रकारों में विभक्त करके दर्शाया गया, किन्तु उनका लक्ष्य समान बताया गया। वे दो प्रकार हैं -

(1) श्रावकाचार (गृहस्थाचार) (2) श्रमणाचार (मुनियों का आचार)

मुक्ति के लिए श्रमणाचार को अनिवार्य माना गया और चूंकि लक्ष्य समान है इसीलिए श्रावकाचार की भी आचार मीमांसा ऐसी रखी गयी, जो श्रमण बनने का पूर्वाभ्यास ही है। इसीलिए श्रमणचर्या के ही महाव्रतों का एकदेश (आंशिक) पालन अणुव्रत माना गया जो श्रावकों के लिए अनिवार्य है। कुल मिलाकर जैन आचार मीमांसा की पृष्ठभूमि आध्यात्मिक ज्यादा रही है। अध्यात्म मुक्ति का अविनाभावी होता है, वह व्यवहार जगत के साथ तब तक समझौता करने को तैयार रहता है जब तक कि उसके मूल लक्ष्य में बाधा

उत्पन्न न हो, किन्तु जैसे ही व्यवहार जगत् की भूमिका अध्यात्म के लक्ष्य को बाधा पहुँचाना शुरु करती है, अध्यात्म को मजबूरन उस व्यवहार जगत् से गठबंधन तोड़ना पड़ता है, उसका निषेध करना पड़ता है, फिर चाहे कितनी ही व्यवस्थाएँ टूटें, बदलें, अध्यात्म उसकी फिकर नहीं करता। यही अन्तर्द्वन्द्व जैनधर्म की आचार-मीमांसा के साथ भी चलता है, क्यों कि यदि वह सांसारिक व्यवस्थाओं के चक्कर में अपना मूललक्ष्य ही छोड़ देगा तो उसका होना व्यर्थ है।

1. श्रावकाचार की दार्शनिक समस्या

हम अपनी चर्चा को श्रावकाचार तक ही सीमित रखेंगे। धर्म-दर्शन के साथ एक बड़ी समस्या यह है कि वह जिन भी तत्त्वों की घोषणा करता है उसे शाश्वत भी घोषित कर देता है। अगर वो स्वयं ऐसा न भी करे तो धर्माचार्य ये काम कर देते हैं। कारण यह बतलाया जाता है कि चूंकि मुक्ति ही तुम्हारा लक्ष्य है, उसके लिए जो बाह्य क्रियाएँ आचरण हेतु बतायी गयी हैं, वे मार्ग हैं, चूंकि मुक्ति शाश्वत है, अत: उसका मार्ग भी तीनों कालों में एक ही रहता है - अत: वह भी शाश्वत है, इसलिए जो क्रियाएँ हैं वे भी शाश्वत हैं।

इन सबसे विपरीत यथार्थ की पृष्ठभूमि यह है कि संसार की कोई बाह्य आचार-व्यवस्था कभी शाश्वत हो ही नहीं सकती है। इतिहास के पन्ने उलट कर देख लिये जायें तो प्रमाण भी मिल जायेंगे कि किसी भी बाहरी आचार-व्यवस्था का अस्तित्व बिना किसी परिवर्तन के आज तक सुरक्षित नहीं रह पाया। उदाहरण के रूप में परिग्रह दो प्रकार का है- 1. अन्तरंग, 2. बाह्य। अन्तरंग परिग्रह के मिथ्यात्वादि चौदह भेद बताये हैं और बहिरंग के दस।[1] अब जरूरी नहीं कि आचार्य उमास्वामी/उमास्वाति ने जो परिग्रह के पाँच भेद पहली शताब्दी में गिनाये वे भेद आज 21वीं शती में भी पाँच ही हों। आचार्य उमास्वामी/उमास्वाति भी उन दिनों में बहिरंग परिग्रह के अधिक भेद भी गिना सकते थे, किन्तु उसकी कोई संख्या तो निर्धारित करनी पड़ती, अत: प्रतिनिधि के रूप से ऐसे पाँच परिग्रह गिना दिये जो बहुत आवश्यक थे और अन्य परिग्रहों का अन्तर्भाव उसमें किसी न किसी रूप में हो जाता है! लेकिन यह संख्या शाश्वत तो नहीं है न, और हो भी नहीं सकती। इसी स्थान पर अध्यात्म की दृष्टि से देखें तो 'मूर्च्छा परिग्रह:'[2] सूत्र भी है। यहाँ हम इस व्यवस्था को शाश्वत कह सकते हैं। अन्तरंग परिग्रहों को भी हम शाश्वत मान सकते हैं। इस उदाहरण से मैं यह कहना चाहता हूँ कि श्रावकाचार के अध्यात्म को तो हम शाश्वत मान सकते हैं, किन्तु जब उसकी बाह्य क्रियाओं को हम शाश्वत कहते हैं, मानते हैं या बनाने का प्रयत्न करते हैं तो हमें कहीं न कहीं उन तमाम समस्याओं से न चाहते हुये भी रूबरू होना पड़ता है जो समस्याएँ काल, युग, क्षेत्र, या परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होती हैं।

2. श्रावकाचार की व्यावहारिक समस्याएँ

अभी हमने श्रावकाचार की दार्शनिक समस्या के मात्र एक पहलू को छुआ है, कई और पहलू भी हैं, लेकिन उनका विस्तार इस निबंध में सम्भव नहीं है। अब हम श्रावकाचार की कुछ व्यावहारिक समस्याओं पर भी विचार करेंगे। यहाँ मैं एक बात जरूर स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि श्रद्धा के स्तर पर आचार्यों द्वारा प्रणीत आचार-व्यवस्था पर मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है। उन्होंने जैन धर्म के सिद्धान्त और व्यवहार की रक्षा के लिए जो योगदान दिया, जो व्यवस्थाएँ दीं वे अमूल्य हैं और उन्हीं की बदौलत हम यहाँ तक पहुँच पाये हैं। जो धर्म का रथ वे यहाँ तक खींच कर लाये हैं उसकी ओवरहालिंग करना, उसकी सर्विसिंग करना भी हमारा दायित्व है ताकि उसके पहिए जाम न हो जायें और ऐसा न हो कि उसको हाथ भी नहीं लगाने की हमारी जिद उसे युग की अगुवाई करने से रोक दे, लोग आगे निकल जायें और रथ वहीं खड़ा रह जाये। रथ को गति देने का दायित्व भी हम सबका है। चलिए! हम कुछ व्यावहारिक समस्याओं से रूबरू होते हैं जो कमोबेश हम सबके साथ जुड़ी हैं।

3. श्रावकाचार के सन्दर्भ में हमारी सीमित सोच

यह एक व्यावहारिक समस्या है जो हमने, हमारे समाज ने स्वयं पैदा की है। हमने श्रावकाचार का अधिकांश सम्बन्ध खान-पान से जोड़ रखा है। हम आचारशास्त्र का मतलब मात्र पाकशास्त्र समझते हैं जो कि हमारी एक भूल है। यही कारण है कि एक पाश्चात्त्य धर्मशास्त्री विद्वान् ने जैनधर्म के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है - 'Jainism is nothing but-It's only a kitchen Religion.' मैंने स्वयं जब यह पंक्ति पढ़ी तभी से इस विषय पर सोचना प्रारम्भ किया। विचार कीजिए! क्या हम इन पंक्तियों से सहमत हैं? उस पाश्चात्त्य विचारक की यह प्रतिक्रिया सही है या गलत? क्या उत्तर है हमारा? मैं उसके विचारों से सहमत नहीं हूँ, किन्तु उस बेचारे ने अपने अनुभव से जो प्रतिक्रिया दी है वह गलत भी नहीं है।

बन्धुओं! सच यह है कि खान-पान की सात्त्विकता श्रावकाचार का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, संपूर्ण श्रावकाचार नहीं।

विचार कीजिए श्रावक के बारह व्रतों में कितने व्रत हैं जिनका सम्बन्ध खान-पान की सात्विकता और उसके त्याग से है? पांच व्रतों[3] में मात्र अहिंसाव्रत और उसमें भी खान-पान उसका एक भाग है। चार शिक्षाव्रत[4] और तीन गुणव्रतों[5] में भी मात्र प्रोषधोपवास या भोगोपभोगपरिमाणव्रत हैं जिनका सीधा सम्बन्ध खान-पान की मर्यादा से है। श्रावक के

षडावश्यकों[6] में भी संयम और तप आवश्यक में खान-पान जुड़ता है, शेष आवश्यक अन्य क्रियाओं से सम्बन्धित हैं।

अत: मेरा पहला निवेदन यह है कि खान-पान की सात्त्विकता तथा उसके त्याग सम्बन्धी श्रावकाचार के साथ हम अन्य क्रियाओं को भी मुख्य धारा में रखें, तभी हम श्रावकाचार को विस्तृत फलक पर देख पायेंगे, अन्यथा हम श्रावकाचार को लेकर जितने समस्याग्रस्त आज हैं, कल और अधिक होंगे। हम श्रावकाचार को लेकर जैनधर्म को रसोई धर्म नहीं कह सकते।

इन व्रतों में खान-पान सम्बन्धी समस्या पर हम बाद में वार्ता करेंगे, किन्तु अन्य व्रतों की स्थिति हम जरा देख लें। अहिंसा व्रत के लिए हम रात्रि भोजन त्याग, छने जल का सेवन, जमीकंदादि अभक्ष्य पदार्थों का त्याग, रसों का क्रमश: त्याग आदि आदि करते हैं। इसके साथ ही घर का बना भोजन, कुँये का पानी, घर का पिसा आटा, मर्यादित दूध इत्यादि का सेवन करना भी कुछ श्रावक (विशेषत: दिगम्बर) आवश्यक समझते है। किन्तु इन सभी साधारण नियमों का पालन, आज के युग में विरले ही कर पाते हैं। नियम इससे भी अधिक माने जाते हैं, मैंने कुछ साधारण नियमों का ही उल्लेख किया है।

ये सब बहुत अच्छा है, किन्तु समस्या तब ज्यादा होती है जब इनका पालन करने वाला श्रावक अंधाधुंध देश-विदेश की यात्राएँ करने से बाज नहीं आता। हर जगह इतने सरंजाम जुटाना संभव नहीं। समाज में भी हर व्यक्ति इतनी व्यवस्थाएँ नहीं जुटा पाता है। मूलत: श्रावक की यह उचित धर्मानुकूल चर्या आज के युग में अप्रासंगिक लगने लगती है। यहाँ हम अपनी गलती नहीं देखते। शास्त्रों में दिग्व्रत-देशव्रत का भी विधान है अधिकांश श्रावक इसे कोई व्रत समझते ही नहीं हैं। मैं कहता हूँ एक स्थान पर रहने वाला श्रावक सारी व्यवस्थाएँ व्रतों के अनुकूल बनाकर चलता है अत: पालन में दिक्कत नहीं होती। शास्त्रों में कुछ सोचकर ही यह व्यवस्था दी गयी, मगर हम एकांगी हो गये, इसलिए समस्या खड़ी होती है। परिणाम यह है कि जो जितना बड़ा व्रती है वह उतना ही अधिक भ्रमणशील है और परदेश में व्रतों के पालन हेतु समाज पर आश्रित है, गृहस्थों के व्रत पालन जब पराश्रित हो जाते हैं तो अनेक प्रकार की समस्याएँ खड़ी कर देते हैं।

अतिथिसंविभाग भी वही कर पायेगा जो व्रत पूर्वक अपने घर में रहेगा। सामायिक व्रत तो दिगम्बर श्रावकों के जीवन से लगभग दूर हो चुका है। पांच व्रतों में स्थूल अहिंसा की थोड़ी बहुत चिन्ता बची है, बाकी सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को तो मानो व्रत मानना जैसे छोड़ ही दिया है। परिग्रह एक पाप है, और हम उसे पुण्य का फल बतलाकर दिन रात उसी की चिन्ता में मग्न रहते हैं। एक व्यक्ति शोध का भोजन करे, अष्टमी-चौदस

उपवास करे-फिर चाहे वह पञ्चेन्द्रिय के विषय भोगों में लगा रहे, असत्य भाषण, छल-प्रपञ्च, मायाचार, क्रोधादि तथा परिग्रह के प्रति अत्यधिक आसक्ति का धारक भी हो तो भी हमारी दृष्टि में वह उत्कृष्ट श्रावक कहलाता है, क्योंकि हम श्रावकाचार का अर्थ आहार समझते हैं - मानते हैं।

हमारे सामने समस्या भी है और समाधान भी। बस हमें अपनी सोच और नज़रिया बदलना है। मैं इतना कहकर इस चर्चा को यहाँ विराम देता हूँ, क्योंकि अन्य समस्याओं पर भी विमर्श करना है।

4. आधुनिकता की समस्या

वर्तमान समय में हम दो प्रकार की विचारधाराओं से ग्रसित हैं, एक-पारम्परिक विचारधारा और दूसरी-विकासवादी विचारधारा। हमारे मन में यह अन्तर्द्वन्द्व सतत चलता रहता है कि जैन संस्कृति को हम पारम्परिक और विकासवादी इन दोनों धाराओं के साथ संतुलन बिठाते हुये कैसे गति प्रदान करें? हम परम्परा से नहीं कट सकते, क्योंकि हमारी संपूर्ण विरासत पारम्परिक है। हम विकासवाद से भी अछूते नहीं रह सकते, क्योंकि हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर उत्तर-आधुनिकता की ओर बढ़ता हुआ ज्ञान-विज्ञान और धन संपदा से सुसज्जित वर्तमान युग हावी है। हमें इसके सामने भी अपनी संस्कृति, सिद्धान्तों और संस्कारों की प्रासंगिकता सिद्ध करनी है। यह हमारी वह आधुनिक समस्या है जिसका समाधान हमें ग्रन्थों में नहीं मिल सकता। इसका समाधान हमारे स्वयं के विवेक से संभव है।

5.परम्परा और विकास की समस्या

निश्चित रूप से परम्परा और विकास के अन्त:सम्बन्ध समस्याग्रस्त हैं। हम जैन सिद्धान्तों को आधुनिक सन्दर्भों में प्रासंगिक होने का भले ही कितना भी दावा करते हों, किन्तु सच यह है कि आधुनिक पीढ़ी को हम यह समझाने में असफल हो रहे हैं कि गाय और भैंस के स्तनों में मशीन लगाकर जबरन निकाले गये डेयरी के दूध मांसाहार हैं अथवा नहीं, क्योंकि पाश्चात्त्य देशों में वह सब Non-Vegiterian ही कहा जाता है जो Animal Product होता है, अब वह चाहे दूध, दही, घी ही क्यों न हो। छने हुये पानी को उबाल कर पीना, उसमें लौंग इत्यादि डालकर उसकी मर्यादा को अधिक करना, हफ्तों से फ्रिज में रखी किसी मिनरल वाटर से ज्यादा शुद्ध व अहिंसक होता है। प्याज,लहसुन, अदरक औषधियों के रूप में अनन्त गुणकारी शाकाहारी पदार्थ होते हुये भी हम इन्हें इसलिये नहीं खाते, क्यों कि इनमें अनन्त सूक्ष्म जीव होते हैं जो हमें आंखों से दिखायी नहीं देते, बल्कि भिण्डी, अमरूद इत्यादि कई-पदार्थो का प्रयोग हम हमेशा करते हैं जिनमें कभी-कभी साक्षात् रेंगते हुए जीव तक दिखायी पड़ जाते हैं। अन्य और भी कई आचारगत समस्याएँ

हमारे सामने मुंह बाये खड़ी हैं जिनका वास्तव में कोई निश्चित व्यावहारिक समाधान हमारे पास नहीं है। इसमें या तो हम रूढ़ हो जाते हैं या फिर स्वच्छन्दी। जब कि ये दोनों ही स्थितियाँ हमारा समाधान नहीं हैं। परम्परा कहती है पानी छानो, उबालो उसकी मर्यादा रखने के लिए उसमें लौंग इत्यादि डालो, विकास कहता है पानी शुद्ध चाहिए न! मिनरल वाटर की बॉटल खरीदो और पियो, 100% शुद्धता की गारंटी है।

6. क्या परम्पराएँ जड़ हैं और विकास गतिमान ?

आज के संदर्भ में परम्परा और विकास को प्राय: विलोम शब्द माना जाने लगा है। उनका उपयोग दो विपरीत ध्रुवीय संप्रत्ययों के रूप में किया जाने लगा है। परम्पराओं को जड़ और विकास को गतिमान मानना हमारी विचार प्रक्रिया में रूढ़ हो गया है। भारत में पाश्चात्त्य का घातक भूत बड़ी आसानी से जगह बना गया। हमने भी अपनी विरासत कुर्बान कर दी। एक तरह से यह हमारी निजी कमजोरियों का ही नतीजा है। यह सीधे-सीधे उन समस्त बौद्धिक और सांस्कृतिक आधारों पर आघात करता है जिनसे जैन समाज और व्यक्ति के संस्कारों की रचना हुयी है। हमारी अत्याधुनिकता ने धीरे धीरे इन सभी स्रोतों को सुखा दिया है जिनके द्वारा एक जैन अपनी आत्मा, अपनी अस्मिता और अपने अस्तित्व को संजोता संभालता है। इसी कारण वर्तमान में हम भी दो नावों पर खड़े हुए एक आत्मउन्मूलित आदमी बन गये हैं जिसका एक भाग तो परम्परा से जुड़ा है और दूसरा भाग पश्चिम की आधुनिक जीवन शैली, चिन्तन-पद्धति और उनकी संस्कृति के प्रति अनुरक्त है, चूंकि इन दोनों नावों का आपस में किसी किस्म का कोई संबंध नहीं है इसलिए हमारा पारम्परिक एवं सांस्कृतिक पक्ष उतना ही खोखला बन गया है जितना हमारा आधुनिक पक्ष कृत्रिम और दिखावटी। बाहर का प्रभाव हमारे मानस को जितना अधिक आत्मनिर्वासित कर रहा है उतने ही अन्दरूनी ऊर्जा के स्रोत सूखने लगे हैं।

7. परम्पराएँ तो जरूरी हैं

परम्परा और आधुनिक विकास इन दोनों की स्थिति अत्यन्त द्वन्द्वात्मक है। जैन संस्कृति अतीत के गत प्रयोग जीवाश्म के रूप में प्रकट नहीं हुयी है। उसमें प्रकट रूप से प्रच्छन्न ऊर्जा है। उसके बिम्ब, आचार, सिद्धान्त और प्रतीक, मूल्य और अर्थ वर्तमान के लिये भी प्रासंगिक हैं और भविष्य के लिए भी। वर्तमान की जड़ें अतीत में होती हैं और भविष्य में वर्तमान का विस्तरण होता है। बदलते संदर्भों में भी हमारी परम्परा और संस्कृति समाज को जीवन-क्षमता और दिशा-संकेत देती है। यह बात चिन्तनीय है कि क्या विकास की प्रक्रिया पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्य बोधों से असंपृक्त रह सकती है?

8. अणुव्रतों महाव्रतों की अस्मिता की समस्या

प्राय: जैन संस्कृति और धर्म के विचार के प्रसार में आचार को बाधक माना जाता रहा है। अजैन ही क्या जैनों तक में यह कहते सुना जाता है कि कठोर आचार संहिताओं के कारण जैन धर्म विश्वधर्म बनने से रह गया। ऐसी समस्याओं पर हमें यह कहना पड़ता है कि जैनधर्म Quality पर विश्वास करता है Quantity पर नहीं। यही जैनधर्म की विशेषता है। हम यह कहकर संतुष्ट हो जाते हैं, किन्तु आधुनिकता के बाद अब उत्तर आधुनिक युग में, वैश्वीकरण के इस दौर में हमारे अणुव्रतों और महाव्रतों के सिद्धान्त एक बार फिर अपनी अस्मिता पर प्रश्न चिह्न लगाये हमारे समक्ष खड़े हो गये हैं? जितनी तीव्रता से युग और वातावरण परिवर्तित हो रहा है उतनी तीव्रता से हम अपनी प्रासंगिकता को सिद्ध नहीं कर पा रहे हैं।

9. आचार मीमांसा और उत्तर आधुनिकता की समस्या

वर्तमान में आचार अपना ठोस आधार तलाश रहा है जो वस्तुत: आधुनिकता के तत्त्वों से मिलकर बना होता है। उसे अपनी प्रासंगिकता आधुनिकता के सापेक्ष सिद्ध करनी पड़ती है, इसलिए वह स्वयं को आधुनिकता से ज्यादा श्रेष्ठ और उपयोगी बतलाता है। उसका आत्माभिमान कायम रहता है। यह उत्तर आधुनिक युग भी आचार को यह दखलंदाजी करने देता है क्योंकि उसे विगत के साथ निरंतरता और उसके मूल्यों की आवश्यकता है। निरंतरता की उपलब्धि होते ही दखलन्दाजी की प्रक्रिया उल्टी हो जाती है और यह युग आचार में हस्तक्षेप करने लगता है। वह अणुव्रतों और महाव्रतों को उत्तर आधुनिकता की शक्तिशाली शर्तों के अनुसार गढ़ने लगता है। मूलभावनाओं को क्षीण करने की कीमत पर भी अणुव्रतों में पांच सितारा होटल डिनर, हवाई जहाज का शाकाहारी भोजन (जो उसी पाकशाला में तैयार होता है जहाँ मांसाहार तैयार होता है) और महाव्रतों में मोबाइल फोन, लैपटाप, इन्टरनेट, फेसबुक आदि प्रवेश करने लगते हैं और नये अणुव्रत, महाव्रत जन्म लेने लगते हैं। इस प्रकार का विकास सर्वांगीण नहीं कहा जा सकता, क्योंकि मूल्यों के ह्रास की भूमि पर उसके महल निर्मित हैं। अत: कहाँ हमें परम्परा से जुड़े रहना है और कहां अप्रयोजन भूत रूढ़ परम्परा में परिष्कार करके विकास करना है इसका विवेक पूर्वक निर्णय करना होगा।

10. अध्यात्म और समाज के समन्वय की समस्या

जैन अध्यात्म और समाज शास्त्र में मौलिक अन्तर हैं। सर्वप्रथम हम कुछ मौलिक भेद यहाँ समझेंगे –

जैन अध्यात्म	समाजशास्त्र
1. हर मनुष्य का लक्ष्य मोक्ष होना चाहिए।	1. यह संभव नहीं।
2. हिंसा का पूर्ण अभाव	2. हिंसा कम कर सकते हैं, समाप्त नहीं।
3. एकान्त में रहना चाहिए।	3. समूह में रहना ठीक है। समाज तभी बनता है।
4. धन-सम्पत्ति हानिकारक है।	4. इसके बिना जीवन कठिन है।
5. आत्मकल्याण ही श्रेयस्कर है।	5. सामाजिक विकास जरूरी है।
6. मिथ्यात्व को त्यागना है।	6. मिथ्यादृष्टियों के ही साथ रहना है। मानो कुछ भी, पर सम्मान सभी का करना है।
7. एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ नहीं करता।	7. 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'

अपने घर की अन्तरंग सफाई बहुत जरूरी है अन्यथा गन्दगी में रहने वाला मनुष्य अनेक बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। पर यदि सभी अपने घर की प्रतिदिन सफाई करके सड़कों पर फेंकें, तो वहाँ कूड़े का अम्बार लग जायेगा और वही कूड़ा उड़कर पुन: घर गंदा करेगा तथा मनुष्य और समाज दोनों बीमार हो जायेंगे। इसीलिए यह आवश्यक है कि घर की सफाई के साथ साथ सड़क की भी सफाई हो। घर की सफाई आत्मकल्याण है तथा सड़क की सफाई समाज-कल्याण है। जैनधर्म निवृत्ति प्रधान होने पर भी उसने समाज हित और समाज-कल्याण की कभी उपेक्षा नहीं की। श्रावक इस अन्तर्द्वन्द्व में उलझा रहता है कि वह आध्यात्मिक बने या सामाजिक बने? फलत: वह अधकचरा अध्यात्म लेकर मोहवश सामाजिक कार्यों में जुटा रहता है। वह पूरे मन से न तो अध्यात्म में रम पाता है और न ही समाज में। इसीलिए हमें श्रावकों के मध्य एक 'आध्यात्मिक समाजवाद' की अवधारणा प्रस्तुत करनी ही होगी, जो वर्तमान युग में उसे विकास से भी न रोके और उसका आन्तरिक अध्यात्मवाद भी जीवित रहे। वह मूल्यों को पाले, न पाल सके तो कम से कम उसका सम्मान करना सीख जाये। जिन धर्म में अपनी श्रद्धा को बरकरार रखे और कम से कम शुद्ध शाकाहार को जीवन में बनाये रखे। प्राकृत आगमों में कहा गया है -

"जं सक्कइ तं कीरइ, जं ण सक्कइ तहेव सद्दहणं"

सन्दर्भ:-

1. 'क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः।' -तत्त्वार्थसूत्र- 7/29
2. तत्त्वार्थसूत्र- 7/17

3. 'हिंसाऽनृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम्' - तत्त्वार्थसूत्र-7/1
4. 'दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च' -तत्त्वार्थसूत्र-7/21
5. वही,
6. देवपूजागुरूपास्ति स्वाध्यायः संयमस्तपः।
   दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने।।- यशस्तिलक चम्पू-सोमदेव सूरि

-जिन फाउण्डेशन, ए 93/7 ए, जैन मंदिर परिसर, नन्दा हास्पिटल के पीछे, छत्तरपुर एक्सटेन्शन, नई दिल्ली-110074

अप्रमाद अनिवार्य नितान्त

डॉ. दिलीप धींग

लक्ष्य-समर्पण आत्म-जागरण,
चरमोत्कर्ष का यही वृत्तान्त,
अप्रमाद अनिवार्य नितान्त।। ध्रुव।।

खेल-कूद में बीता बचपन।
भाग-दौड़ में जाता यौवन।
कैसे होगी आत्म-साधना?
जीवन भोगों से परिश्रान्त,
अप्रमाद अनिवार्य.....।। 1।।

वक्त है थोड़ा करना ज्यादा।
व्यर्थ की बातें बनती बाधा।
भाव-निद्रा में बेसुध हैं हम,
द्रव्य-जागृति के उपरान्त,
अप्रमाद अनिवार्य.....।। 2।।

हो क्षण-क्षण का लेखा-जोखा।
स्व व पर को नहीं दें धोखा।
देही कभी कहीं ना भटके,
जानें निश्चित है देहान्त,
अप्रमाद अनिवार्य.....।। 3।।

सत्य जो जितना वह है मेरा।
राग-द्वेष से करें किनारा।
नहीं उलझें हम वृथा-कथा में।
जियें अनेकान्त-सिद्धान्त,
अप्रमाद अनिवार्य.....।। 4।।

ममता छोड़ें बने निराकुल।
मिट जाएँ अनुकूल-प्रतिकूल।
व्यर्थताएँ, फेंक बनें हम,
महासागर-से शान्त-प्रशान्त,
अप्रमाद अनिवार्य.....।। 5।।

अन्तर्पथ के राही बनकर।
कदम-कदम यतना से चलकर।
समता से पाएँ निजता को,
सत्य-सुमन नहीं हो उत्क्रान्त,
अप्रमाद अनिवार्य.....।। 6।।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-3130002 (राज.)

प्रासङ्गिक

गोवंश का कत्ल एवं मांस-विक्रय मौलिक अधिकार नहीं

डॉ. उदय मुनि *

पशु क्रूरता निवारण अधिनियम,1960 संसद द्वारा पारित एक विशिष्ट कानून है। पशुओं के प्रति की जाने वाली क्रूरता कैसे रुके, इसके लिए इसके अन्तर्गत बने विविध नियमों में अति सूक्ष्म, गहन, व्यापक व्याख्याएँ उपलब्ध हैं। अधिनियम में एक भारी कमी यह है कि अत्यधिक क्रूरता के कारण चाहे कई पशु रोगग्रस्त, मूर्च्छित, मृतप्रायः अथवा मृत भी हो जाएं तो अपराधी को अधिकतम पचास रुपये के दण्ड से दंडित किया जा सकता है। यह बात भिन्न है कि राज्य की ओर से पुलिस, प्राणिरक्षक, गोरक्षक यदि सशक्त हों, न्यायाधीश भावनाशील हों तो न्यायालयीन प्रक्रिया में वे अपराधी भारी दुःखी हो जाते हैं। पूर्व प्रभारी केन्द्रीय मंत्री श्रीमती मेनका गांधी ने इस कानून को कड़ा एवं शक्तिशाली बनाने हेतु, कड़े दण्ड, अपराध को गैर-जमानतीय तक बनाने के भरसक प्रयास किए, अभी तक तो संसद पसीजी नहीं है। भारतीय जीव जन्तु कल्याण बोर्ड, चेन्नई की ओर से मैंने भी तब पशुओं की संरक्षा हेतु एक उत्कृष्ट एवं आदर्श पशुनीति बनाई थी, परन्तु सरकार के ठंडे बस्ते में बंद हो गई।

विसंगतियों का कारण है। एक मुहावरा है- एक गाल पर जोर से थप्पड़ मारो और दूसरे गाल को चूम लो। भारत की सरकार या संसद ऐसा ही करती है। चूमने वाला एक विभाग है- पशु कल्याण मंत्रालय। उसी के अन्तर्गत अन्य अधिनियमों के साथ उक्त अधिनियम और केन्द्रीय सरकार द्वारा गठित भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड है। मारने वाला है- उसी सरकार का निर्यात संवर्द्धन मंत्रालय और उससे संचालित भोजन निर्यात मंडल। पशु कल्याण मंत्रालय तो कुछ करोड़ का व्यय करवाता है और भोजन निर्यात मंडल से करोड़ों की कमाई होती है। एक विशिष्ट इकाई है-भोज्य पदार्थ संस्करण इकाई। आप समझते हैं कि अनाज, दलहन, तिलहन, फल, सब्जी की गुणवत्ता सुधारकर निर्यात होता होगा, नहीं, भोज्य पदार्थ संस्करण के नाम पर लाखों पशुओं का कत्ल करवाया जाता है, बढ़िया आकर्षक डिब्बों में मांस को भरकर विदेशों को निर्यात किया जाता है। सहयोगी होते हैं हजारों मांस-निर्यातक, लाखों छोटे-बड़े, अब तो बृहत् एवं यन्त्रचलित

* पूर्व में अखिल भारतीय कृषि गोसेवा संघ के अन्तर्गत डॉ. उदयलाल जारोली के रूप में आपने प्रशंसनीय कार्य किया था। उसी का अनुभव इस लेख में आबद्ध है।

कत्लखाने, जिनमें हजारों पशु एक साथ कत्ल हो जाते हैं। लाखों मैट्रिक टन मांस का निर्यात होता है और करोड़ों-अरबों रुपए कमाते हैं कसाई या ये कत्लखाने वाले। सर्वसुविधायुक्त अत्याधुनिक कत्लखाना बनाना हो तो भूमि आवंटन, करोड़ों रुपए का ऋण तथा प्रथम पांच वर्षों तक सरकार द्वारा करों से छूट भी दी जाती है। कानून और घोषणाएँ ऐसी कि गाय-बैल-बछड़ों का कत्ल नहीं होता, गोमांस का निर्यात नहीं होता, पर बकरों-मुर्गों आदि की तुलना में गाय-बैल-बछड़े बड़े सस्ते एवं सुलभ भी हैं। खूब कत्ल और भारी निर्यात।

लाखों गोरक्षक, प्राणिमित्र, अहिंसा-करुणा-दया में विश्वास रखने वाले करोड़ों नागरिक दुःखी हैं, परन्तु लाचार-बेबस हैं। करोड़ों-अरबों रुपयों की कमाई करने वाले पशु हत्यारों की सशक्त लॉबी है। इनके इशारों से सरकारें चलती हैं। पशु कल्याण नीति तो नहीं बनी, पर सरकार की एक आदर्श मांस-नीति है जिसमें प्रतिवर्ष हजारों नए कत्लखाने खुलते हैं, मांस निर्यात का खूब संवर्द्धन हो रहा है। वे करोड़ों दयालु नागरिक यह सब टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं, शायद आंसू बहाते हों, बस।

इन्हीं के आंसू पोंछने के लिए केन्द्रीय सरकार ने उक्त कानून बनाया। देखो भाइयों, लाठी, पत्थर, हथियार से पशुओं को दुःखी करने वालों, बोझा ढ़ोने, परिवहन करने में उनके साथ निर्दयता करने वालों को हम दंडित करते हैं। विचित्रता, विरोध देखें- क्रूरता करके दुःखी करना तो अपराध है, परन्तु उन्हीं की हत्या अपराध नहीं है। किसी को मार डालना क्रूरतम कृत्य है, वह भयंकर दुःखी होता है, पर उसकी खुली छूट है। विदेश से बंदरों की मांग आई। स्थल, जल, वायु परिवहन के लिए इतने सख्त-बारीक नियम बने हैं कि मनुष्यों के लिए भी ऐसे नहीं हैं। पता है आपको? उन बंदरों या अन्य प्राणियों का देश में या विदेश में परिवहन-निर्यात क्यों हो रहा है? कत्ल के लिए। उन्हें परिवहन में कष्ट देना अपराध है, पर कत्ल करना, नहीं है अपराध। भारत में ही ऐसा है क्या? विदेशों में भी ऐसा ही है। हम तो नकलची हैं। वैश्विक संगठन (यू.एन.ओ.) में भी पशुओं संबंधी अन्तरराष्ट्रीय घोषणा-पत्र और अभिसमय में भी ऐसा है। कत्ल करो पर प्यार से!!

भारत में हिन्दू, जैन, बौद्ध और सिक्ख ये चार प्रमुख अहिंसा-प्रधान धर्म हैं। इनके प्रवर्तक और प्रभावी दार्शनिक हुए हैं। इन्हीं के बोध और प्रेरणा से भारतीयों के रग-रग में, प्राणिमात्र के प्रति दया, अनुकंपा, करुणा एवं प्रेम भरा हुआ है। शायद इसी राष्ट्रीय परम्परा (नेशनल हेरिटेज) की संरक्षा हेतु भारतीय संसद ने संविधान में "मौलिक कर्त्तव्य" नामक एक नया अध्याय जोड़कर भारत के संविधान निर्माताओं की भूल सुधारी। उसमें एक है- सभी भारतवासियों का यह परम कर्त्तव्य होगा कि राष्ट्रीय परम्पराओं की संरक्षा

करे। दूसरा महत्त्वपूर्ण संशोधन है कि प्रत्येक भारतवासी का परम कर्त्तव्य है कि वह प्राणिमात्र के प्रति दया-अनुकंपा करे। इन मौलिक कर्त्तव्यों की गहनता-व्यापकता पर अभी कोई विशिष्ट सर्वोच्च न्यायालयीन निर्णयज विधि नहीं है। परन्तु यह निश्चित है कि संसद, विधानसभाएँ चाहें तो इनके क्रियान्वयन हेतु अधिनियम बना सकती हैं। कोई भी नागरिक, किसी के द्वारा इन मौलिक कर्त्तव्यों का भंग करने पर, जनहित-रिट-याचिका लगा सकता है।

मध्यप्रदेश पूर्ण गोहत्या बंदी कानून को कसाइयों ने चुनौती दी थी। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने अतिगहन व्याख्या करके उसे संवैधानिक घोषित किया था। उसमें विनियोग परिवार ट्रस्ट, मुम्बई और अ.भा. कृषि गो सेवा संघ की प्रशंसनीय भूमिका थी। निर्णय को कसाइयों ने सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी। तब मुख्य न्यायमूर्ति अहमदी ने तुरत-फुरत एक खंडपीठ गठित की। अहमदी-खंडपीठ ने उस निर्णय को अपास्त कर दिया। मध्यप्रदेश से भी गहन-व्यापक, पूर्ण गो हत्याबंदी कानून गुजरात राज्य ने बनाया। कसाइयों ने चुनौती दी। अहमदी-निर्णय को मानकर गुजरात उच्च न्यायालय ने उसे असंवैधानिक घोषित कर दिया। राज्य ने सर्वोच्च न्यायालय में विशिष्ट याचिका प्रस्तुत की। उक्त दोनों संस्थाओं ने इस प्रकरण में भारी पुरुषार्थ किया।

तब मुख्य न्यायाधिपति ने अपने नेतृत्व में विशिष्ट संवैधानिक पीठ गठित की। निर्णय कई पृष्ठों में है। संविधान में अनुच्छेद 48 में सरकारों को नीति-निर्देश दिया कि वे गाय, उसके बछड़े-बछड़ी, दुधारू और कृषियोग्य-बोझा ढोने वाले पशुओं की संरक्षा और संवर्द्धन करें। सभी राज्यों में गोरक्षा कानून बने। विचित्र यह हुआ कि 15 या 16 वर्ष की आयुवाली गाय-बैल, कृषि योग्य नहीं रहे या तीन वर्ष का बछड़ा नहीं हुआ तो कृषियोग्य नहीं, इस आधार पर कत्ल की छूट दे दी गई। हर राज्य में इसी छूट के कारण लाखों-लाख गोवंश का कत्ल या निर्यात हो गया। 1956 से लगाकर 2004 तक सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसे कानूनों को मान्यता दी।

गुजरात निर्णय में संविधान सभा बहस, नीति निर्देशक तत्त्वों, मौलिक अधिकार-विशेषतः व्यापार के अधिकार और नवीन मौलिक कर्त्तव्यों की व्याख्या की गई थी। सर्वोच्च न्यायालय के 1956 से लगाकर सभी गोरक्षा संबंधी निर्णयों की समीक्षा की गई और 1904 में (शायद) 8 जनवरी का निर्णय देश के मुख्य न्यायाधिपति ने लिखा-सुनाया, जिसमें गुजरात के पूर्ण गो हत्याबंदी कानून को संवैधानिक ठहराया। **अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उद्घोष तो यह हुआ कि ऐसे गोवंश का व्यापार या उनका कत्ल करना, उनके मांस का व्यापार करना किसी भी नागरिक का मौलिक अधिकार नहीं है।**

कृषि योग्य नहीं हुआ या आयु व रोग के कारण कृषियोग्य (दुधारु, बोझा ढोने योग्य, कृषि कार्य उपयोगी) नहीं रहा- इस आधार पर उसका कत्ल नहीं हो सकता। ''कृषि योग्य''- ''कृषि योग्य नहीं'' यह भेद ही मिटा दिया। जन्म से मृत्यु तक वह गाय जाति है। उदाहरणार्थ मनुष्य गर्भ से मृत्यु तक चाहे अत्यन्त कृश, वृद्ध, जीर्ण कई रोगों से घिरा-नारकीय जीवन जीने वाला है, फिर भी उसकी हत्या की अनुमति नहीं है। वैसे ही गाय, उसका वंशज बछड़ा, किसी भी उम्र का हो, दूध देने योग्य नहीं हुआ या कृषि-बोझा ढोने योग्य नहीं हुआ या नहीं रहा, अत्यन्त कृश-रोगी है, फिर भी उसका कत्ल नहीं किया जा सकता है। सर्वोच्च न्यायालय का यह आदर्श निर्णय है जो संपूर्ण भारत के लिए कानून है।

-अ.भा.श्वे. स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस, 115-सी, जैन नगर, मेरठ-250002

भगवन् मुझे उपासक

महासती भाग्यप्रभा जी म.सा.

भगवन् मुझे उपासक, जिन धर्म का बनाना।
आनन्द कामदेव, अरणक सा दृढ़ बनाना।।
बारह व्रतों के द्वारा आस्रव के ताले जड़ना।
संवर सामायिक पौषध, निर्दोषता से करना।।1।।
दृढ़धर्मी प्रियधर्मी, संसार भीरू रहना।
अस्थि शिरा व धमनी में, वीरवाणी बसना।।2।।
वितिगिच्छा शंका कंखा ये दोष सारे तजना।
अनुरागी स्व धर्म का सिद्धान्त प्राणों बसना।।3।।
आरम्भ के दलदल से उपरत कमल है बनना।
श्वेत वस्त्र सिर का मुण्डन, निसंग संत बनना।।4।।
सम्यक्त्व के उदय में भव के भ्रमण को तजना।
इस भव में बन आराधक, पण्डित मरण है मरना।।5।।
उपलब्ध सारे श्रुत का, गूढ़ ज्ञाता बनना।
झलके जीवन में आगम, पुरुषार्थ ऐसा करना।।6।।
स्वाध्याय हस्ती नारा, हीरा जीवन बनाना।
प्रमुदित हृदयी साधक, स्वर ज्ञान का गुंजाना।।7।।

(महासती जी द्वारा युवा स्वाध्यायी शाला में उच्चरित एवं श्री अशोक जी कवाड़, चेन्नई द्वारा संकलित)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (15)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि जी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-सम्पादक

महाराज साहब,

केवल 250 रुपये जैसी छोटी रकम,
अपने ही सगे छोटे भाई को, उसकी आँख बचाने के लिए भी
देने से इनकार कर बैठे बड़े-भाई के क्रूरतम व्यवहार की
आपकी लिखी बात पढ़ते-पढ़ते मन आश्चर्य में डूब गया।
एक बात आपको बताऊँ?
यह दृष्टांत आपने लिखा है इसलिए उसकी सत्यता के बारे में मन में
कोई संदेह पैदा नहीं होता। पर, यही दृष्टांत यदि आपके अलावा
किसी और ने बताया होता तो मैंने उसे कह दिया होता
''गप्पे हाँकना बंद कर।''
वैसे, आपके लिखे इस दृष्टांत को पढ़कर मैं पूरी रात सो नहीं पाया।
संभव है अपने छोटे भाई के साथ
बड़े भाई का किसी कारणवश विगत वर्षों में
कुछ मन मुटाव हुआ होगा।
शायद छोटे भाई ने कुछ ऐसा गलत व्यवहार किया होगा कि
जिससे बड़े भाई का दिल टूट गया होगा।
लेकिन उसका बदला लेने का उनका यह तरीका?
छोटा-भाई अंधा हो जाए, फिर भी उनको कोई परवाह नहीं?
आप बिलकुल सच्चे हैं

सद्गुण-समाधि-समता-सद्बुद्धि आदि सत्-घटकों का
जिसमें समावेश होता है वह पारमार्थिक सत्य यदि स्मृति में से
हट जाता है तो ऐसे दुःखद नुकसान और परिणाम
पैदा हुए बिना नहीं रहते।

मैं आपका बहुत बहुत आभारी हूँ कि सम्यक् मार्गदर्शन
देकर मेरी किस्मत में ऐसे परिणामों का उदय ही न हो
ऐसे मार्ग पर आप मुझे अंगुलि पकड़कर चला रहे हैं।
मैं आपसे आशीर्वाद माँगता हूँ कि
आपके बताए मार्ग को निष्ठावान रहने का सत्य मुझमें
सदैव प्रज्वलित ही रहे। उस मार्ग पर चलने की शक्ति
मुझमें बढ़ती ही रहे।

यश,

मैं खुद जहाँ परमात्मा से यह आशीर्वाद माँग रहा हूँ वहाँ
मैं तुम्हें क्या आशीर्वाद दूँ?
तुम यह मत मान लेना कि मैं तुम्हें जो मार्गदर्शन
दे रहा हूँ, मेरे जीवन में उसके अनुसार आचरण है ही।
नहीं। उसको अमल में लाने में कहीं मैं भी गलती कर बैठता हूँ,
कभी मैं अमल में लाने में कमजोर भी सिद्ध होता हूँ।
आवेशग्रस्त बनकर मैं भी कभी मेरे गुरुभाइयों के साथ तकरार कर बैठता हूँ।
फिर भी, मुझे आनंद है तो सिर्फ इस बात का कि
ऐसा कदाचित् ही होता है, विशेष संयोगों में ही होता है
और ऐसे प्रसंगों की आयु भी बहुत कम होती है।
बहुत ही अल्प समय में मैं उसके प्रभाव में से
बाहर आ जाता हूँ और मेरे गुरुभाइयों के साथ पूर्ववत् प्रसन्नतापूर्ण,
प्रेमयुक्त व्यवहार करना शुरु कर पाता हूँ।
इसके बावजूद 'सत्यनिष्ठ' बनने के बाद 'सावधान' रहने के
दूसरे सोपान को मुझे भी सदैव दृष्टि के समक्ष रखना ही पड़ता है।
क्योंकि यह तो मन है।

बंदर को यदि एक शाखा पर स्थिर बिठाया जा सके तो
मन को एक ही समझ पर स्थिर रखना संभव है।
गिरगिट को हमेशा के लिए एक ही रंग में देखने में
यदि सफलता मिले तो मन को एक ही मनोवृत्ति में स्थिर
होता देखने में सफलता मिलना संभव है।
पताका को फहराने की एक ही दिशा यदि निश्चित हो जाए
तो मन को एक ही दिशा में विचार करता हुआ रखने में
सफलता मिल जाए।

बस, मन के ऐसे विषम-विचित्र और विविध स्वभाव को
दृष्टिगत रखकर मुझे और तुम्हें
'सावधान' रहने के विकल्प को अमल में लाने के लिए
प्रयत्न करने हैं। हाँ, उसमें तुम्हें सफलता मिले ऐसी मेरी
ओर से तुम्हें हार्दिक शुभकामना है।

महाराज साहब,

आपका पत्र पढ़कर मन आश्चर्यचकित हो गया।
आप स्वयं कबूल करते हैं कि 'सत्यनिष्ठा' को जीवन में अमल में
लाने में कभी आप भी गलती कर बैठते हैं!
आपके पास संयमजीवन है।
आपके पास प्रभु-वचनों की प्रचंड पूँजी है।
आपके पास सम्यक् समझ का स्वामित्व है।
दाँव-पेंच खेलने ही पड़े ऐसी परिस्थिति आपके जीवन में
पैदा नहीं होती।
झूठ का सहारा लेना पड़े ऐसे प्रसंग आपके जीवन में नहीं आते।
पाप प्रवृत्तियों में व्यस्त रहना पड़े अथवा
पापविचारों से मन को व्याप्त बनना पड़े ऐसी कोई मजबूरी
आपके जीवन में नहीं आती और इसके बावजूद
'सत्यनिष्ठा' को अमल में लाने के मामलें में आपको भी
इच्छित सफलता नहीं मिलती।

मन में विचार तो यह आता है कि यदि आपको भी इस दिशा में
पीछे हटना पड़ता हो तो हम-जैसे संसारी मनुष्यों की दशा तो क्या होगी?
आपको विश्वास नहीं होगा, परंतु आपके पिछले पत्र ने मुझे
निराशा के गर्त में ढ़केल दिया है।
बड़े भैया के साथ आज निर्मित हो चुके मधुर संबंधों को
दीर्घजीवी बनाए रखने में मुझे सफलता मिलती रहेगी या नहीं
इस बात में मुझे संदेह होने लगा है।
'पारमार्थिक सत्य' को पकड़कर रखने के मेरे संकल्प को
मैं हमेशा टिका सकूँगा या नहीं इस मामले में मेरे मन में
दुविधा पैदा हो गई है।
मैं चाहता हूँ कि आप मुझे इस कमजोर मनःस्थिति में से बाहर निकाल दीजिए।

यश,

तुम यह याद रखना कि मैं भगवान नहीं हूँ
परंतु भगवान बनने निकला हुआ साधक हूँ।

गलती, पाप अथवा प्रमाद का शिकार बनने की संभावना भी
जिसके जीवन में से हमेशा के लिए समाप्त हो चुकी है उसे भगवान कहते हैं,
जबकि जो साधक अब तक साधनावस्था में ही है,
चाहे वह भगवान बनने के लिए निकला है, तो भी वह कर्माधीन है,
कुसंस्कारों से ग्रस्त है,
निमित्तवासी है,
और इसीलिए उसके जीवन में भी गलती होने की संभावना है,
पाप अथवा प्रमाद के सेवन हेतु आकर्षित हो जाने की संभावना है ही।
मेरी गणना ऐसे साधक में है।
तुम मुझे पूर्ण मान लो, सिद्ध अथवा भगवान मान लो यह कैसे चलेगा?

स्कूल में पढ़ रहा विद्यार्थी कभी
फेल भी हो सकता है,
कमाई करने हेतु दुकान खोलकर बैठा व्यापारी कभी
व्यापार में पैसे गँवा भी सकता है,

शतक-बल्लेबाज के रूप में कीर्ति प्राप्त कर चुका क्रिकेटर
किसी मैच में शून्य रन पर भी आउट हो सकता है।
वैसे ही
भगवान बनने निकला मुझ- जैसा साधक यदि
साधना करते-करते कभी गलती भी कर बैठे,
धोखा खा जाए, पाप कर बैठे तो
उसमें आश्चर्य करने जैसा क्या है?

अलबत्ता, ऐसा साधक जान-बूझकर गलत निमित्तों का सेवन न करे
यह आवश्यक भी है और अपेक्षित भी।
किसी कमजोर क्षण में वह गलती अथवा पाप का शिकार
बन भी गया हो तो भी वह अपनी गलती अथवा पाप का
बचाव न करे यह भी आवश्यक है और अपेक्षित भी।
परन्तु, यदि तुम यह अपेक्षा रखो कि ऐसे साधक को
जीवन में कभी गलती, पाप अथवा प्रमाद का शिकार
बनना ही नहीं चाहिए तो तुम आवश्यकता से अधिक अपेक्षा रख बैठे हो।
मुझे ऐसा लगता है कि इस स्पष्टीकरण के बाद तुम्हारा मन
हल्का भी हो गया होगा और उत्साहयुक्त भी।

संशोधन

1. अप्रेल 2012 के जिनवाणी अंक में गणाधीश श्री उमेशमुनि जी म.सा. के महाप्रयाण के समाचारों में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा कृत गुणानुवाद का उल्लेख किया गया था। उसमें पृष्ठ 189 पर सम्वत् 2037 में बदनावर में मिलन का प्रसंग दिया गया है, जो वस्तुतः सम्वत् 2035 का है। अतः वहाँ संवत् 2037 के स्थान पर 2035 पढ़ा जाए।
2. अप्रेल माह के ही इस सम्वत्सरी अंक में कतिपय संशोधन हैं, जिनका शुद्धिपत्रक तैयार किया गया है। इच्छुक व्यक्ति सम्पादक को पत्र भेजकर शुद्धिपत्रक प्राप्त कर सकते हैं।

-सम्पादक-जिनवाणी मासिक पत्रिका

English-Section

Social Relevance of Sāmāyika (Six Obligatory Duties)

Dr Samani Shashi Prajñā

The soul in its pure form is embedded with infinite perception, infinite knowledge, infinite bliss, and infinite vigour. These natural inherent attributes are not, however manifested by worldly soul, because it is smeared with *karmas.* The large number of ritualistic practices throughout the world has been devised to get rid of the *kārmic* impurities and eventually liberate the soul from the bondages of *karmas.* One of the methods of shedding the *karmas* is the observance of *āvaśyaka* i.e. essential spiritual practice of Jains. It is called *āvaśyaka* because it is compulsory for both the houseless monks and the householders. For monks and nuns, performance of *'āvaśyaka'* both in the morning and evening is unavoidable, such is the order of the scriptures, whereas for householders it is left to their will. The *āvaśyaka* is a cause of purification of everyday sins that's why Mahāvīra emphasized it so much. So let us proceed to explain the six essential duties in detail one by one and their social relevance.

The first *āvaśyaka* is *sāmāyika.* The *sāmāyika* means the practice of equanimity. For attainment of equanimity, giving up of eighteen sinful activities is essential. The jain monks & nuns undertake *sāmāyika* for long life but the householders observe at the minimum, for the time period of fortyeight minutes. The householder refrains himself from the worldly affairs and engrosses himself in spiritual introspection during the *sāmāyika.*

Sāmāyika (Practice of Equanimity) and the Meaning of Sāmāyika Sūtra

Oh Lord! I now engage in *sāmāyika.* As long as I remain in this state I shall not commit any sinful activity in thought, speech, or action not shall I encourage others to indulge in such activities. I repent and apologize for having committed sin. I condemn and censure myself for

such actions. I am determined to free my soul from this state of bondage. Having made the resolve, the layman sits in a yogic posture and begins his meditational exercises, scriptural study and isolating oneself from the daily household work, business, social responsibility so on and so forth.[1]

Importance of Sāmāyika

Ācārya jinabhadraganī Kṣamāśramaṇa highly speaks of *Sāmāyika* to such an extent that the essence of fourteen pūrvas knowledge is equal to the *sāmāyika.*[2] It is mentioned in the *Viśeṣāvaśyaka Bhāṣya* that as the space is the basis of five substances so is *sāmāyika,* the basis of all the virtures.[3] It is said that a person who doesn't practice *sāmāyika* can get omniscient knowledge, but can't achieve the state of liberation. The essence of colourful and beautiful flowers is, its smell, the essence of milk is, butter, the essence of sugarcand stick is, their juice; likewise the essence of *sādhanā* is *sāmāyika.* Moreover Ācārya Yaśovijaya expressed that the essence of thirty two canonical literature's knowledge is equivalent to the observance of one *sāmāyika.* Mahavira said, the single pure *sāmāyika* of Punia layman cannot be equal to the entire treasure of the then king Srenika. Let us see the applied philosophy of *sāmāyika.*

(i) Equanimity of Mind and Sāmāyika

The foremost attainment of *sāmāyika* in day to day life is equanimity of mind in all the favorable and unfavorable situations. There are five dualities in human life i.e. profit and loss, pain and pleasure, life and death, censure (blame) and praise and honour and dishonour.[4] It is really a very difficult task to remain neutral in undesirable situations. As a matter of fact, all days don't pass equally. Ups and downs, success and failure aiways go side by side. Ordinary life is run by mutually contradictory forces. It is natural for the mind to feel grief in adverse circumstances and joy in favorable ones. One can face unbearable and undesirable events by regular dedicated observance of *sāmāyika.* The

1. *Avaśyaka Sūtra* Ed. Madhukar Muni, 1.1
2. *Avaśyaka Sūtra,* Ed. Madhukar Muni, p. 24, *Viśeṣāvaśyaka Bhāṣya,* Verse, 2796
3. *Navasuttāṇī,* Ed. Yuvācārya Mahāprajña, *Āvassayaṁ,* p.4.
4. *Niryukti Saṁgraha,* p. 189.

practice of *sāmāyika* will give the insight that this undesirable circumstance will also pass away. This kind of optimistic thinking will give the energy to tolerate the situation and maintain ones mental balance and equanimity of mind. *Tīrthaṅkara Mahāvīra's* life is a classic example for equanimity of mind even in testing situations of life. On the one side of his feet Indra is paying *vandanā*, on the other side, snake is biting. In both the situations, the tranquility of Mahāvīra's mind was not disturbed.[5] Moreover Mahāvīra said, One who behaves equally as one's own self towards all living beings, mobile and immobile, is said to have equanimity.[6] In *Ācārāṅga* it is highlighted that the practice of equanimity is equated with righteousness itself.[7] *Sāmāyika* if practised systematically leads to equanimity of mind which inturn can bring about peaceful co-existence in the family.

(ii) Control of Passions and Sāmāyika

The practitioner of *sāmāyika* restrains himself from eighteen types of harmful emotional activities. It is the regular systematic practice of *sāmāyika*, which will, not only stop the inflow of new *kārmic* bondage, but also shed off the earlier bound *karmas*. Ācārya Mahāprajña has divided eighteen types of sinful activities into four categories:

Ist Category : Violence, untruth, stealing, non-celibacy and possession.

IInd Category : Anger, pride, deceit and greed, attachment, aversion.

IIIrd Category : Quarrel, character assassination, back-biting, malevolent criticism, liking for sensual pleasures and dislike for self restraint.

IVth Category : Deceit oriented untruth, thorn of perverted faith (mithyādarśana śalya).[8]

There are two sides of *sāmāyika*, one is positive and other is negative. From the positive point of view, the auspicious works are undertaken like recitation of scriptural texts, practice of contemplation, etc.[9] During the practice of *sāmāyika*, all the eighteen loopholes of the

5. Yoga Sāstra of Hemachandra, 1.1
6. *Niryukti Saṁgraha*, p. 189
7. *Ācārāṅga Sūtra* 3.2.40
8. Mahāprajñrā, *Adhyātma kā Pratham Sopāna : Sāmāyika*, p.11
9. Ibid, p. 29

personality are being replaced with eighteen types of virtues which enlighten the personality. The acts of violence, lying, stealing, carnality, possessiveness, pride, anger, deceit, greed, etc. are not only obstacles on the path of spiritual upliftment but also they are considered to be obstacles on the path of attainment of one's holistic personality too. One can control ones passions i.e. anger, pride, deceit and greed through the practice of contemplation of forbearance, humbleness, straight forwardness and contentment in *sāmāyika. Daśvaikālika Sūtra* mentios that the anger overpowers love, pride overpowers humbleness, deceit overpowers straight-forwardness, greed overpowers contentment.[10] So these are the four passions, which are the main causes of rebirth.[11] These passions are major obstacles in the attainment of success in any walk of life. There is no gainsaying the fact that the regular practice of *sāmāyika* would lead every person to become a dispassionate soul gradually. During *sāmāyika* the practice of perception of body, develops the sense of equanimity. It enables one to live in present moment without attachment and aversion.[12]

(iii) Emotional Balance and Sāmāyika

The present education system doesn't put emphasis on Emotional Intelligence. Its emphasis is upon developing the intellectualism, which leads to unidirectional development of personality. It is not so uncommon to see now-a-days highly educated people collapse emotionally for trivia. It happens so because of their lack of emotional intelligence. The practice of *sāmāyika* will thus help us to face this problem.

Brilliant minds commit suicide just for failure in love-affairs, due to unexpected and unbearable economic-loss in trade or business, sudden and heart breaking grief brought on by the death of the nearest and dearest, appearance of some disease which is incurable, unexpected shock due to failure to realize an ambition so on and so forth. Students commit suicide due to failure in the exams, just for not attaining first place in the merit list. Emotions can be kept under check if a person

10. *Daśvaiālika Sūtra*, 8.37
11. Ibid, 8.39
12. Mahāprajña, *Mysteries of Mind*, p.121

practises *sāmāyika* and concentrates on the center of enlightenment to do away from the emotional problems.[13]

(iv) Solution for Intolerance and Sāmāyika

In the words of Ācārya Mahāprajña, "Intolerance is an acute problem of the present generation. "[14] Due to intolerance, many cases of suicide, murder, divorce, etc. are increasing day by day. Wife doesn't want to tolerate the in-law's nature, habit and interest and vice-versa. It was our great Indian culture, where once one is tied with the bonds of marriage, one has to lead a life of mutual accommodation and adjustment throughout the life. But today the youngsters have forgotten our ancient Indian heritage. Due to intolerance, for very small issues, they decide to give up life or commit suicide. The virtue of tolerance can only help us to get rid of the situations, which is possible through the practice of *sāmāyika.* For the peaceful co-existence in any family continuous practice of *sāmāyika* is needed. To overcome the ever increasing problem of divorce, the culture of tolerance is to be incorporated. Recent research undertaken highlights that there is one divorce in every five minutes throughout the world. This very alarming and especially as this are an indirect attack on the Indian culture. The western culture is a dominating factor working behind this issue of divorce leading towards hatred and revenge between both the sides of the girl's and boy's relatives, which is not a good sign for social harmony. The regular practice of *sāmāyika* can help in developing the virtue of tolerance.

(v) Holistic Personality and Sāmāyika

Holistic personality is nothing but the scientific-cum-spiritual personality.[15] Holistic personality implies physical, mental, intellectual and emotional balance in all the situations of life. The state of equilibrium is the root cause of sound health. In the state of anger, the entire systems of body and its secretions are unbalanced. It is a fact that a person who gets angry for nine minutes loses nine hours of acquired biological energy of the body, which in turn minimizes life span.

13. Mahāprajña, *Prekṣā Dhyāna : Perception of Psychic Centres,* p.17
14. Mahāprajña, *Adhyātma kā Pratham Sopān : Sāmāyika,* p.32
15. Ācārya Tulsi, *Śrāvak Sambodha,* p.70

Thus, *sāmāyika* is not only a ritualistic practice but sound mind in a sound body is a very famous saying. *Sāmāyika* is a necessary condition for the development of mental powers. *Sāmāyika* and mental progress is a inseparable pair, both depend on each other for their respective development.[16] Moreover Ācārya Mahāprajña asserts that the practitioner of *sāmāyika* that develops the consciousness of equanimity can lead a peaceful life. Now-a-days the educational system provides only job-oriented curriculum, but completely neglects the knowledge which is the part and parcel of any person's life i.e. how to live together. It is a process of reaching nearer to the nature of self. *Śamayika* is the phase of pause to external world momentum and exploring inner powerful zone of unlimited potential, untouched beauty and eternal peace. It educates the person to become the self-master rather than to survive as a puppet of time, circumstance etc. This practice is conducive both for the individual spiritual upliftment as well as for the peaceful co-existence in the society.

Bibliography

Primary Texts

Ācārāṅga Sūtra Ed, Yuvācārya Mishrimalji 'Madhukar'. With original Text, Hindi version, Notes, Annotation and Appendices, Beawar : Shri Āgam Prakashan Samiti, 1998.

Āvaśyak Sūtra, Ed. Yuvācārya Mishrimalji 'Madhukar' With Original Text, Hindi version, Notes, Annotation and Appendices. Shri Āgam Prakāshan Samiti. 2001.

Daśvaikālika Sūtra. Ed. Mishrimalji Maharaj, Beawar : Āgam Prakāshan Samiti, 1991.

Navasuttāṇī Ed. Yuvācārya Mahāprajña, *Āvassayaṁ*, Ladnun : Jain Vishva Bharati, 1987.

Uvāsagadasāo, Ed. *Yuvācārya* Madhukar and Chaganlal Shastri, With original text, Hindi version, Notes, Annotation and Appendices etc. Beawar : Shri Agam Prakashan Samiti, 2006.

Viśeṣāvaśyaka Bhāṣya of Jinabhadra Gaṇī Ed. Dalsukha Malavaniya and Bechardasji, Lal Bhai Dalpatabhai, Ahmedabad: Bhārtīya Samskṛti

16. Mahāprajña. *Mysteries of Mind*, p. 169

Vidyāmandir. Vol.-I, 1968.

Yoga Śāstra of Hemachandrācārya. Ed. Surendra Bothara and trans. A.S. Gopani, Jaipur, Prakrit Bharati Academy, 1st edn. 1989.

Secondary Books

Mahāprajña, *Ācārya. Adhyātma Kā Prathama Sopāna* : Sāmāyika, Churu : Adarsha Sahitya Sangh, 1996.

Mahāprajña, Ācārya, *The Mysteries of Mind*, Ladnun : Jain Vishva Bharti, 1982.

Mahāprajña, *Prekṣā Dhyāna* : Perception of Psychic Centres, Ladnun : Jaina Vishva Bharati, 1982.

Mahāprajña, Ācārya, *Happy and Harmonious Family.* Trans. Sadhvi Vishrut Vibha, Ladnun : Jain Vishva Bharati, 1st edn., 2008.

Mahāprajña, Ācārya, *Jaina Dharma Ke Sādhanā Sūtra*, Delhi : Ādarśa Sāhitya Sangh. 2001.

Tulshī, *Ācārya. Śrāvak Sambodha.* Churu : Ādarṣa Sāhitya Sangha, 1998.

Tulshī, Ācārya. *The Vision of a New Society*, Churu : Adarsh Sahitya Sangh Prakashan, 1998.

-Asstt. Prof. in Deptt. of Jainology, Comparative Philosophy & Religion, Jain Vishva Bharati University, Ladnun-341306 (Raj.)

जिनवाणी पर अभिमत

डॉ. दिलीप धींग

'जिनवाणी' अप्रेल 2012 (वैशाख 2069) का सम्वत्सरी अंक साम्वत्सरिक एकता की दृष्टि से एक प्रामाणिक दस्तावेज बन गया है। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मार्गदर्शन में श्री प्रमोदमुनि जी ने यह अद्‌भुत कार्य करके अपनी बहुश्रुतता का परिचय दिया है। जटिल गणितीय तथा सांख्यिकीय गणनाओं से परिपूर्ण इस सामग्री का आलेखन भी इतना आसान कार्य नहीं था। लेकिन मुमुक्षु बहिन नेहा चोरड़िया ने इसे सफलतापूर्वक सम्पन्न करके अपनी श्रुत-निष्ठा की प्रशंसनीय अभिव्यक्ति दी है। यह अंक सम्वत्सरी के सवाल को हल करने के लिए सन्दर्भ अंक के रूप में सबके लिए सदा उपयोगी व मार्गदर्शक है। इसके अलावा प्रासंगिक तौर पर अनेक ऐसे महत्त्वपूर्ण तथ्यों का भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष समावेश इस अंक में हुआ है, जो अज्ञात अथवा अल्पज्ञात थे। यह अंक विशेषांक के रूप में चर्चित व प्रशंसित रहेगा। दूरदर्शितापूर्ण प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

दीक्षा-अर्द्धशती

उनके गुण को मैं क्या गाऊँ

श्रीमती नीलू डागा

उ — उनके गुण को मैं क्या गाऊँ, अध्यात्म शिखर जो छूते हैं।
उपवन महक रहा गुण सौरभ से, आत्म भाव में रमते हैं।।

पा — पावन श्रमणाचार है जिनका, वत्सलता के दानी हैं।
पाकर दीक्षा अर्द्धशती से, ऋजुता का नहीं सानी है।।

ध्या — ध्यान और स्वाध्याय का संगम, जिनवाणी अध्येता हैं।
ध्यानगम्य सुत छोटाजी का, मान मोह विजेता है।।

य — यतना है हर कर्म में जिनके, मधुर सदा व्यवहार है।
यम-नियम के पालक 'गुरुवर' 'अचलचन्दजी के हार हैं।।

प्र — प्रकाश पुंज जो प्रेरणा के, प्रवचन अमृतपान है।
प्रव्रज्या की है स्वर्ण जयन्ती, साधक महिमावान है।।

व — वज्र हृदय संयम पालन में, ज्ञान क्रिया के संगम हैं।
वन्दनीय निर्ग्रन्थ मुनि हैं, रत्नसंघ में अनपुम हैं।।

र — रक्षा कवच 'मांगलिक' जिनकी, जन-जन के विश्वास हैं।
रग-रग में जो बसे हुए हैं, मिलता तत्त्व प्रकाश है।।

मा — 'मान' भले ही नाम है जिनका, विनय गुणों के धाम हैं।
माध्यस्थ भाव में रमने वाले, जीवन में निष्काम हैं।।

न — नज़र करूँ क्या अब मैं उनको, गूंथा श्रद्धा का हार मेरा।
नयन भीगते अश्रु जल से, समझो इसको अर्घ्य मेरा।।

चं — चन्द्र प्रभा सी शीतलता है, समता की वो प्रतिमा है।
चन्दन की सुवास है जिनमें, चौथे पद की गरिमा है।।

द्र — द्रव्य भाव संयोग मुक्त, भिक्षा जीवी अणगारी हैं।
द्रष्टा ज्ञाता भाव में रहते, फिर भी पर उपकारी हैं।।

जी जीवन का तरु छाया देता, हम सबको वरदायी है।
जीत चुके जो अन्तर्मन को, 'हस्ती' की परछाई है।।

म. ममता-समता के पर्याय हैं गुरुवर, प्रसन्नता का वास है।
मधुर है जिनका वाणी व्यवहार, सन्निधि में संशयों का नाश है।।

सा. साधना की दीपशिखा से, उज्ज्वल समूचा जहान है।
सावन की बरखा सम है, मुस्कुरा रहा जिससे ये उद्यान है।।

कृपा दृष्टि गुरुवर करो, हम सबकी अरदास,
स्वाति की जल बूंद से, तृप्त करो ये प्यास।।

-''सौभाग'', सी-7, सादुलगंज, बीकानेर (राज.)

पैसा ही नहीं, धर्म-संस्कार भी देखिए

श्री प्रियेश जैन

बंधुओं! एक आश्चर्य की बात कि हमारे संघ-समाज के लोग जब अपनी लड़कियों का रिश्ता तय करने जाते हैं, तो वहाँ पर भी वे लोग यही देखते हैं कि लड़के वालों के पास कितनी धन-दौलत है, कितनी प्रॉपर्टी है और एक ऐसे लड़के के साथ रिश्ता तय कर देते हैं जो अमीर तो बहुत है, सम्पन्न तो बहुत है, लेकिन वह सप्त कुव्यसनों के जाल में फंसा है, और कई बुराइयों से ग्रस्त है।

लड़कियों के परिवार वालों को देखना तो यह चाहिए कि उस लड़के में धार्मिक संस्कार हैं, चरित्र ठीक है, सोच ठीक है,कोई व्यसन नहीं है तथा आजीविका का साधन न्यायपूर्ण है, किन्तु इन महत्त्वपूर्ण बातों को गौण करने से परिणाम सामने आते हैं- छः महीने या सालभर में तलाक अथवा जिन्दगी भर के लिये उनकी लड़कियों को दुःख। ऐसी कई घटनाएँ हम सभी ने कई बार अनुभव की है, लेकिन फिर भी सोचे-समझे बिना रिश्ता तय कर देते हैं।

मैं समस्त श्रावक-श्राविकाओं से यह निवेदन करता हूँ कि जब भी आप अपनी लड़कियों का रिश्ता तय करें, तब लड़के वालों के पास केवल धन ही मत देखियेगा। धर्म के संस्कार भी देखियेगा। लड़का थोड़ा मध्यम परिवार का भी होगा तो चलेगा, लेकिन चरित्रवान् और संस्कारवान् नहीं है, तो कदापि नहीं चलेगा। रिश्ता सावधान होकर ही करियेगा, नहीं तो आगे विकट मोड़ है।

-9, छोटा सर्राफा, उज्जैन (मध्यप्रदेश)

युवा-स्तम्भ

भ्रष्टाचार-उन्मूलन में युवाशक्ति का योगदान *

श्री पदमचन्द गांधी

लोकतन्त्र के सम्बन्ध में 45 वर्ष पहले ओसो ने कहा था "हिन्दुस्तान की एक जलती समस्या है पाखण्ड, सब तरह का पाखण्ड। जो व्यक्ति पक्का अहंकारी है वह हाथ जोड़कर कहता है- मैं तो कुछ नहीं हूँ, आपके पैर की धूल हूँ। वह भीतर तिजोरी बड़ी करता जा रहा है, वस्त्र सादे पहने हुए है, पैदल चलता है और विदेशों में धन जमा करता है। यहाँ बैठकर चरखा कात रहा है, ऐसा पाखण्ड भ्रष्टाचार को शालीनता से आगे बढ़ा रहा है।"

29 अगस्त 2011 की राजस्थान पत्रिका में डॉ. गुलाब कोठारी ने अपने लेख में स्पष्ट किया है कि जो कुछ परिस्थितियां द्वापर युग में कंस के शासन में थीं लगभग वैसी ही देश में व्याप्त हैं, जैसे भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराधीकरण, जातिवादी साम्प्रदायिकता, चारों ओर निराशा का वातावरण आदि। 74 वर्षीय श्री अन्नाहजारे के मात्र 12 दिनों के अल्पकालीन अनशन ने देश को झकझोर दिया है। सरकार ही नहीं संसद भी नतमस्तक हो गई है। इस आंदोलन ने स्पष्ट कर दिया है कि कोई भी साधारण संकल्पवान व्यक्ति, बेदाग छवि और जीवट के सहारे भटकती युवा पीढ़ी में नैतिकता के पांचजन्य से प्राण फूँक सकता है। ऐसे व्यक्तित्व वाले अन्ना हजारे ने देशप्रेम की भावना, देश में संघर्ष का जज़्बा दिखाकर युवा पीढ़ी के सामने गांधीवादी अहिंसक क्रांति में विश्वास को जगा दिया। हर प्राणी में परमात्मा का स्वरूप है, ठान ले तो युवा क्या नहीं कर सकता।

आज पूरा देश भ्रष्टाचार से त्रस्त है। जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि के नाम पर फूट डाली जा रही है। ऐसे में समझदार युवाओं को अहिंसक आंदोलन का नेतृत्व हाथों में लेना चाहिये। अनीति का मुकाबला नीति से करना चाहिये, नया नेतृत्व जगाकर अणुव्रत की जंग छेड़नी चाहिये, जनता जरूर साथ देगी।

आज देश में दिनों-दिन पैर पसार रहे भ्रष्टाचार ने हमारी आर्थिक प्रगति को खासा नुकसान पहुँचाया है। प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार अब तक 20 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ चुके हैं। सरकार ने जहाँ टैक्स वसूली को सख्त किया, वहीं उनके नुमायन्दों ने जनता की गाढ़ी कमाई को 'घोटालों' की भेंट चढ़ाना शुरु कर दिया है।

* आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2011 को जोधपुर में 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख।

इसमें से 133 करोड़ रुपये यूरिया घोटाला, 950 करोड़ रुपये का चारा घोटाला, 700 करोड़ का सत्यम् कम्पनी का घोटाला, 70 हजार करोड़ रुपये कॉमन वेल्थ गेम्स पर व्यय, 1.76 लाख करोड़ 2 जी स्पेक्ट्रम घोटाला, आदर्श सोसायटी घोटाला आदि विवरणों ने भारतवासियों को झकझोर दिया। इतना ही नहीं भारत में आज 'ईमानदारी' का स्तर घटने के साथ ही 178 भ्रष्ट देशों की सूची में भारत का 87वां स्थान आ चुका है। एक तरफ जहाँ 66 हजार अरब रुपये स्विस बैंक में कालेधन के रूप में जमा हैं, दूसरी तरफ विदेशी कर्ज की 13 गुणा रकम बकाया है। भ्रष्टाचार आज एक आम दस्तूर बन चुका है, इसकी जड़ें बहुत गहरी हो चुकी हैं। एक तरफ बढ़ती बेरोजगारी, गरीबी और बढ़ती मंहगाई ने गृहस्थ जीवन की कमर तोड़ दी है। ऐसे में आज की युवा शक्ति आक्रोशित हो रही है। आज का युवा बोखला गया है। श्री अन्ना हजारे द्वारा भ्रष्टाचार के विरुद्ध छेड़ी गई मुहिम में युवा शक्ति का अकल्पनीय सहयोग मिला है। गलियों में, सड़कों पर, चौराहों पर युवा शक्ति ने यह सिद्ध कर दिया है कि भ्रष्टाचार असह्य है, इसे मिटाना है।

भ्रष्टाचार मिटाने के लिये आज महावीर के सिद्धान्त, नीतियां, अवधारणाएँ, उपेक्षित हैं। स्वाध्याय के अभाव में धर्म के गूढ़ रहस्यों के मर्म की दवा बेअसर हो गई है। सिद्धान्तों का ज्ञान, आचरण, अधिनियमों की जानकारी, ईमानदारी, शुद्धतापूर्ण व्यवहार, दृढ़ निश्चयी संकल्पशक्ति तथा व्रती होने की प्रवृत्ति क्षीण हो चुकी है। ऐसे में भ्रष्टाचार के उफनते दूध में युवा शक्ति महावीर के सिद्धान्त रूपी शीतल जल के छीटें डालकर जनता में इन्हें आचरित करवाने की अहिंसक भावना जागृत कर भ्रष्टाचार-निवारण की मुहिम छेड़ सकती है। इसके लिये पहले स्वयं युवा को वृत्ति में प्रवृत्त होकर सम्राट् अशोक के पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा की तरह समर्पित होकर पूर्ण ईमानदारी से तथा पूर्ण क्षमता के साथ अपने आपको तैयार करना होगा।

भगवान महावीर ने आर्थिक विषमता को समझा, साधना के क्षेत्र में आने से पूर्व विपुल दान दिया। मुनि बनने के पश्चात् पांच महाव्रतों एवं अणुव्रतों में अपरिग्रह का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उसी के फलस्वरूप महात्मा गांधी ने 'ट्रस्टीशिप सिद्धान्त' को अपनाया। इन्हीं सिद्धान्तों पर चलने वाले आधुनिक गांधी अन्नाहजारे ने भी आर्थिक विकेन्द्रीकरण एवं सामाजिक असमानताओं को दूर करने के लिये भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंदोलन चलाया।

युवा शक्ति एक ताकत है। इसके बल पर भारत की भावी पीढ़ी में ईमानदारी की बहुलता देखी जा सकती है। युवा शक्ति वह रीढ़ की हड्डी है जिसके सहारे बुलन्द हौंसलों के कन्धों पर स्वच्छ एवं निर्मल भारत की इमारत दिखाई दे रही है। युवाशक्ति भ्रष्टाचार की

मैली चादर को उखाड़ फेंकने के लिये निम्नलिखित तत्त्वों पर अपना योगदान दे सकती है-

(क) महावीर के सिद्धान्तों का पालन-

(1) कर्म-सिद्धान्त की महत्ता को बढावा दिया जाए- भगवान महावीर का आत्म निरीक्षण/आत्म अंकेक्षण का सिद्धान्त बडा ही व्यापक है। उन्होंने व्यापार एवं वाणिज्य में पाई जाने वाली त्रुटियों को सुधारने की ही बात नहीं कही, वरन् सम्पूर्ण जीवन में व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले सभी प्रकार के कर्मों के फल-विश्लेषण की बात कर्म प्रकृति में कही है। शुभ एवं अशुभ कर्मों के विश्लेषण द्वारा आत्मा को यदि शुद्ध, पवित्र, सरल एवं निर्मल बना लिया जाए तो व्यापार एवं वाणिज्य तो स्वत: ही शुद्ध हो जायेगा, क्योंकि व्यक्ति फिर भ्रष्टाचार का दुष्कृत्य करेगा ही नहीं। ज्ञानी जनों, शास्त्रकारों ने इनका विवेचन 'आवश्यक सूत्र', 'कर्मप्रकृति' तथा 'जैन नीति मीमांसा' में स्पष्ट किया है।

(2) स्वयं की आलोचना की जाए- महावीर ने 'अणगार धर्म' और 'आगार धर्म' की विवेचना करते हुए श्रमणों के लिये 'महाव्रत' तथा श्रमणोपासकों के लिये 'अणुव्रत' के पालन की पुष्टि की है। आवश्यक सूत्र में 15 कर्मादान सहित 12 व्रतों के 60 अतिचारों में से 15 अतिचार व्यापार एवं वाणिज्य से संबंधित बताये गये हैं, जिनके द्वारा छल-कपट, गबन, लोभ, लालच, परिग्रह, अतिभोग एवं कषायों को रोकने के उपाय बताये गये हैं। ये सभी अतिचार प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से भ्रष्टाचार से जुड़े हुए हैं जिनकी आलोचना प्रतिक्रमण के द्वारा 'मिच्छामि दुक्कडं' पाठ से हो सकती है तथा इन्हें आचरितन कर व्यक्ति शुद्ध बन सकता है।

(3) अदत्तादान विरमण व्रत का पालन संकल्प द्वारा किया जाए- आवश्यक सूत्र में स्पष्ट किया है कि ''अदिण्णादाणे दुविहे पण्णत्ते-तंजहा सचित्तादाणे अचित्तादाणे य'' अर्थात् श्रमणोपासक के तीसरे स्थूल में अदत्तादान सचित्त एवं अचित्त के भेद से दो प्रकार का है। टीकाकारों ने अपनी टिप्पणी में कहा है कि दुष्ट अध्यवसाय पूर्वक अपने अधिकार से परे दूसरों की वस्तु को बिना अनुमति के यदि कोई ग्रहण करता है तो दोषी है। इस अतिचार में यह स्पष्ट किया है कि यदि मैंने चोरी की हुई वस्तु ली हो, चोर की सहायता की हो, राज्य के विरुद्ध कार्य किया हो, खोटा तोल खोटा माप किया हो, वस्तु में भेल-सम्भेल (मिलावट) किया हो तो मैं इन अतिचारों का दोषी हूँ, अत: मैं इनका प्रायश्चित्त करता हूँ।

राजकीय नियमों में भी इन सभी कृत्यों को दण्डनीय अपराध गया माना है। तस्करी द्वारा देश-विदेश से लाये गये पदार्थों को खरीदने, जमाखोरों एवं कालाबाजारियों से माल खरीदने से उन्हें प्रोत्साहन एवं प्रेरणा मिलती है, अत: ऐसा कृत्य करना वर्जित है। श्रावक

एवं आज के युवा को इनसे सावधान रहना चाहिये।

राज्यों की सुव्यवस्था के लिये बनाये गये नियमों का उल्लंघन करना, जैसे टैक्स न चुकाना, टैक्स की चोरी करना, अपने करों को दूसरों पर थोप देना, बिना किराये यात्रा करना, आयात-निर्यात नियमों के विरुद्ध माल लाना एवं भेजना, एक्साइज डयूटी की चोरी करना, स्टॉक का कम आकलन करना, बिना ऑक्ट्राई के माल लाना इत्यादि राजकीय राजस्व की चोरी है, जिससे राजकीय घाटा बढ़ता है। इन कार्यों में जो सहायता करता है, करवाता है या उनका अनुमोदन करता है वह दोषी है। यह व्रत स्पष्ट करता है कि यदि ईमानदारी से इसका पालन हो तो निश्चित रूप से राजस्व बढ़ेगा तथा भ्रष्टाचार रुकेगा।

राज्य शासन ने नापतोल साधनों को प्रभावी बनाने के लिये कानून बनाये हैं, मिलावट को रोकने के लिये नियम बनाये हैं, उनकी धर पकड़ के लिये उड़नदस्ते तैयार किये हैं, लेकिन वे कारगर सिद्ध नहीं होते, क्योंकि लोभ एवं लालच के कारण न्यूनाधिक बाट मापों को रखना, डण्डी मारना, कम तोलना इत्यादि कृत्य किये जाते हैं जो नीति विरुद्ध हैं तथा इन्हें धोखाधडी में सम्मिलित किया गया है। नापतोल में अप्रामाणिकता, लेनदेन के दोहरे मापदण्ड, एक नम्बर व दो नम्बर की बहियां रखना आदि व्यावसायिक चोरी ही नहीं, वरन् ठग विद्या है। तुरन्त करोड़पति के ख्वाब देखने वाले धनलोलुपता के कारण जानबूझकर मिलावट का धन्धा करते हैं, आये दिन अखबारों में मिलावटी घी, मिलावटी कुटटु का आटा, मसाले, दूध, मावा यहां तक कि जीवनरक्षक दवाओं में भी मिलावट की चर्चाएँ प्रकाशित होती हैं। व्यक्ति इन नियमों के विरुद्ध केवल 'धन' के लिये व्यवसाय करता है, भले ही हजारों लोग मौत के मुँह में क्यों न चले जायें।

युवा पीढ़ी इसमें अपनी कुशाग्र बुद्धि से स्वयं को सदाचारी एवं नैतिक सिद्ध करते हुए औरों के समक्ष तथा खासतौर पर अपने परिवारजनों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करे, जिससे भ्रष्टाचार पर रोक लग सके।

4. अपरिग्रह के सिद्धान्त को अपनायें- पाँचवें स्थूल परिग्रह-परिमाण व्रत के अन्तर्गत 'परिग्रह' को पापों का केन्द्र बताया गया है, क्योंकि समस्त पाप परिग्रह से उत्पन्न होते हैं। अपनी निकृष्ट इच्छाओं, गलत महत्वाकांक्षाओं एवं वस्तु के प्रति आसक्ति तथा मोह-माया को लेकर संसार में बड़े-बड़े अपराध तथा घोटाले होते हैं। भगवान महावीर ने कहा 'संगनिमित्तं मारइ, भणइ अलिअं, करेइ चोरिक्कं, सेवइ मेहुणमुच्छं, अपरिमाणं कुणइ जीवो' अर्थात् जीव परिग्रह के निमित्त हिंसा करता है, असत्य बोलता है, चोरी करता है, मैथुन का सेवन करता है और अत्यधिक मूर्च्छा करता है। इस प्रकार परिग्रह सभी पापों की जड़ है। संग्रह प्रवृत्ति दो बुराइयों को जन्म देती है- एक है 'विलासिता' दूसरी है 'क्रूरता'।

जब संग्रह के रूप में परिग्रह बढ़ जाता है तो आलस्य, अकर्मण्यता, दूसरों के श्रम पर मौज करने एवं अतिभोग की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। परिग्रही व्यक्ति चाहता है कि उसके मार्ग में कोई बाधक नहीं बने, दूसरे चाहे मरे या जीयें उन्हें कोई मतलब नहीं। परिग्रही व्यक्ति 'अतिक्रमी' होता है। वह बाह्य रूप से 9 प्रकार के परिग्रहों पर अतिक्रमण करता है। इनमें क्षेत्र (खेत), वस्तु, सोना चांदी, धन-सम्पत्ति, धान्य (अनाज), नौकर चाकर (द्विपद), जानवर (चतुष्पद), कुप्य अर्थात् वस्त्र, बर्तन, घरेलू सामान आदि। इनका परिमाण करना भगवान महावीर ने श्रेष्ठ बताया है। इनकी सीमा निर्धारित करना आवश्यक है।

सरकार ने भी आय से अधिक सम्पत्ति रखना अपराध बताया है तथा इनके लिये सीलिंग अधिनियम बनाया गया है। निर्धारित उद्देश्यों, निर्धारित स्रोतों के विरुद्ध संग्रह करना दण्डनीय है। आयकर विभाग आये दिन छापे मारता है, लेकिन जैन सिद्धान्तों के अनुसरण से इन पर स्वत: रोक लग जाती है, अत: युवा पीढ़ी इस पर चिन्तन करे और पापों से बचे।

'उपासकदसांग सूत्र' में कहा गया है, 'इच्छापरिमाणस्स पंच अइयारा, जाणियव्वा न समारियव्वा, तंजहा, खेतवत्थुपप्पाणाइक्कमे, हिरण्णसुवण्णप्प माणाइक्कमे, धणधण्णपमाणाइक्कमे, दुप्पयचउप्पयप्पपमाणाइक्कमे, कुवियप्पमाणाइक्कमे' अर्थात् मनुष्य के लिये ये पांच अतिचार (क्षेत्र-वस्तु, सोना-चांदी, धन-धान्य, दौपद-चौपद एवं कुविय धातु का परिमाण से अधिक संग्रह) जानने योग्य हैं, परन्तु आचरण योग्य नहीं हैं। इनका अतिक्रमण करना भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना है।

5. उपभोग-परिभोग की वस्तुओं को मर्यादित किया जाए- आवश्यकसूत्र के सातवें स्थूल में उपभोग-परिभोग परिमाणव्रत में व्यक्ति के लिये दिनोंदिन उपभोग में आने वाली वस्तुओं की मर्यादाएँ स्पष्ट की गई हैं तथा आवश्यकताओं को सीमित किया गया है। आज व्यक्ति अतिभोगी एवं सुविधाचारी हो रहा है, जिसकी सभी सीमाएँ टूट चुकी हैं चाहे वह वस्त्रों की हो, खान-पान की हो या शृंगार की। इनके अतिभोग के कारण कई प्रकार की बीमारियों को जन्म मिलता है। दूसरे स्थूल मृषावादका पालन नहीं करने पर व्यक्ति दुष्कृत्य करने लगता है और वह महत्त्वाकांक्षी बन जाता है, जिससे कई अपराधों को जन्म मिलता है। मर्यादाओं एवं संकल्पों के उल्लंघन से वह अतिचारी बन जाता है। अत: शास्त्रकारों ने उपभोग-परिभोग के परिमाण हेतु 26 पदार्थों की सूची दी है, जिनमें व्यक्ति अपने आपको मर्यादित कर सकता है।

इस प्रकार युवा पीढ़ी अतिसूक्ष्म एवं बारीकी से इनका चिन्तन कर आचरण करे तथा औरों को प्रेरित करे तो सभी प्रकार के दोषों से मुक्ति मिल सकती है। इसके लिये आवश्यक है कि युवापीढ़ी सिद्धान्तों की जानकारी, ग्रहणशीलता, ईमानदारी, शुद्धतापूर्ण

व्यवहार, दृढ निश्चय आदि गुणों को स्वयं विकसित करे।

6. आय में से कुछ वितरण आवश्यक– आय की असमानता भ्रष्टाचार एवं अपराध को बढ़ावा देती है। सभी धर्मों ने 'अधिकारों' एवं 'स्वामित्व' के त्याग को महत्त्व दिया है। 'दास केपिटल' में कालमार्क्स ने 'आर्थिक असमानता' के कारण वर्ग-संघर्ष की बात कही है, जिसमें आय के समान वितरण को महत्त्व दिया गया है। 'कुरान' में तो यहाँ तक कहा गया है कि समर्थ व्यक्ति का यह फर्ज बनता है कि वह सहायता मांगने वाले व्यक्ति तथा वंचित व्यक्तियों की सहायता करे। हाल ही में विश्व के सबसे बड़े पूंजीपति बिल गेट्स ने अपनी आधी सम्पत्तियों का दान कर दिया है। इतना ही नहीं उनकी देखा-देखी 10 और बड़े पूंजीपतियों ने भी अपनी सम्पतियों में से दान देना शुरू कर दिया है। यदि आय का समान वितरण होगा तो भ्रष्टाचार पर निश्चित रूप से रोक लगेगी।

संग्रहवृति एवं जमाखोरी के कारण सभी नैतिक एवं मानवीय मर्यादाएँ टूट चुकी हैं। लालच एवं प्रतिस्पर्धा ने आधुनिक अर्थव्यवस्था के नाम पर 'संयमित जीवन शैली' को क्षीण कर दिया है। बढ़ती शोषण वृत्ति ने समाज में अमीर और गरीब की दीवार खड़ी कर दी है। इन्हीं सिद्धान्तों के उल्लंघन के कारण ईर्ष्या, असंतोष एवं हीनता की भावना बढ़ रही है, जिससे कितने ही अपराध फल फूल रहे हैं। युवा पीढ़ी इन पर यदि चिन्तन करे तो निश्चित रूप से कारगर सिद्ध हो सकती है।

7. नैतिक योगदान– युवा पीढ़ी अपने नैतिक दृष्टिकोण से पनप रहे भ्रष्टाचार को मिटाने के लिये नयी अलख जगा सकती है। इसके लिये आज की युवा पीढ़ी भ्रष्टाचार निवारण हेतु युवा संगठन बनाकर, शिविरों के माध्यम से अध्यापन कर तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, पोस्टर प्रतियोगिताओं, लघु नाटिकाओं एवं झलकियों द्वारा जनता को जागृत कर सकती है। बड़ी संस्थाओं के सहयोग द्वारा इनका संचालन आसानी से किया जा सकता है। आज कई गैर सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) ने भी इन पर काम करना प्रारम्भ कर दिया है। जैन समाज में भी कई संस्थाएँ कार्यरत हैं। यदि इन मुद्दों को उनके माध्यम से उठाया जाये तो निश्चित रूप से युवा पीढ़ी की भूमिका कारगर सिद्ध होगी।

(ख) भ्रष्टाचार के खिलाफ कानूनी सहायता–

हाल ही के कुछ महीनों में भ्रष्टाचार के खिलाफ श्री अन्ना हजारे ने 'जन लोकपाल' को लेकर अनशन द्वारा सरकार को कठघरे में खड़ा कर दिया है। सरकार भ्रष्टाचार से जुडे मामलों से निपटने के लिये 10 नये कानूनों (पुराने कानूनों में संशोधन के साथ) की तैयारी कर रही है। युवा पीढ़ी धार्मिक एवं नैतिक सिद्धान्तों के अतिरिक्त निम्न कानूनी सहायता से भ्रष्टाचार उन्मूलन कर सकती है:-

1. **सूचना का अधिकार नियम (आर टी आई एक्ट 2005)**– इससे जनता के पास आधिकारिक तौर पर सूचना की पहुँच आसान हो गई है और सरकारी जवाबदेही बढ़ने से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में यह कानून कारगर साबित हो रहा है। इस नियम के अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति किसी भी तरह की सूचनाएँ प्राप्त कर सकता है।
2. **ज्यूडीसियल स्टैण्डर्ड एंड एकाउन्टेबिलिटि बिल– 30 दिसम्बर 2010**– इस बिल द्वारा न्यायिक क्षेत्र में सुधार के लिये जजों की नियुक्ति प्रक्रिया में सुधार होने से न्यायिक क्षेत्र मजबूत होगा।
3. **पब्लिक प्रोक्योरमेन्ट बिल**– पैंसिल से लेकर विमान तक की सरकारी खरीद समझौतों में पारदर्शिता लाने के लिये इसे पास किया गया।
4. **प्रिवेन्शन आफ मनी लेन्डिंग एक्ट एंड अन लॉ फुल एक्टिविटीज (प्रीवेन्शन) एक्ट में संशोधन**– इस बिल में 28 विभिन्न रूपों वाले 156 अपराधों से निपटने का प्रावधान है। इसके अलावा इस बिल में आतंकवाद तथा आतंकवाद को मुहैया होने वाले वित्त से लड़ने का भी प्रावधान किया गया है।
5. **व्हिसिल ब्लोअर प्रोटेक्शन बिल (अगस्त 2010)**– कई व्हिसिल ब्लोअर (जैसे मंजू नाथ भूषण, सत्येन्द्र दुबे, अमित जेठवा, दत्ता पाटिल, सतीश सेठी, शशिधर मिश्रा आदि) मारे गये। इसके अलावा कई आर टी कर्ताओं पर जान लेवा हमले हुए। इन्हें रोकने के लिये अनियमितता या घोटाले के खिलाफ आवाज उठाने वालों को संरक्षण प्रदान करने में यह नियम सहायक है।
6. **जन शिकायत निवारण अधिनियम 2011**– यह मूल रूप से तीन मूल सिद्धान्तों पर आधारित है। इसमें सिटी चार्टर शिकायतों के निवारण के लिये तय समय-सीमा में सेवा मुहैया कराने में असफल रहने पर सजा का भी प्रावधान है।
7. **यू.आई.डी. आथोरिटी आफ इन्डिया बिल 2010**– विशिष्ट पहचान परियोजना द्वारा 'आधार कार्ड' बनाकर सभी नागरिकों की पहचान कर कल्याणकारी योजनाएँ मुहैया करायी जा रही हैं। इससे सरकारी योजनाओं के कार्यक्रमों की निगरानी भी की जायेगी।
8. **इलेक्ट्रोनिक्स सर्विस डिलीवरी बिल**–यह बिल सरकारी कार्यालयों में इलेक्ट्रोनिक्स माध्यम से जन सेवाएँ जुटाने से संबंधित है। इन सेवाओं के अनिवार्य होने से पारदर्शिता तथा प्रामाणिकता पर प्रभाव पड़ेगा।
9. **ब्राइबरी ऑफ फॉरेन पब्लिक आफिशियल बिल 2011**– बजट सत्र में इसे पेश

किया गया। इसका उद्देश्य भारत में घूस देने वाले विदेशी अधिकारियों को प्रत्यार्वितत करके यहाँ लाकर सजा दी जाती है।

10. **इलेक्टोरल रिफार्मस एमेन्डमेन्ट बिल**– चुनावी सुधारों पर अगला आंदोलन करने की अन्ना हजारे की चेतावनी ने सरकार को अग्रिम रणनीति तैयार करने के लिये विवश कर दिया। इस विधेयक में राजनीति को अपराधीकरण से मुक्त करने एवं व्यापक चुनाव सुधारों के प्रावधान रखे जा रहे हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त कानूनी जानकारी आमजन तक पहुँचाकर तथा आवश्यकता पड़ने पर इनकी मदद लेकर युवा पीढ़ी भ्रष्टाचार पर रोक लगा सकती है।

(ग) युवा पीढ़ी द्वारा किये जाने वाले कार्यों की क्रियान्वयन प्रणाली (एग्जीक्यूटिव सिस्टम)– उपर्युक्त दर्शाये गये सभी कार्यों को क्रियान्वित करने के लिये युवा पीढ़ी एक रणनीति बनाकर प्रबन्धन का सिद्धान्त अपना सकती है।

1. **नेतृत्व**– कुशल नेतृत्व के द्वारा सबके हितों को ध्यान में रखते हुए सबको साथ में लेकर चलने से भरपूर सहयोग प्राप्त हो सकता है। नेतृत्वकर्ता स्वयं समर्पण भाव रखकर, निःस्वार्थ भावना से पूर्ण ईमानदारी के साथ कार्य करे तथा स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत करे।
2. **समन्वयकता**– किसी भी कार्य को करने के लिये आपसी समन्वय जरूरी है। आपसी तालमेल से किसी प्रकार का कन्फयूजन नहीं होगा। कार्य प्रणाली का तरीका स्पष्ट होगा तथा भ्रम की स्थिति नहीं होगी। इससे कार्य आसानी से हो सकेगा।
3. **क्रमिक योजना**– किसी भी कार्य को करने के लिये प्वाइंट टू प्वाइंट एवं क्रमिक प्लानिंग करने से किसी भी प्रकार की कमी एवं गलती होने का अवसर नहीं होगा तथा कार्य में क्रमबद्धता रहेगी तथा सतत रूप से आगे से कार्य होता चला जायेगा।
4. **क्रियान्वयन**– प्लानिंग सही होने के बाद कार्य को क्रियान्वित करना सबसे महत्त्वपूर्ण है। इसमें अधिकतर युवाओं का व्यवहार काम आयेगा तथा सरलतम प्रणाली द्वारा (जैसे उपर्युक्त नैतिक, धार्मिक एवं कानूनी) इन्हें लागू किया जाए जिससे भ्रष्टाचार पर रोक लग सके।
5. **नियंत्रण**– कार्यप्रणाली को लागू करने के बाद उस पर नियंत्रण एवं मूल्यांकन भी जरूरी है। यदि कमी नज़र आये तो शीघ्र ही उसे ठीक कर लिया जाये, निम्न स्तर पर या प्रारम्भिक स्तर पर रोक लगा दी जाए।
6. **लाभदायक प्रणाली**– सबके हितों को ध्यान में रखते हुए सहकारिता के सिद्धान्त के

आधार पर 'सब एक के लिये : एक सबके लिये' प्रणाली को अपनाने से सभी को लाभ प्राप्त होगा, जिसमें व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं रहेगा।

7. **प्रखर व्यक्तित्व–** उपर्युक्त के अलावा युवा अपने व्यक्तित्व को निखारे, जिसमें सहनशीलता, सच्चाई, अहिंसा, आत्म-सम्मान, गंभीरता, मुददों की समझ आदि कई बातों को शामिल कर सकते हैं।

इस प्रकार समझदार युवाओं को भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के लिये नई मुहिम छेड़कर जैन धर्म के सिद्धान्तों का आचरण करते हुए उनके प्रचार-प्रसार का आंदोलन प्रारम्भ करना चाहिये तथा पाँच अणुव्रतों के संकल्प द्वारा अधिक से अधिक लोगों को व्रती बनाये जाने का प्रयास करना चाहिये, जिससे निश्चित रूप से भ्रष्टाचार पर रोक लगेगी।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार बी, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राज.)

इक देव मेरे अरिहंत

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.

(तर्ज:- होठों से छू लो तुम.....)

इक देव मेरे अरिहंत, नहीं और देव चाहूँ।
प्राणों में बसे हैं जो, मैं रोम-रोम ध्याऊँ.....।।टेर।।
हुआ धन्य मेरा जीवन, अरिहंत शरण पाकर।
पुलकित है मन मेरा, जिह्वा से गुण गाकर।
भव-भव में प्रभु तेरा, उपकार न बिसराऊँ.....।।1।।
है नाम बड़ा मंगल, वंदन उत्तम मंगल।
दर्शन पावन मंगल, शरणा जिनका मंगल।
पाकर अनुपम वाणी, मैं तन मन मुस्काऊँ.....।।2।।
मेरी श्रद्धा रहे अविचल, चाहे दुःख कितने आएँ।
नहीं टूटे आतम बल, नहीं मन कभी अकुलाए।
दुःख में भी रहूँ सुख से, तो शुभ चिंतन पाऊँ.....।।3।।
'गौतम' से प्रभु कहते, जिनराज वचन सच्चे।
क्या पर से आश करे, जब देव मिले ऊँचे।
बस एक तमन्ना हो, मैं प्रभु सम बन जाऊँ.....।।4।।

-संकलनः- सुनिता नरेन्द्र डागा, मुम्बई

नारी-स्तम्भ

अच्छा इंसान तो बने बालक

डॉ. इन्द्रा जैन

सूर्य यदि अधिक ताप देने लगे, मेघ अत्यधिक वर्षा करने लगे और हवाएँ तीव्र वेग से ही चलती रहें तो वे मानव का विकास करेंगी या विनाश? निश्चित रूप से विनाश। उसी प्रकार भौतिक ज्ञान के अत्यधिक प्रभाव ने हमारे सामने यह समस्या उत्पन्न कर दी है कि ज्ञान का यह विस्फोट हमारे युवा वर्ग को विकास की ओर ले जा रहा है या विनाश की ओर?

कम समय में अधिक से अधिक जानने, पाने और भोगने की चाह से युवा वर्ग जिस तनाव, टूटन और संत्रास का शिकार हुआ है, आने वाले समय में यह गंभीर समस्या को जन्म दे सकता है। सोपान दर सोपान न जाकर छलांग लगाकर जीवन की सारी सुख-सुविधाओं को शीघ्र पा लेने की होड़ ने उसे अनुचित साधनों के प्रयोग की ओर उत्प्रेरित किया है। इस उत्प्रेरणा में कहीं अभिभावक सहयोगी तो नहीं बन रहे? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

अधिक सिखाने की चाह में हम वही सिखाना भूल रहे हैं जो बालक को इंसान और श्रेष्ठ नागरिक बनने के लिये सबसे अधिक आवश्यक है। जी हाँ प्रेम, दया, करुणा, सहिष्णुता जैसे आधारभूत मानवीय गुण हम बालक को कहाँ सिखा पा रहे हैं? एकल परिवारों के चलन ने पारिवारिक रिश्तों को समाप्त करने के साथ ही बाल मन के संस्कारों को भी कड़वाहट दी है, हम इससे इंकार नहीं कर सकते।

जन्म लेने से पूर्व माता-पिता बच्चे के लिये अच्छे स्कूल में प्रवेश की चिंता तो करते हैं, लेकिन अच्छे संस्कार देने की चिंता कितने अभिभावक करते हैं? बच्चे की बाल सुलभ क्रीड़ाएँ देखने का हमारे पास समय ही कहाँ है? हम उसे कम्प्यूटर, वीडियो गेम, टी.वी. जैसी बेजान मशीनों से प्रेम करना सिखा रहे हैं, फिर वह इंसानों से प्रेम करना भला कैसे सीखेगा?

इंटरनेट का भयावह परिणाम अभी-अभी अखबार में आया है कि बच्चे नशे के समान इसके आदी होते जा रहे हैं जो उनके मस्तिष्क के विकास में भी बाधक है। जब हम बच्चों के साथ समय नहीं बितायेंगे तो वे माइकल जैक्शन और स्पाइडर मैन को ही अपना आदर्श बनायेंगे। गाँधी, बुद्ध, नेहरू, सुभाष और महावीर से उनका परिचय ही कहाँ है?

अभी बालक के खिलौने होते हैं बंदूक और पिस्तौल, जो बचपन से ही उसे क्रूर और हिंसक बना देते हैं। प्रतिस्पर्द्धा में दूसरों को गिराकर आगे निकलना ही उनके जीवन का उद्देश्य होता जा रहा है। कम उम्र में ही तनाव, चिंता, अवसाद का शिकार बालक स्वस्थ और श्रेष्ठ मानव कैसे बन पायेगा? बोलना सीखते ही सभ्य और श्रेष्ठ दिखाने की चाह में माता-पिता बच्चे को नर्सरी राइम्स रटाना शुरू करते हैं और जीवन भर वह शिक्षा का उद्देश्य रट कर परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना ही समझता है। ज्ञान को क्रिया रूप में परिणत करने, आचरण में उतारने की बात तो वह सीख ही नहीं पाता। नया सीखने, जानने और समझने की जिज्ञासा न जाने कहाँ दब गई? जीवन मूल्य, सुसंस्कार, अनुशासन, त्याग, समर्पण जैसे शब्दों के अर्थ से उसका साक्षात्कार करवाना ही हम भूल रहे हैं।

इसी का परिणाम है युवाओं में बढ़ता आक्रोश, कुंठा, चिड़चिड़ापन और असहनशीलता, जो उसे नशे का आदी ही नहीं बना रहे आत्महत्या तक करने को मजबूर कर रहे हैं। आवश्यकता है बचपन से ही बालक को सही दिशा बोध देने की। जीवन के लिये धनोपार्जन आवश्यक है, लेकिन परिश्रम से प्रामाणिकता एवं नैतिकतापूर्वक कमाया धन ही श्रेयस्कर है, अन्यथा

जे पाव कम्मेहिं धणं मणुस्सा, समायर्यंति अमइं गहाय।
पहाय ते पास पयट्ठिए नरे, वेराणुवद्धा नरयं उवेंति।।

उत्तराध्ययन सूत्र के चतुर्थ अध्याय की यह गाथा संदेश देती है कि पाप कर्म से उपार्जित धन नरक बंध का कारण बनता है।

यदि हम बालक को नैतिक-आध्यात्मिक शिक्षा के साथ जीविकोपार्जन के लिये पुरुषार्थ करना सिखा पायेंगे तो एक दिन वह त्याग, तपस्या और संयममय जीवन जीने के लिये साधना करना भी सीख सकेगा और सच्चे अर्थों में महावीर के पथ का अनुगामी बनेगा।

-6-ए, महावीर कॉलोनी, अशोक नगर, मैन रोड़, उदयपुर-313001 (राज.)

सूचना

जिनवाणी के जिन आजीवन-सदस्यों का स्वर्गगमन हो जाता है, उनके नाम पर जिनवाणी भेजना कार्यालय द्वारा बन्द कर दिया जाता है। अतः जिनवाणी की पुनः सदस्यता किसी अन्य नाम से ग्रहण की जा सकती है।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ

चलो साथियों जैन उपाश्रय

डॉ. दिलीप धींग

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित आलेख को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 जुलाई 2012 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

चलो साथियों जैन उपाश्रय,
पता चला, महाराज आए हैं।
वीर प्रभु के क्षमा-धर्म का,
संजीवन सन्देश लाए हैं।।

सोनू मोनू चिण्टू पिण्टू,
मुनिया गुड़िया भैया बहना।
पास-पड़ोसी मम्मी-पापा,
साथ सभी को लेकर जाना।
बड़ी दूर से पैदल चलकर,
ज्ञान-पोटली लाए हैं।
चलो साथियों ... ... ।।1।।

जीवों के रक्षक रखवाले,
फक्कड़ निर्भय सन्त निराले।
आज यहाँ कल वहाँ विचरते,
आओ! उनके दर्शन पा लें।
उनके संयममय जीवन के,

बड़े-बड़ों ने गुण गाए हैं।
चलो साथियों ... ... ।।2।।

दया पालिये सबको कहते।
सहज लाभ धर्म का देते।
अपरिग्रह के मूर्तिमान वे,
समभावों से संकट सहते।
उनके मंगल-वचन श्रवण कर,
जीवन के गम विसराए हैं।
चलो साथियों ... ... ।।3।।

ज्ञान-ध्यान की सतत साधना,
स्व-पर के उपकार में।
किसी तरह का भेद नहीं है,
सन्तों के दरबार में।
समता का रस देने वाले,
समता के साधक आए हैं।
चलो साथियों ... ... ।।4।।

कुछ दीवारों और मीनारों,
को कुछ जन आश्चर्य बताते।
लेकिन जैन मुनि इस जग में,
सचमुच ही आश्चर्य कहाते।
प्राप्त भोगों, सुख-सुविधाओं,
सबको पीठ दिखाए हैं।
चलो साथियों ... ... ।।5।।

सूने मन में वसन्त लाते।
इसीलिए ये सन्त कहाते।
मैत्री-प्रेम-एकता वाला,
पचरंगी झण्डा फहराते।
ठण्डे जल से भरे कलश ये,

प्यासों के नजदीक आए हैं।
चलो साथियों ..... ।।6।।

-उमराव सदन, 53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

प्रश्नः

1. 'महाराज' शब्द का इस कविता में क्या अभिप्राय है? उनकी किन-किन विशेषताओं का उल्लेख इस कविता में हुआ है?
2. कविता आपको कैसी लगी और क्यों?
3. पचरंगी झण्डे से क्या अभिप्राय है?
4. सन्तों को 'ठण्डे जल से भरे कलश' क्यों कहा गया है?
5. महाराज को फक्कड़ एवं निर्भय क्यों कहा गया है?
6. क्या आपने इस कविता को टीम के साथ गाने का अभ्यास किया है?

(मई-2012 के अंक का परिणाम अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा)

प्रभु अन्तर में रहते हैं

श्री मगनचन्द जैन

अरे कहाँ ढूँढता फिरता, प्रभु अन्तर में रहते हैं।।
नहीं मन्दिर में वे रहते, नहीं मस्जिद में वे पाते।
थानक, उपाश्रय, चर्च, गुरुद्वारे में नहीं दिखते।
भटकता क्यों फिरे भैया, प्रभु अन्तर में रहते हैं। अरे.....
नहीं जंगल बसेरा है, नहीं सरिता किनारा है।
गिरि-गुहाओं में नहीं प्रभु का ठिकाना है।
सदा ही साथ हैं तेरे, प्रभु अन्तर में रहते हैं।। अरे.....
आत्म-दर्शन अगर चाहे तो हृदय शुद्ध करले तू।
दोष-दुर्गण हटाने का प्रबल पुरुषार्थ करले तू।
ध्यान से देख मन-मन्दिर, प्रभु अन्तर में रहते हैं।। अरे.....
बुराई तज भलाई कर दान, करले तू जीवन में।
कर्म-बन्धन को क्षय करले धार ले धर्म जीवन में।
'मगन' तू भटक मत बाहर, प्रभु अन्तर में रहते हैं।। अरे.....

-से.नि.अध्यापक, फाजिलाबाद (हिण्डौन), जिला-करौली (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (27)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह पन्द्रहवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 जुलाई 2012 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-2)

(पृष्ठ 736 से 799 तक से प्रश्न)

प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-

1. मुनिराज ने ही हमें जीवन-दान दिया है। ये किसके वचन हैं?
2. कौनसी परम्परा में स्त्री-मुक्ति नहीं मानी गई है?
3. किसका नाम अमर हो गया?
4. जम्बूकुमार की सातवीं पत्नी का नाम क्या है?
5. जन्म के थोड़ी देर पश्चात् किसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया?
6. जम्बू स्वामी ने किस समय दीक्षा ग्रहण की?
7. धारिणी कौन-से राजा की पौत्रवधू थी?
8. शकडाल की कौनसी पुत्री एक बार सुनकर तत्क्षण यथावत् सुना देती थी?
9. "माँ तो स्नेह और ममता की प्रतिमूर्ति है", ये किसके विचार हैं?
10. प्रभु महावीर ने चतुर्विध धर्म संघ की स्थापना की उस समय कौनसी स्थिति बड़ी

विचित्र थी?

11. मेरा तप-संयम मुझसे छीनना चाहते हो? ये वचन किसके हैं?
12. किसकी बहिन ने प्रव्रजित होने की इच्छा प्रकट की?
13. तीर्थंकर क्या नहीं होते?
14. "कल यहाँ प्रचुर मात्रा में अन्न उपलब्ध हो जायेगा।" ये वचन किसके हैं?
15. पोइणी का संस्कृत रूपान्तर क्या है?

'हाँ' या 'ना' में उत्तर दीजिये:-

16. सं. 1 से लेकर 1000 वर्ष तक का जैन धर्म का इतिहास दिया गया है।
17. सौ-सौ कोस से मुनिसमाज एकत्रित हुए।
18. वर्णीजी ने सैकड़ों ग्रन्थों के साथ-साथ हरिवंश पुराण का भी आलोड़न किया है।
19. लोहार्य से लेकर जिनसेन की अवधि में 40 आचार्य हुए।
20. डॉ. हीरालाल जी ने किस आधार पर यह नहीं लिखा है।
21. कुन्दकुन्द के बीच में हुए जितने आचार्यों के नाम लेख में दिये गये हैं।
22. ऐसी दशा में सूत्र में इस कथन की क्या आवश्यकता थी?
23. अमुक व्यक्ति को प्रतिबोध देने के लिए शास्त्र की रचना की गई।
24. दो शिष्य रूपी अंकुरों से अंकुरित वटवृक्ष के समान फल देने के लिए प्रकट हुए।
25. यहाँ क्रमशः दश, नव और आठ अंगों के धारक कहा है।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (25) का परिणाम

जिनवाणी अप्रेल, 2012 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 208 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- अक्षीता जैन-बूंदी (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- रीना कोठारी-बालोद

तृतीय पुरस्कार- नीलम जैन-अजमेर (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. हंसराज जैन-जयपुर (राज.)
2. हेमा जैन-जयपुर (राज.)
3. मुन्नालाल भण्डारी-जोधपुर (राज.)
4. संगीता नेनसुख जी-जलगांव (राज.)
5. सुनीता नवलखा-कोटा (राज.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता-Abhilasha Hirawat-Mumbai, Anil Kumar Jain-Kota, Anita Athulji

Munohat-Ichalkaranji, Anu Jain-Hoshiarpur, Archana Kothari-Balod, Aruna Jain-Hoshiarpur, Ashok Kumar Jain-Chennai, Babulal Kataria-Panjagutta, Balwant Singh Choradia-Jhalara Patan, Basanti Bhatewara-Dhulia, Bhagwanti Tater-Jodhpur, Bhagyawan Raj-Pali, Bhamika M.S-jalgaon, Bharti Sunil Surpure-Ichalkaranji, Bhikamchand Kothari-Chennai, Chandan mal gugaliya-Pali, Chandni Jain-Indore, Chandra Munot-Mumbai, Chandrakala mehta-Bangalore, Chandrakala mehta-Jaipur, Chanrakala Dilipji Ranka-Jalgaon, Chetana .B. Bothra-Mumbai, Dal Chand Jain-Jaipur, Darshika Tatia-Jalgaon, Deepmala Singhvi-Pali, Dharam Chandra Dhammani-Ahmedabad, Dharmesh Punamia-Pali, Dharmi Chand *Choubhary Jain-Bhilwara, Divya Daga-Jaipur, Ghewarchand Chhajed-Bellary, Hema kishore* Bagmar-Secundrabad, Hemalatha Jain-Kota, Hemalatha Jain-Beawar, Hemalatha kerawad-Bhilwara, Hemraj Surana-Jaipur, Indu Kamleshji Jain-Malad, Jagadishprasad Jain-Kota, Jaidevi Vegani-Jaipur, Jayamala Kankariya-Pali, Joharimal-Jodhpur, Jyothi Ashokji Gandhi-Ichalkaranji, Jyothi Bhansal-Bangalore, Kalpana Dhakad-Gurgaon, Kamal Ankur Kothari-Baroda, Kamal Choradia-Jaipur, Kamala Singhvi-Jaipur, Kamala surana-Jodhpur, Kamalesh Gelada-Ajmer, Kanak Jain-Delhi, Kanchan Parasmalji Lodha-Nasik, Kanhaiyalal Jain-Bhilwara, Kanwalraj Mehta-Jodhpur, Kapil Kothari-Jaipur, Khimji .R. Shah-Mumbai, Kiran Jain-Hoshiarpur, Kiran Kothari-Jaipur, Kiran Pramod-Dewas (M.P), Kuntal Kumari Jain-Jaipur, Kusum Bafna-Chennai, Kusum Pareshji ponmia-Ichalkaranji, Kusum Singhvi-Jodhpur, Lalita Ajith Bafna-Nagpur, Leena Mahendra Jain-Chiplan, Madanlal Bagmar Jain-Gangaon, Madanlal Sancheti-Hyderabad, Madhu Lunawat-Varanasi, Madhubala Osthwal-Nasik, Madhubala Pramodkumarji-Ichalkaranji, Madhuji pipda-Bhilwada, Mamju Kanstiya-Kolkata, Mamta Jain-Madhopur, Manila Parakh-Jaipur, Manju Dilip Jain-Mumbai, Manju Gadiya-Hyderabad, Manjula Bhandari-Beawar, Manjula Jain-Mumbai, Maya Alijar-Secundrabad, Meena Choradia-Chennai, Meena Vijay Bora-Malad, Meenabai .A. Nahar-Ichalkaranji, Meenu Jain-Jaipur, Milap Lunawat-Ahmedabad, Mohan Lodha-Ajmer, Monali Mishrilalji Pipada-Ichalkaranji, Narendra Gopichand Bamb-Mumbai, Nathmal Kothari-Balod, Navrat Mal Changairiya-Ajmer, Neelam Chopda-Jaipur, Neelam Jain-Gurgaon, Neetu Golechha-Hyderabad, Nen Chand Bafna-Jodhpur, Nilima Yogesh Chopda-Ichalkaranji, Nirmala Hamirmal Surana-Bikaner, Nirmala Kumari-Jaipur, Nirmala Lunawat-Pune, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gulchha-Kolhapur, Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Padam Chand Gadiya-Beawar, Padam Chand Munot-Jaipur, Padamchand Agarwal-Jaipur, Parasmal Daulatraj-Patodi (Barmer), Patram Jain-Film khera mandi, Pinki Jain-Jaipur, Pista Gulechha-Jaipur, Pooja Nitinji Bora-Ichalkaranji, Poonam Jain-Farid -kot, Prabha Gulechha-Bangalore, Prabha Kishan Katharia-Mumbai, Prakash Bai Premchandji-Bhandara, Prakash Chand Jain-Hyderabad, Pramila Mehta-Ajmer, Prasanna, Prasanna Kotari-Jodhpur, Prem Jain-Alwer, Premalata Lodha-Jaipur, Priti Gugalia-Bhilwara, Priya Mukesh Chopra-Ichalkaranji, Pushpa Jain-Pali, Pushpa Jain-Jaipur, Pushpa Navalkha-Jaipur, R. Chandra Batra-Chennai, R.M.Surana-Solapur, R.T.Jain-Jalgaon, Raj Kumarji Jain-Delhi, Rajashree Dham Mowat-Varanasi, Rajesh Jain-Madhopur, Ranulal .M. Kochar-Nasik, Ratan chand mehta-Jodhpur, Ratan karnawat-Jaipur, Reema jain-Punjab, Rekha Kothari-Ajmer, Rinku Nandlalji Dhadiwal-jalgaon, Rishabh Jain-Bundi, Rohit Oswal-Jaipur, Sadhana Dilipji Gugale-Kolhapur, Sangeeta Chhajed-Chalisgaon, Sangeetha Baid-Chennai, Sarita Manoj Babu-Ichalkaranji, Saroj Runwal-Dhulia, Savitri Jain-Baran, Seema Dhing-Udaipur, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Shanta Bafna-Nasik, Shanta Chamanji Pitaliya-Amaravati, Shashi Kataria-Bhilwara, Shashikala .P. Gemawat-Nasik, Shashikala Sukhleena-Halsur, Shilpa Surana-Ajmer, Shobha .N.Gugale-Ichalkaranji, Shobha Kothari-Dhulia, Shobha Nahar-Secundrabad, Shobha Rajendra Jain-Jalgaon, Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita Nileshji-Ichalkaranji, Snehalatha Jain-Ratlam, Sonal Rajendra Alizad-Nasik, Subhash Mohanlalji-Thane, Sudha Bhansali-Jodhpur, Sugan Chand Chajed-Jodhpur, Sujini Bhandari-Gurgaon, Sumithra Nandawat-Bangalore, Sunita Doshi-Beawar, Sunita Oswal-Jaipur, Sunitha Singhvi-Chennai, Surajmal suvalal jain-jalgaon, Surbhi Porwal-Madhopur, Surekha Nahar-

Jaipur, Suresh Chand Jain-Karauli, Suresh Chand Jain-Alwer, Suresh Kumar Saand-Pali, Sushila .S. Surana-Nasik, Sushila Begani-Bikaner, Sushila Bhandari-Bangalore, Sushila Tater-Bhilwara, Sushma Dhariwal-Jaipur, Susila Lanka-Jalgaon, Suvarna Nitinji Bora-Ichalkaranji, Tara Bafna-Chennai, Trupti Bora-Ichalkaranji, Ugam Mulchandji Dosi-Secundrabad, Ugama Devi-Bangalore, Urmila Kankariya-Chennai, Usha .G. Surana-Jaipur, Usha Lunawat-Ajmer, Vandana Porwal-Madhopur, Vandana Punamia-Pali, Varsha Dosi-Merta City, Veena Tarunji-Madya Pradesh, Vidya Sanghvi-Badnawar, Vijayadevi-Gajendragad, Vikas Bamb-Mumbai, Vimal Ranulal kochhar- Nasik, Vimla Bohra-Jaipur, Vinod Parlecha-Jodhpur, Yugal Nemichand Ranka-Gujarat.

24.5 एवं उससे कम अंक प्राप्तकर्ता– Basanti Madanlal Sanklecha-Nardana, Pramila Mehta-Jaipur, Sunita Tater-Jodhpur, Shiromani Jain-Shajapur.

अभिमत

फरवरी, 2012 की 'जिनवाणी' में प्रकाशित सम्पादकीय आलेख ''भटकती युवा पीढ़ी'' पढ़ कर लगा कि आज जिस कदर समाज में युवतियों के जैनेतर युवकों के साथ भागने के मामले सामने आ रहे हैं, यह स्थिति समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए बेहद चिंताजनक है। ''लिव इन रिलेशनशिप'' जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ पारम्परिक विवाह व्यवस्था को चुनौती देती नज़र आती हैं। माता-पिता, गुरुजनों और सन्त-मुनियों को ऐसे गम्भीर मसले को सुलझाने में महत्त्वपूर्ण भागीदारी निभानी होगी। अति-महत्वपूर्ण विषय पर बेहद शानदार आलेख हेतु हार्दिक आभार। पद्यात्मक रचना ''मैं हूँ फूलों का व्यापारी'' बहुत अच्छी लगी। लेखक बन्धुवर डॉ. दिलीप जी धींग को तहेदिल से धन्यवाद।

-श्री सुनित कुमार जैन, जैन विहार कॉलोनी, अलीगढ़, जिला-टोंक-304023 (राज.)

(2)

माह नवम्बर 2011 की जिनवाणी में श्रीमती बीना जैन का नारी स्तम्भ में लेख ''संवाद-हीनता : रिश्तों के लिए घातक'' पढ़कर बहुत अच्छा लगा। लेखिका ने बहुत ही सारगर्भित व विचारणीय बिंदुओं पर समाज एवं परिवार का ध्यान आकर्षित किया है।

लेख में आधुनिक जीवन का बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रण किया गया है। आज अनियन्त्रित प्रतिस्पर्धा व महत्त्वाकांक्षाओं के कारण परिवार टूट रहे हैं, आपसी प्रेम और सहभागिता समाप्त हो रही है। इसके परिणाम स्वरूप मानसिक असंतुलन एवं भावनात्मक असुरक्षा बढ़ रही है। परिवार में एक दूसरे के प्रति संवेदनशीलता समाप्त हो रही है एवं संबंध-आर्थिक निर्भरता तक सीमित होते जा रहे हैं। परिवार एक बोझ सा बनता जा रहा है। श्रीमती बीना जैन द्वारा जो उपाय बताये गये हैं वे भी सराहनीय हैं। आज की ज्वलंत समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए उनको हार्दिक बधाई एवं साधुवाद।

-श्रीमती आशा गलुन्डिया, 53, गोपालबाड़ी, लेन सं.2, जयपुर (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

मान व्याख्यान-माला- प्रवचनकार- उपाध्यायप्रवर मानचन्द्र जी म.सा., ***आशुलेखन एवं सम्पादन***- श्री नौरतनमल मेहता, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः 0141-2575997, 2571163,फैक्स-0141-2570753, ***पृष्ठ***-8+268, ***मूल्य***-25 रुपये, ***सन्***- 2012

अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के शिष्य एवं उपाध्यायपद से सुशोभित आत्मार्थी सन्त श्री मानचन्द्र महाराज के 35 प्रवचनों से युक्त 'मान व्याख्यान-माला' का प्रकाशन-लोकार्पण उनकी दीक्षा-अर्द्धशती के शुभारम्भ वैशाख शुक्ला 13 वि.सं. 2069 दिनांक 4 मई, 2012 को हुआ। रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सहयोगी उपाध्यायप्रवर आगमनिष्ठ, आचारनिष्ठ एवं विवेकशील साधक हैं। सेवा, साधना एवं स्वाध्याय के बल से आपके प्रवचन सहज स्फूर्त होते हैं। पुस्तक के प्रारम्भिक 9 व्याख्यान 2 अक्टूबर 2003 से 10 अक्टूबर 2003 तक नव पद आराधना पर प्रदत्त हैं, जिनका प्रकाशन जिनवाणी के अंकों में पूर्व में नहीं हुआ है, किन्तु शेष 26 प्रवचन जिनवाणी के विभिन्न अंकों में प्रकाशित हैं। प्रवचन नवपद आराधना के अतिरिक्त व्रत-ग्रहण, अनासक्ति, जीवन में धर्म, ब्रह्मचर्य, सामायिक, स्वाध्याय, तत्त्वविचार, व्रत-पालन, गुरु, कषाय-विजय, संघ-विकास, धर्म-श्रद्धा, संस्कार-संकट, पंचसमवाय, अप्रमाद, निभना-निभाना, दान आदि विभिन्न विषयों पर प्रकाश डालते हैं। प्रवचनों में सहज प्रवाह है तथा पाठक को सरलता से ग्राह्य हैं। जीवन में धर्म के महत्त्व को स्थापित करने के साथ ये प्रवचन व्यक्ति की दृष्टि को भी परिमार्जित करते हैं। पृष्ठ 108 पर उपाध्यायप्रवर चमत्कार के सम्बन्ध में कहते हैं- ''आज जो कुछ महिमा है, जो कुछ चमत्कार की बात है कि अमुक मुनि जी बड़े चमत्कारी हैं, बड़े सिद्ध हैं। वह मेरी समझ के अनुसार यह है कि जिन्होंने जीवन में संयम का पालन किया है, यह उसी की शक्ति है। संत इसमें कुछ नहीं करते हैं, बल्कि चमत्कार तो अपने आप ही होते हैं। संतों के पास जाने वाला व्यक्ति उनके पास जाकर यदि कोई इच्छा करता है तो संत उसे कुछ देते नहीं हैं, लेकिन उसे सब कुछ मिल जाता है।''

उपाध्यायप्रवर सच्चे सन्त के प्रतीक हैं। उनके प्रवचनों में सरलता के साथ गहराई भी है, संयम-पालन पर बल है तो चित्त को निर्मल बनाने पर भी ज़ोर है। वे विचार एवं

आचार दोनों की निर्मलता का संगम कराने में विश्वास रखते हैं।

गुरु-हस्ती-गुरुहीरा के अनमोल भजन- संकलनकर्त्ता- नौरतनमल मेहता, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः 0141-2575997, 2571163,फैक्स-0141-2570753, ई-मेल- sgpmandal@yahoo.in, ***पृष्ठ***- 16+112, ***मूल्य***-20 रुपये, ***सन्***- 2012

अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा रचित भजन अत्यन्त लोकप्रिय हैं। उनके भजन पूर्व में 'गजेन्द्र-पद-मुक्तावली' के नाम से वर्षों पूर्व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित हुए थे। उनमें से कई भजन-पद 'नमोपुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ में भी प्रकाशित हुए। फिर भी उनके अनेक भजन-पद अप्रकाशित रह गए थे। उन सबको सम्मिलित करके 102 भजन प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित हैं। पाठकों एवं भजन-रसिकों को इसमें आचार्य हस्ती के कुछ भजन सर्वथा नवीन प्रतीत होंगे, क्योंकि उनका पहले प्रकाशन नहीं हो पाया था। इन भजनों में 17 देव-स्तुति से सम्बद्ध हैं, 23 गुरु-भक्ति से, 18 आत्म-जागृति से सम्बद्ध होने के साथ 44 सन्देश-उपदेश परक हैं।

इसी पुस्तक में आचार्य हस्ती के पट्टधर आगमज्ञ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा रचित 25 भजन भी संकलित हैं, जिनमें से कतिपय पहले कभी प्रकाश में नहीं आए। इनमें अधिकतर भजन गुरुभक्ति से सम्बद्ध हैं। कुछ भजन आचार्य शोभाचन्द्र जी, माणकमुनि जी, सागरमुनि जी पर रचित हैं तथा अधिकांश भजन गुरुदेव आचार्य हस्ती की भक्ति में समर्पित हैं। सत्संग, पंचपरमेष्ठी आदि विषय भी आपकी रचनाओं की परिधि में आते हैं। आचार्य हीराचन्द्र जी द्वारा अपने पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती की भक्ति में जो स्तुति रचित है, वह निश्चित ही मन मोह लेती है-

जो रवि उदय से अस्त तक

(तर्जः जो भगवती त्रिशला तनय.....।)

जो रवि उदय से अस्त तक, विश्राम कुछ करते नहीं।
स्वाध्याय, चिंतन-मनन-पाठन में, कभी थकते नहीं।।1।।
ले काम कोई हाथ में, पीछे कदम करते नहीं।
व्रत मार्ग की जो आपदाओं, से कभी डरते नहीं।।2।।
रहते अटल निज धारणा से, जो कभी टलते नहीं।
अप्रिय प्रसंगों पर कभी जो, मन से भी जलते नहीं।।3।।
जो शान्त चित्त उदार हैं, निर्मल हृदय अभिराम हैं।

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् 2069, ईस्वी सन् 2012)

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा वि.सं. 2069 सन् 2012 हेतु साधु मर्यादानुसार घोषित चातुर्मासों का विवरण इस प्रकार है:-

(1) महावीर नगर-जयपुर (राज.)

- 卐 परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.
- 卐 महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.
- 卐 सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.
- 卐 तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री सुभाषमुनि जी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा. ठाणा 11

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सेन्ट्रल बैंक की गली, महावीर नगर, टोंक रोड, जयपुर-**302018**, फोन नं. **0141-3101991**

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मोहनलाल जी मुथा-संघाध्यक्ष, फोन नं. 0141-2604478, 9414054971
2. श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-संयोजक, चातुर्मास-व्यवस्था समिति, फोन नं. 0141-2620809, 9828163380
3. श्री अशोक कुमार जी सेठ, मो. 9314625596
4. श्री नरपतचन्द जी सिंघवी, फोन नं. 0141-2553416, 9829793416

पत्राचार का पता- (1) श्री विमलचन्द जी डागा, 1370-ताराचन्द नायाब का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 0141-2576152, 9829011588 (2) श्री विनोद जी लोढ़ा, सह संयोजक- चातुर्मास व्यवस्था समिति, ए-8, महावीर नगर, टोंक रोड, जयपुर-302018 (राज.), मो. 9828116666

आवागमन के साधन- जयपुर राजस्थान की राजधानी है तथा भारत के प्रमुख शहरों से रेल, बस

एवं हवाई सेवा से जुड़ा हुआ है। सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर मुख्य रेलवे स्टेशन से 9 कि.मी., गांधीनगर से 2 कि.मी., दुर्गापुरा से 1 कि.मी., केन्द्रीय बस स्टेण्ड सिंधी केम्प से 8 कि.मी. तथा जयपुर एयरपोर्ट से लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(2) मेड़ता सिटी (राज.)

- 卐 परम श्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.
- 卐 मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.
- 卐 श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- वीर भवन, जयमल जैन छात्रावास, पुराने राजकीय अस्पताल के पास, मीरा मन्दिर मार्ग, पो. मेड़ता सिटी-341510, जिला-नागौर (राज.)

आवास-व्यवस्था- (1) ओसवाल पंचायत भवन, घांची भवन के पास, मेड़ता सिटी (2) सिंघवी अमृत भवन, एस.बी.आई. बैंक के पास, मेड़ता सिटी (3) श्री रघुनाथ स्मृति भवन, स्टेशन रोड, मीरा मार्ग, मेड़ता सिटी

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री हस्तीमल जी डोसी-मंत्री, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, डोसी ब्रदर्स, गांधी चौक, पो. मेड़ता सिटी-341510, जिला-नागौर (राज.), फोन नं. 01591-220181, 220772, 9413368997, 9414119152
2. श्री गौतमराज जी सुराणा, मो. 9940558888, 9460067122
3. श्री महावीर जी ओस्तवाल, मो. 9414608948

आवागमन के साधन- नागौर जिलान्तर्गत मेड़ता सिटी के लिए समीपवर्ती रेलवे स्टेशन मेड़ता रोड जंक्शन है। यहां जोधपुर, दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, जयपुर की रेलगाड़ियों का ठहराव है। मेड़ता रोड से मेड़ता सिटी के लिए रेल बस प्रायः हर गाड़ी का मिलान करवाती है। अजमेर-बीकानेर राष्ट्रीय मार्ग 89 पर मेड़ता स्थित है। जोधपुर-ब्यावर से सीधी बस सेवा उपलब्ध है। बस एवं रेलवे स्टेशन से स्थानक करीब आधा कि.मी. दूर है तथा स्थानक पहुंचने के लिए साधन उपलब्ध है।

(3) घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

- 卐 साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.
- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा.

- महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.
- महासती श्री निरंजनाजी म.सा.
- महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री कांताजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. 0291-2641445, 2636763

सम्पर्क-सूत्र -

1. श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, अध्यक्ष, फोन नं. 0291-2622327, 2570178, 9413329762
2. श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, मंत्री, ओस्तवाल ब्रदर्स, बख्तावरमल जी का बाग, चौपासनी रोड, जोधपुर-302003 (राज.), फोन नं. 0291-2626421, 9414132521

आवागमन के साधन- जोधपुर राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है जो रेल, सड़क एवं हवाई मार्ग से देशभर से जुड़ा हुआ है। घोड़ों का चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन मुख्य रेलवे स्टेशन से 1 कि.मी., राईकाबाग रेलवे स्टेशन एवं बस स्टेण्ड से 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(4) बांदनवाड़ा, जिला-अजमेर (राज.)

- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवरजी म.सा.
- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.
- महासती श्री कौशल्याजी म.सा.
- महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल-महावीर भवन, महावीर कॉलोनी, बांदनवाड़ा चौराहा, पो. बांदनवाड़ा-305621, तहसील- भिनाय, जिला-अजमेर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री हेमराज जी हिंगड़, अध्यक्ष, मो. 9261172689
2. श्री शांतिलाल जी लोढ़ा, मंत्री, पो. बांदनवाड़ा-305621, तहसील- भिनाय, जिला-अजमेर (राज.), फोन नं. 01466-272206, 9252087273

आवागमन के साधन- बांदनवाड़ा अजमेर-भीलवाड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग 79 पर स्थित है। बांदनवाड़ा अजमेर से 45 कि.मी., भीलवाड़ा से 90, ब्यावर से 45 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां से हर समय बस सेवा उपलब्ध है।

(5) सुभाषनगर-उज्जैन (म.प्र.)

- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.

- व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा.
- महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.
- महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.
- महासती श्री मंजूलताजी म.सा.
- महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री मैत्रीप्रभाजी म.सा. ठाणा 9

चातुर्मास-स्थल- श्री महावीर श्वेताम्बर स्थानकवासी न्यास, श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी भवन, 15/1, पानी की टंकी के पास, सावेर रोड, उज्जैन-450001 (म.प्र.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री अमृतलाल जी जैन 'सी.ए.', अध्यक्ष, फोन नं. 0734-2531151, 9424014151
2. श्री प्रेमचन्द जी बाफना, मंत्री, फोन नं. 0734-2515933, 9424548100
3. श्री पारसमल जी चोरडिया, पारस कला भवन, लखेरवाड़ी, बम्बाखाना, उज्जैन-450006 (म.प्र.) फोन नं. 0734-2556630, 9827046567

आवागमन के साधन- जयपुर, चेन्नई एवं रतलाम, भोपाल, मुम्बई-इन्दौर, दिल्ली-इन्दौर रेलवे लाइन पर स्थित मध्यप्रदेश का बड़ा शहर है। मध्यप्रदेश के प्रमुख शहरों से बस सेवा उपलब्ध है।

(6) अरिहन्त कॉलोनी-अजमेर (राज.)

- व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.
- महासती श्री शशिकला जी म.सा.
- महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री उषा जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- स्वाध्याय भवन, अरिहन्त कॉलोनी, पुष्कर रोड, अजमेर-305001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री माणकचन्द जी रांका, फोन नं. 0145-2600663
2. श्री नेमीचन्द जी कटारिया, 44- महावीर कॉलोनी, पुष्कर रोड, अजमेर-305001 (राज.), फोन नं. 0145-2600397, 9413109838

आवागमन के साधन- अजमेर तक नियमित बस-रेल सेवा उपलब्ध है। रेलवे स्टेशन से सिटी बस व बस स्टेण्ड से टेम्पो द्वारा पुष्कर रोड स्थित अरिहन्त कॉलोनी, स्थानक भवन पहुँचा जा सकता है। रेलवे स्टेशन एवं केन्द्रीय बस स्टेण्ड से स्थानक 4 कि.मी. दूर है।

(7) कंवलियास, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

- 卐 विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.
- 卐 महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री रक्षिताजी म.सा.
- 卐 महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, पो.कंवलियास-311001, तहसील- हुरड़ा, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री अमोलकचन्द जी सुराणा, पो. कंवलियास-311001, तहसील- हुरडा, जिला-भीलवाड़ा (राज.), फोन नं. 01483-236879, 9799281978
2. श्री पुखराज जी लोढ़ा, मो. 9261726897

आवागमन के साधन- कंवलियास अजमेर-भीलवाड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग 79 पर स्थित है। अजमेर से भीलवाड़ा जाने वाली बसों का ठहराव है।

(8) रामपुरा बाजार-कोटा (राज.)

- 卐 विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.
- 卐 महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री शारदाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री लीलाकंवरजी म.सा.
- 卐 महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रीसंघ, कोतवाली के सामने की गली, रामपुरा बाजार, कोटा-324001 (राज.), फोन नं. 0744-2382711

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री राजेन्द्रसिंह जी मेहता-अध्यक्ष, फोन नं. 0744-2380271
2. श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, मंत्री, वर्द्धमान नमकीन्स, गुमानपुरा मेन रोड, कोटा-324001 (राज.), फोन नं. 0744-2382832, 9414177139

3. श्री जगदीश जी जैन, चातुर्मास संयोजक, मो. 9460863488

आवागमन के साधन - नई दिल्ली-मुम्बई रेलवे मार्ग पर स्थित बड़ा स्टेशन, जहाँ पर सभी गाड़ियों का ठहराव है। राजस्थान के सभी प्रमुख शहरों से रेल-बस सेवा उपलब्ध है। स्थानक मुख्य रेलवे स्टेशन से 7 कि.मी. एवं नयापुरा बस स्टेण्ड से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(9) धनोप, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.
- सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा.
- महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री ऋद्धिप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, पो. धनोप-311023, तहसील- शाहपुरा, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री महावीर जी पालडेचा, अध्यक्ष, फोन नं. 01484-226048, 9602936567
2. श्री धर्मीचन्द जी पालडेचा, मंत्री, पो. धनोप-311023, तह. शाहपुरा, जिला-भीलवाड़ा (राज.), मो. 9929073780

आवागमन के साधन- धनोप विजयनगर-शाहपुरा मार्ग पर स्थित है। धनोप भीलवाड़ा से 70 कि.मी., विजयनगर से 30 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

(10) महावीर नगर-जयपुर (राज.)

- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.
- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा.
- महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा
- महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा.
- महासती श्री देवांगना जी म.सा.
- महासती श्री अंजना जी म.सा.
- महासती श्री सुभद्रा जी म.सा.

- महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री तितिक्षाश्री जी म.सा.
- महासती श्री वर्षाश्री जी म.सा.
- महासती श्री पूनमजी म.सा. ठाणा 12

चातुर्मास-स्थल- के-38, महावीर नगर, टोंक रोड, जयपुर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र एवं आवागमन के साधन- क्र.सं. 1 के अनुसार

(11) कोयम्बटुर (तमिलनाडु)

- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.
- महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.
- महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा
- महासती श्री संगीताजी म.सा
- महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा
- महासती श्री भविताश्रीजी म.सा
- महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- Sri Coimbatore Sthanakwasi Jain Sangh, 765-Opencara Street, Coimbatore-641001 (T.N.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री पन्नालाल जी लुंकड़, अध्यक्ष, फोन नं. 0422-2305683, 9442011785
2. श्री भंवरलाल जी कोठारी, मंत्री, Pukhraj & Company, 252- N.H. Road, Coimbatore-641001 (T.N.), Ph. 0422-2393081, 9443754517

आवागमन के साधन - जोधपुर, बीकानेर, चेन्नई, बैंगलोर, अहमदाबाद, दिल्ली, मुम्बई से सीधी रेल एवं कुछ स्थानों से हवाई सेवाएँ उपलब्ध हैं।

(12) तिरुवन्नामल्लै (तमिलनाडु)

- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.
- महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा
- महासती श्री भावनाजी म.सा.
- महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- Sri Sthanakwasi Jain Shrawak Sangh, 105-Iyyankula Agraharam Street, Tiruvannamalai (T.N.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मोहनलाल जी बोहरा, Sumangali Jewellers, 406/109, Car Street, Tiruvannamalai (T.N.), Ph. 04175-222284, 222852, 9443352884
2. श्री कमलचन्द जी डागा, मंत्री, मो. 9443322263
3. श्री विजयकुमार जी पटवा, मो. 9443244805

आवागमन के साधन - तिरुवन्नामल्लै चेन्नई महानगर से 185 कि.मी., वेल्लूर से 85 कि.मी. और विल्लीपुरम से 60 कि.मी. पर स्थित है। चेन्नई से तिरुवन्नामल्लै के लिए बस नं. 122 हर पांच मिनट में निकलती है। वेलुर व विल्लीपुरम् से भी हर दस मिनट में बस आती है।

(13) लासूर स्टेशन, जिला-औरंगाबाद (महा.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.
- 卐 महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, गणपति मन्दिर रोड, लासूर स्टेशन-423702 (जिला-औरंगाबाद)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मदनलाल जी समदड़िया, संघपति, मो. 9422213175
2. श्री मदनलाल जी रूपचन्द जी लोढ़ा, मो. 9422707131
3. श्री प्रकाशचन्द जी माणकचन्द जी मुथा, मो. 9422701425, 9404087777
4. श्री सुरेशचन्द जी इन्दरचन्द जी मुणोत, मो. 9422208424
5. श्री प्रीतेश जी महावीर जी छाजेड़, महावीर ज्वैलर्स, मेन रोड, पो. लासूर स्टेशन-423702, जिला-औरंगाबाद (महा.), मो. 9552202020

आवागमन के साधन- मुम्बई-औरंगाबाद रेलवे लाइन पर स्थित है। पूना से आने वाले वाया औरंगाबाद होकर पधारें। औरंगाबाद-वैजापुर, कन्नड़ से हर समय बस सेवा उपलब्ध है। बस स्टेण्ड से एवं रेलवे स्टेशन से स्थानक आधा कि.मी. दूरी पर स्थित है।

(14) हिण्डौन सिटी (राज.)

- 卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.
- 卐 महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, नई मण्डी के पीछे, जैन कॉलोनी, हिण्डौन सिटी-322230, जिला-करौली (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री घासीलाल जी जैन, जैन कॉलोनी, नई मण्डी के पीछे, पो. हिण्डौन सिटी-322230, जिला-करौली (राज.), फोन नं. 07469-209033, 8764479362
2. श्री अशोक कुमार जी जैन, मो. 9413181915
3. श्री राजेश जी जैन, फोन नं. 07469-230832, 9462112924, 9829083134

आवागमन के साधन- पश्चिमी रेलवे लाइन दिल्ली-मुम्बई मार्ग पर हिण्डौन सिटी रेलवे स्टेशन है। जयपुर, भरतपुर, गंगापुर, आगरा, अलवर आदि स्थानों से घंटे-घंटे के अन्तराल पर बसें उपलब्ध होती हैं। रेलवे स्टेशन एवं बस स्टेण्ड से स्थानक करीब 2 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

(15) अलीगढ़-रामपुरा (राज.)

卐 सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा.

卐 महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, मेन बाजार, पो. अलीगढ़-रामपुरा-304023, जिला-टोंक (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री गोपाललाल जी वैद्य, मेन बाजार, पो. अलीगढ़-रामपुरा-304023, जिला-टोंक (राज.), मो. 9829501262
2. श्री घनश्याम जी जैन, अध्यक्ष, फोन नं. 01436-266388, 9414377997
3. श्री लड्डूलाल जी जैन, मंत्री, मो. 9413531433

आवागमन के साधन- टोंक-सवाईमाधोपुर बस मार्ग पर स्थित है। नजदीक का रेलवे स्टेशन सवाईमाधोपुर एवं चौथ का बरवाड़ा है। सवाईमाधोपुर से 30 कि.मी. एवं चौथ का बरवाड़ा से 15 कि.मी. दूरी पर स्थित है।

(16) विज्ञाननगर-कोटा (राज.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.

卐 महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास स्थल- जैन स्वाध्याय संस्था, सेक्टर-1, महिला पार्क के पास, विज्ञाननगर, कोटा-324001 (राज.), फोन नं. 0744-2410400

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री बंशीलाल जी मुणोत,अध्यक्ष, 357-ए, तलवण्डी, कोटा-324001 (राज.) मो. 98286-96223, 0744-2426037
2. श्री रामस्वरूप जी जैन, मंत्री, फोन नं. 0744-2407752, 9269163653,
3. श्री जगजीवनजी मुणोत, फोन नं. 0744-2435720, 9799390720

आवागमन के साधन- क्रम संख्या 8 के अनुसार। विज्ञान नगर का स्थानक मुख्य रेलवे स्टेशन से 9 कि.मी. एवं नयापुरा बस स्टेण्ड से 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

आचार्य हस्ती-स्मृति-दिवस

जिनकी महिमा को गाता संसार है

आचार्य श्री विजयराज जी म.सा.

(तर्ज:- ओ फिरकी वाली.....)

हस्ती गणिवर प्यारे, हैं जैन सितारे, जो पूरे तारणहार हैं।
जिनकी महिमा को गाता संसार है।। टेर।।

ज्ञानी ध्यानी निरभिमानी, संयम में जो वीर थे।
महाव्रतधारी-2, गुण भंडारी, वाणी जिनकी प्यारी।
उजियारे, जो भव्य जनों को तारे, लगाते बेड़ा पार हैं।।1।।

शांत प्रचेता, विद्वद् जन से पूजित जिनका काम था।
निर्लोभी जो नहीं थे रागी, वैराग गुण धाम था।
जिनका पावन-2, था वो जीवन, शुद्ध बनता तन मन।
आत्मज्ञानी, सुनाते जिनवाणी, गुणों का नहीं पार है।। 2।।

माँ रूपा के राज दुलारे, पिता केवल शान थे।
छोटी वय में संयम धारा, बहुत बड़े अरमान थे।
जिनशासन की-2, ज्योति जगाई, किस्मत बड़ी सवाई।
गणि गजेन्द्र, झुके नर इन्द्र, दृष्टि में अमृत धार है।। 3।।

जीवन की संध्या में आए, ममता से मुँह मोड़ा था।
कर संथारा शुद्ध भावों से, समता में मन जोड़ा था।
दर्शन करके-2, वन्दन करके, पुलकित जन-जन सारा।
कहता ऐसा, देखा न नज़ारा, 'विजय' पथ द्वार है।। 4।।

(चामराज पेट जैन स्थानक, बेंगलुरु में वैशाख शुक्ला अष्टमी, 29 अप्रेल, 2012 को आचार्य श्री हस्ती के 21वें पुण्य स्मृति-दिवस पर सुनाई गई गीतिका। संकलन: श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल-बेंगलुरु।)

समाचार-विविधा

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ : एक नज़र में

(01 जून, 2012)

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 7	: किशनगढ़ से विहार कर दूदू पधारे। दूदू कुछ दिन विराज कर यहां से फुलेरा, जोबनेर होते हुए झोटवाड़ा, जयपुर पधारे हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की सम्भावना है।
परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 5	: नागौर से विहार कर कुचेरा, रूण, खजवाणा मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए हरसोलाव पधारे हैं। कल गोटन पधारने की संभावना है।
तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. आदि ठााणा 4	: मदनगंज-किशनगढ़ से दूदू आदि को फरसते हुए भगतवाटिका सिविल लाइन्स पधारे हैं।
साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 7	: सामायिक स्वाध्याय भवन, पावटा विराज रहे हैं। जोधपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: आदर्श नगर, अजमेर विराज रहे हैं। अग्र विहार बांदनवाड़ा की ओर संभावित है।
व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9	: इन्दौर से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए पंच पिपलई पधारे हैं। उज्जैन की ओर अग्र विहार सम्भावित है।
विदुषी महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4	: मदनगंज से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए सर्वेश्वर नगर, अजमेर पधारे हैं। अजमेर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।
विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5	: मदनगंज से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए जैतपुरा की ढाणी पधारे हैं। अग्र विहार कंवलियास की ओर संभावित

हैं।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 : देवली से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए दादावाड़ी-कोटा पधारे हैं। कोटा के उपनगरों को फरसने की संभावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 : मदनगंज से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए विजयनगर पधारे हैं। अग्र विहार धनोप की ओर संभावित है।

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 : मदनगंज से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए श्यामनगर-जयपुर पधारे हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।

सेवाभावी महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 9 : मदनगंज से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए झोटवाड़ा-जयपुर पधारे हैं। जयपुर के उपनगरों को फरसने की संभावना है।

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 : सेलम से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए इरोड पधारे हैं। अग्र विहार कोयम्बटुर की ओर संभावित है।

व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 4 : चिंगलपेठ से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए विल्लीपुरम् पधारे हैं। अग्र विहार तिरुवन्नामल्लै की ओर संभावित है।

व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 : जलगांव से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए चालीसगांव पधारे हैं। अग्र विहार लासूर स्टेशन की ओर संभावित है।

महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 : पहरसर से विहार कर रायपुर पधारे हैं। अग्र विहार हिण्डौन सिटी की ओर संभावित है

महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 : मदनगंज से विहार कर श्यामनगर जयपुर पधारे हैं। अग्र विहार अलीगढ़-रामपुरा की ओर संभावित है।

व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3 : मदनगंज से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रों को फरसते हुए देवली पधारे हैं। अग्र विहार कोटा की ओर संभावित है।

आचार्यप्रवर का किशनगढ़ से दूदू होते हुए जयपुर पदार्पण

आचार्यप्रवर परम पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा अजमेर में महावीर जयंती एवं किशनगढ़ में अक्षय तृतीया पर्व पर धर्म-ध्यान एवं संस्कारों का शंखनाद करते हुए 14 मई 2012 को दूदू पधारे। यहाँ दूदू वासियों ने श्रद्धा-भक्ति एवं संगठन के साथ प्रार्थना-प्रवचन, प्रतिक्रमण, संवर-सामायिक, उपवास, एकासन तप के माध्यम से धर्म-ध्यान में अच्छा पुरुषार्थ किया। श्री धर्मचन्द जी मेहता ने सपत्नीक शीलव्रत अंगीकार किया। आचार्यप्रवर एवं श्रद्धेय महेन्द्रमुनि जी म.सा. की प्रेरणा से यहाँ युवकों में भी अच्छी रुचि देखी गई। आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में 17 मई को फरमाया- ''जीवन के हर क्षण में धर्म का आचरण सरलता से किया जा सकता है। पाप छोड़ना ही धर्म कहलाता है। जानबूझकर किसी भी निर्दोष प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए। पूर्णतः झूठ बोलने से किसी का जीवन आज तक चला नहीं और न ही चलेगा। झूठ नहीं बोलने वाले का व्यवसाय भी अच्छा चलता है। यहाँ श्रावक-श्राविकाओं में श्रद्धा-भक्ति है, चातुर्मास की विनति करते हैं, किन्तु स्थानक में आकर कोई सामायिक नहीं करता। प्रतिक्रमण किसी को नहीं आता, फिर विनति किस आधार पर करते हो? चातुर्मास की विनती के साथ भूमिका भी होनी चाहिए। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि कम से कम 3 भाई प्रतिक्रमण सीखने वाले हों, इस प्रेरणा से वहाँ 6 युवकों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने का नियम लिया। कुछ भाइयों ने नियमित रूप से स्थानक भवन में आकर सामायिक करने का नियम लिया तथा बहिनों ने माह में चार दिन धर्म स्थानक में आकर सामायिक-साधना का संकल्प लिया। 20 मई को प्रातः जब आचार्यप्रवर का विहार हुआ तो दूदू के सभी भाई-बहिन पैदल चलने के साथ जयघोष का उद्घोष कर रहे थे। वहाँ से पूज्य प्रवर विहार कर बिंजोलाव पधारे। अजैन गांव में भी अच्छी श्रद्धा-भक्ति देखने को मिली। यहाँ जयपुर का प्रतापनगर संघ बस लेकर श्रीचरणों में उपस्थित हुआ तथा फरसने हेतु विनति प्रस्तुत की। इसके अतिरिक्त जयपुर, जोधपुर, जोबनेर, अजमेर, विजयनगर, पनरूटी-चेन्नई, बैंगलोर के भाई-बहिन भी अपने आराध्य के दर्शनार्थ पधारे तथा जीवन में आगे बढ़ने का मार्गदर्शन लिया। 21 मई को नरैना पदार्पण हुआ। श्री उमरावसिंह जी नाहर एवं श्री प्रेमचन्द जी नाहर ने आजीवन शीलव्रत के खंद लिए। नाहर एवं मेहता परिवार की सेवाएं सराहनीय रही। 22 मई को फुलेरा पधारे। दिगम्बर समाज के भाइयों ने सेवा-भक्ति का लाभ लिया। यहाँ दिगम्बर समाज के परिवार अच्छी संख्या में हैं। 23 मई को सुरसिंहपुरा होते हुए 24 मई को जोबनेर पधारना हुआ। लगभग 50 वर्ष पश्चात् इस क्षेत्र में आचार्यप्रवर का पधारना

हुआ है। जोबनेर वालों की भावभरी विनति के कारण ही पूज्यश्री 25 किलोमीटर का अधिक विहार कर उनकी भावना को साकार करने जोबनेर पधारे। यहाँ सिंघी परिवार के 7 घर स्थानकवासी हैं तथा बरडिया परिवार के 7 घर तेरापंथी हैं। सभी 14 परिवारों में अच्छा सौहार्दमय वातावरण है। जोबनेर वालों की भक्ति की शक्ति से पूज्य गुरुदेव यहाँ 27 मई तक विराजे। 27 मई को जयपुर से विभिन्न क्षेत्रों के शिविरार्थी बालक सामूहिक रूप से पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में पधारे तथा प्रवचन श्रवणकर आशीर्वचन प्राप्त किए। जोबनेर में श्री अशोक जी सिंघी एवं श्री सुरेन्द्र जी सिंघी की सेवाभक्ति उल्लेखनीय रही। जोबनेर संघ में सराहनीय उत्साह है तथा स्वधर्मी वात्सल्य की भावना प्रमोदजन्य है। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक करना प्रारम्भ किया है। यहाँ से खेजड़ावास, कालवाड़ होते हुए 1 जून को झोटवाड़ा पदार्पण हुआ है। यहाँ से 2 जून को लाल भवन पधारने की सम्भावना है।

उपाध्यायप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती का शुभारम्भ गुणानुवाद एवं तप-त्याग के साथ आचार्यप्रवर की सन्निधि में किशनगढ़ शहर में गुणानुवाद सभा

रत्नसंघ के प्रथम उपाध्याय, शांत-दांत-गंभीर, आत्मार्थी संत श्री मानचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशती के शुभारम्भ पर वैशाख शुक्ला 13 दिनाँक 4 मई, 2012 को देश के विभिन्न स्थानों पर गुणानुवाद एवं तप-त्याग के आयोजन हुए। किशनगढ़ शहर में रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित गुणानुवाद सभा में अनेक संतों एवं महासतियों ने यशस्वी उपाध्यायप्रवर के व्यक्तित्व एवं जीवन-दर्शन पर भावपूर्ण विचार व्यक्त किए।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि उपाध्यायप्रवर आचरण के धनी हैं। एक-एक व्रत के आचरण का महत्त्व होता है। महाराज मेघरथ शरीर का अंग काट कर जीवदया करते हुए तीर्थंकर शांतिनाथ बने। सत्यवादी हरिश्चन्द्र का नाम सब जानते हैं। एक शील का आचरण करते हुए मीरा ने ज़हर को अमृत बना लिया। सुभद्रा ने छेद वाली छलनी से शील के बल पर कुएँ से पानी निकाला। जब एक-एक चारित्रिक नियम का ऐसा प्रभाव है तो पाँचों महाव्रतों का पालन करने वाला क्या नहीं कर सकता? आज उपाध्यायप्रवर की 50वीं चारित्र-साधना का प्रसंग है। संत-जीवन में क्षेत्र एवं काल की छूट नहीं होती। त्रिकरण-त्रियोग से महाव्रतों का पालन किया जाता है। एक माह का चारित्र पालने वाला यावत् तेरह महीने में अनुत्तर विमान के सुखों का लंघन कर लेता है। चारित्र के पालन का यही चमत्कार है। चारित्र का पालन तो करे ही साथ में गुरु

के निकट बैठने वाला हो, गुरु के भावों को संकेतमात्र से समझने वाला हो, गुरु की आज्ञा-आराधना करने वाला हो तो कहना ही क्या? चेले के चेले बन गए, पर गुरु की शरण नहीं छोड़ी, ऐसा करने से गुणों की सुवास आएगी ही। गुरु के पास बैठने पर बुराई धुलती जाती है। उपाध्यायप्रवर आगम-स्वाध्याय में सदा रत रहते हैं। किसी ने उन्हें अखबार पढ़ते नहीं देखा होगा, आज तक सुनने को नहीं मिला। वृद्ध एवं रोगी मुनियों की सेवा के प्रसंग आपने सुने हैं। आप सुनने तक ही सीमित न रहें, इन्हें ग्रहण करने का लक्ष्य रखें। आप जीवन का विकास करना चाहें तो अपने से बड़ों के पास, सद्गुणी के पास बैठो। आगम का स्वाध्याय करो। अपना ममत्व या अहंकार भाव मिटाए बिना सेवा नहीं हो सकती। जिन्होंने 50 वर्ष संयम-साधना की है उनके साधनामय जीवन से कुछ-न-कुछ प्रेरणा लेकर जीवन का अवश्य विकास करें।

तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अन्धकार से प्रकाश में लाने का दायित्व उपाध्याय का होता है। भीतर में बैठे हमारे कर्म निरन्तर हमें कषायों की ओर ले जा रहे हैं। संसार में दोषों को निकालने वाले के गुण गाये जाते हैं। उपाध्यायप्रवर स्वयं के दोष निकालते हुए दूसरों को भी दोष निकालने की प्रेरणा करते है। अपने गण की अग्लान भाव से सेवा करने वाले आचार्य, उपाध्यायश्री उसी भव में या अगले भव में मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं, ऐसा आगमों में उल्लेख है। उपाध्याय मानचन्द्र जी के लिये आचार्य नानालाल जी म.सा. ने एक बार कहा था- इनका नाम 'मान' कैसे रख दिया, ये तो विनय की प्रतिमूर्ति हैं। उपाध्यायप्रवर के दर्शन से शांति मिलती है। बड़े लक्ष्मीचंद जी म.सा., बाबा जयन्तीलाल जी म.सा. के साथ आपने छोटे संतों की सेवा भी खूब तत्परता से की। सेवा की सुवास से आपका जीवन आगे बढ़ा।

श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा. ने इस अवसर पर उपाध्यायप्रवर के गुणों का स्मरण करते हुए कहा कि उपाध्यायप्रवर निष्कपट एवं सरल भावों की प्रधानता वाले महापुरुष हैं। महापुरुषों का जीवन सामान्य नहीं, अपितु सर्वमान्य होता है। उपाध्यायप्रवर के जीवन से मान नहीं करने की प्रेरणा मिलती है। **श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा.** ने फरमाया कि जीवन को प्रकाशवान बनाना है तो प्रकाशमान महापुरुषों की संगति का लाभ लेना चाहिए। आप गुणों की आराधना करेंगे तो जीवन प्रकाशित होगा। हम मंगल भावना भाते हैं कि उपाध्यायप्रवर की सन्निधि हमें मिलती रहे। **श्रद्धेय श्री यशवंतमुनि जी म.सा.** ने फरमाया कि संत भगवंतों का भी दो बार जन्म होता है। एक माँ के गर्भ से, दूसरा संयम साधना-पथ पर आरूढ़ होने की पावन विधि से। उपाध्याय प्रवर का प्रमुख गुण है- सरलता। सरल व्यक्ति साधना पथ पर आगे बढ़ते हैं। जो सरल होता है उसके तीनों योगों में

एकरूपता होती है। उनकी दूसरी विशेषता है-सहजता। वे सदा स्वभाव में, समता में सहज रहते हैं। उनकी तीसरी विशेषता है-सहृदयता। वे कभी परायी चर्चा नहीं करते। रत्नसंघ की विशेषता है कि यहाँ अन्य की निन्दा नहीं होती। उपाध्यायप्रवर में संवेदनशीलता भी प्रचुर रूप से दिखाई देती है।

महासती श्री विनीत प्रभा जी म.सा. ने कहा कि साधना ही जीवन का सार है, चारित्र ही जीवन की सुंगध है। उपाध्यायप्रवर इस सुगंध से सुगंधित हैं। आपमें सरलता गजब की है। जोधपुर में निवेदन करने पर कड़ी धूप में भी आप साध्वीप्रमुखाजी को दर्शन देने पधारे। **महासती श्री रक्षिता जी म.सा.** ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि 'जयं चरे, जय चिट्ठे, जयमासे, जयं सए' कथन को उपाध्यायप्रवर अपने जीवन में सार्थक कर रहे हैं। उपाध्याय भगवन्त से मैं यही वरदान मांगती हूँ कि मेरे में भी सेवा का गुण उपस्थित हो। मरुधर केसरी श्री मिश्रीमल जी म.सा. ने आपको चौथे आरे की बानगी बताया। आप श्रावकों से मेरी यही प्रार्थना है कि संयम रूपी जहाज में आप नहीं बैठ सकें तो व्रत की नाव में जरूरी बैठें। **महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा.** ने फरमाया कि श्रद्धेय उपाध्याय भगवंत के चेहरे पर न कोई क्लेश है न कोई द्वेष है। उनके दर्शन से दोषों का शमन होता है। उपाध्यायप्रवर में संतोष झलकता है, माधुर्य टपकता है। आपके चेहरे पर हर पल मुस्कान मिलती है। भीतर की, आत्मलक्ष्य की साधना जब होती है तो साधक आत्म-दर्शन से निहाल हो जाता है। वे चिरायु हों, दीर्घायु हों, शतायु हों, यही मंगल भावना है।

उपाध्यायप्रवर का दीक्षा-दिवस यहाँ उत्साह एवं साधना-आराधना के साथ मनाया गया। प्रवचन सभा में हॉल एवं बरामदा खचाखच भरा हुआ था। अधिकतर भाई-बहिनों ने 5-5 सामायिक का लक्ष्य रखा, साथ ही 150 से अधिक एकासन हुए। पूज्य गुरुदेव की प्रभावी प्रेरणा से इस दिन से आयम्बिल की लड़ी प्रारम्भ हुई । आजीवन दो शीलव्रत हुए। अनेक भाई-बहिनों ने स्थानक में आकर सामायिक करने के नियम लिए हैं। गुणानुवाद सभा का संचालन श्री अजय जी कवाड़ ने किया।

नागौर में उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य में विशेष कार्यक्रम

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 50 वाँ दीक्षा दिवस वैशाख शुक्ला त्रयोदशी, शुक्रवार दिनांक 4 मई, 2012 को धर्म-ध्यान एवं त्याग-तप के साथ नगीना नगर नागौर में मनाया गया। इस अवसर पर जोधपुर, जयपुर, पाली, पीपाड़शहर, भोपालगढ, बीकानेर, गढ़सिवाना, मेड़तासिटी, गोटन, आचीणा, अजमेर आदि अनेक

श्रीसंघों के साथ समीपवर्ती क्षेत्रों के अनेक महानुभावों ने पधारकर उपाध्यायप्रवर के प्रति अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति की। प्रात: 9 बजे सामायिक-स्वाध्याय भवन, गणेश चौक नागौर में प्रवचन सभा के प्रारम्भ में **श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने उपाध्यायप्रवर के प्रति अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति करते हुए उनके साधनाशील जीवन के अनेक गुणों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि सच्चे साधक का मुख देखने मात्र से पातक झड़ते हैं। उपाध्यायप्रवर हर परिस्थिति में समता भाव की साधना में रत रहते हैं। जो विवाद करता है वह संसारी तथा जो संवाद करे वह संन्यासी होता है। उपाध्यायप्रवर का पावन सान्निध्य ही हमारे लिए प्रेरणादायी है। **श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.** ने मधुर स्वर के साथ "जय गुरु हीरा, जय गुरु मान" रूप स्तुति भजन प्रस्तुत किया तथा उपाध्यायप्रवर के अनेक गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि आप और हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि इस रत्नसंघ को परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। **मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.** ने अपने सारगर्भित प्रवचन के माध्यम से उपाध्यायप्रवर के साधनाशील जीवन की झांकी प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आप संघ की शान हैं, आपसे जिनशासन की महिमा है, आपके साधनाशील जीवन को देखकर त्याग, वैराग्य का भान होता है। उपाध्यायप्रवर आडम्बर रहित धर्म आराधना के पक्षधर रहे हैं। दिल्ली चातुर्मास के पूर्व श्रावकों ने पृच्छा की कि- महाराज साहब चातुर्मास में क्या कार्यक्रम रखने है? उपाध्यायप्रवर ने सहज भाव से कहा कि मुझे चातुर्मास में धमचक नहीं, धर्मचक्र की साधना चाहिए। आपके मुख से निकलने वाला शब्द आनन्द है, अन्तर प्रेम की अभिव्यक्ति करता है। जब प्रेम अनन्त होता है तो रोम-रोम संत होता है। किसी कवि ने कहा है- "कहने को तेरे सिर पर कोई ताज नहीं, पर कौन है ऐसा दिल जिस पर तेरा राज नहीं।" प्रवचन सभा में **श्री सुमतिचन्दजी मेहता-पीपाड़, श्री कस्तूरचन्दजी बाफना-जलगाँव, श्री उमरावमलजी सुराणा-चेन्नई, सुश्री पायलजी चौपड़ा-गोटन, सुश्री सपनाजी सुराणा-नागौर, श्री हस्तीमलजी डोसी- मेड़तासिटी, श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना-जोधपुर, श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना-जोधपुर, श्री पी.शिखरमल जी सुराना-चेन्नई, श्री रतनलालजी बाफना-जलगाँव, संघाध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर एवं श्री भोपालचन्दजी सेठिया-जोधपुर** ने उपाध्यायप्रवर के गुणगान करते हुए श्रद्धा की अभिव्यक्ति की। इस अवसर पर उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के प्रवचनों की **पुस्तक मान व्याख्यान-माला** के प्रकाशन की जानकारी प्रवचन सभा में रखी गई। चिर प्रतीक्षित पुस्तक का प्रकाशन उपाध्यायप्रवर के 50 वें दीक्षा दिवस पर सम्यग्ज्ञान

प्रचारक मण्डल द्वारा करवाया गया। पुस्तक प्रकाशन में श्री धनपतचन्दजी सेठिया परिवार ने उदारता पूर्वक सहयोग प्रदान किया। इसी अवसर पर व्याख्यान पश्चात् 'उपाध्यायप्रवर का संक्षिप्त जीवन परिचय' पुस्तक भी सेठिया परिवार की ओर से वितरित की गई। परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने प्रवचन सभा में फरमाया कि संतों ने एवं आप सबने जो मेरे बारे में कहा वह सब मैं पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में समर्पित करता हूँ। जो कुछ भी जीवन में पाया वह सब गुरुदेव का आशीर्वाद है एवं उन्हीं की कृपा का फल है, इसमें मेरा किंचित् मात्र भी नहीं। आचार्यप्रवर एवं संतों के सहयोग से यह संयम रूपी गाड़ी चल रही है। आप सभी लोगों का भी सहकार-सहयोग मुझे प्राप्त होता रहता है। गुरुदेव ने आज से 50 वर्ष पूर्व इस बालक पर कृपा कर संसार मार्ग से हटाकर संयम मार्ग पर आरूढ़ कर दिया था। उन्हीं महापुरुषों के आशीर्वाद से यत्किंचित् प्राप्त करने का प्रयास है। सहयोगी संतों की सेवा एवं सहकार से संयमी जीवन आनन्दमय चल रहा है। शासनहित में आचार्यश्री का भी समय-समय पर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है।

इस अवसर पर श्री उगमचन्दजी सुराणा एवं श्रीमती उर्मिलाजी सुराणा ने उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत का खंद लिया। दीक्षा-दिवस के अवसर पर नागौर में 21 तेलों की आराधना के साथ अनेक भाई-बहिनों ने एकासन, उपवास, आयंबिल एवं दयाव्रत की आराधना की।

दोपहर 2 बजे धर्म सभा का आयोजन किया गया, जिसमें उपाध्यायप्रवर के जीवन-दर्शन पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। श्रीमती सुशीलाजी बोहरा-जोधपुर, श्री हस्तीमलजी बोहरा-पीपाड़, श्रीमती पुष्पाजी मेहता-पीपाड़, श्री तेजराजजी मूथा-पीपाड़, श्रीमती सरोजजी आदि महानुभावों ने इस कार्यक्रम में उपाध्यायप्रवर के गुणगान किये। इस अवसर पर सभा में उपस्थित अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने वर्षभर में 50 नवकारसी, 50 पोरसी, 50 एकासन एवं 50 उपवास पौषध सहित करने के प्रत्याख्यान अंगीकार किए।

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के 50 वें दीक्षा दिवस पर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-पाली मारवाड़ ने 51 बकरों को जीवदया के अन्तर्गत अभयदान देने का संकल्प लिया। नागौर संघ की आतिथ्य सेवाएँ सराहनीय रही।

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 50वाँ दीक्षा-दिवस त्याग-तप के साथ मनाया गया। महासतीवृन्द ने श्रद्धेय उपाध्याय श्री की सेवा व साधना के विविध गुणों को रेखांकित करते हुए कहा कि उपाध्यायप्रवर रत्नसंघ की जाहोजलाली में निरन्तर पुरुषार्थ कर रहे हैं, वह हम-सबके लिए

अनुकरणीय है। श्रावक-श्राविकाओं ने तीन-तीन सामायिक तो की ही, दया-संवर और उपवास-पौषध की साधना करके व्रत-प्रत्याख्यानों में भावना प्रदर्शित की। साध्वीप्रमुखा जी के पावटा विराजने से प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नचर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रम व्यवस्थित चल रहे हैं। वहीं सूर्यनगरी के भाई-बहिन दर्शन-वन्दन का लाभ लेते हुए नित्यप्रति व्रत-प्रत्याख्यानों से भी लाभान्वित हो रहे हैं। साध्वीप्रमुखा जी म.सा. प्रातःकालीन प्रार्थना स्वयं करवाते हैं और प्रार्थना के अनन्तर प्रतिदिन एक प्रश्न पूछते हैं जिसका जवाब अगर युक्तियुक्त नहीं आता है तो स्वयं प्रश्न का हार्द समझाते हैं। प्रश्न पूछने से प्रार्थना के प्रति जन-मन की भावना प्रगाढ़ होती जा रही है। प्रवचन का प्रारम्भ छोटी सतियाँ जी महाराज करते हैं, इस कारण उनका बोलने का अभ्यास बढ़ता है तो पीछे से साध्वीप्रमुखा जी महाराज विविध विषयों पर अनुभवजन्य प्रेरणाएं करते हैं। पावटा स्थानक में ग्रीष्मकालीन नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षण का कार्य शिविर में चलता है, प्रातः करीब 9-9.25 बजे शिविरार्थी दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण में आते हैं जिन्हें प्रेरणा स्वरूप घर पर प्रार्थना करने, स्वाध्याय करने, बड़ों का आदर करने जैसे हितवचन सुनने को मिलते हैं, साथ ही साथ शिविरार्थी प्रतिज्ञाबद्ध होकर हित शिक्षाओं को जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। दिन में कतिपय श्राविकाएँ ज्ञानाभ्यास में रत रहती हैं तो सायं प्रतिक्रमण व संवर करने वाली बहिनों को महासती मण्डल का सहज सुयोग प्राप्त होता है। संघ के पदाधिकारियों एवं श्रद्धालु दर्शनार्थियों को साध्वीप्रमुखा जी संघ-सेवा में सक्रिय रहने की निरन्तर प्रेरणा करते हैं।

बैंगलोर, जलगांव में भी मनाया 50 वां दीक्षा-दिवस

बेंगलौर- 4 मई, 2012, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ चामराजपेट-बेंगलौर के तत्त्वावधान में संघ के आत्मार्थी-प्रबल पुरुषार्थी, धीर-वीर-गंभीर, उपाध्यायश्री मानचन्द्र जी म.सा. का 50 वां दीक्षा-दिवस हुक्मगच्छाधिपति **आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. की पावन सन्निधि में** अपूर्व श्रद्धाभक्ति व धर्मध्यान आराधना से सामायिक-साधना पूर्वक मनाया गया। मंगलाचरण के पश्चात् स्वाध्यायी श्री नवरतनमल जी भंसाली ने उपाध्याय श्री के जीवन पर प्रकाश डाला। इस प्रसंग पर तत्त्वज्ञ घोर तपस्वी सेवामूर्ति श्री विनोदमुनिजी म.सा. ने भी अपने मार्मिक विचार रखे।

पूज्य आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. ने इस पावन प्रसंग पर फरमाया कि हम सन् 1978 के आचार्य श्री नानेश के जोधपुर चातुर्मास में घोड़ों के चौक सामायिक-स्वाध्याय भवन में साथ में रहे, श्रद्धेय उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. विनम्रता की प्रतिमूर्ति हैं। वे आत्मार्थी संत हैं, गंभीर ज्ञानी, धीर-गंभीर, सरलमना संत-रत्न हैं। आपका

नाम जरूर मानचन्द्र जी है, पर विनय गुण की मूर्ति हैं। सन् 2005 में भी विजयनगर-गुलाबपुरा प्रवास में पुनः आपसे मिलन बड़ा सौहार्दपूर्ण व आत्मीय रहा। आचार्यश्री ने धर्म के सम्मुख होने के 15 बोल में बारहवें गुण 'आत्मार्थी' पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जो आत्मार्थी होते है वे ही धर्म के सम्मुख होते हैं। जो धर्म के सम्मुख होते हैं वे ही आत्मार्थी कहलाते हैं। साधना में चार बातें होती हैं- संकल्प, सद्विचार, सद्व्यवहार, समर्पण। ऐसे ही साधक संत हैं- उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. जिनका आज 50 वां दीक्षा-दिवस है। इस प्रसंग पर आचार्यप्रवर ने विभिन्न प्रत्याख्यानों की शृंखला में 50 दिन रात्रिभोजन त्याग, 50 दिन धोवन पानी पीने का नियम, 50 दिन ब्रह्मचर्य पालन, 50 दिन संवर करने आदि के नियम उपस्थित श्रद्धालुओं को कराए। *-गौतमचन्द ओस्तवाल, बेंगलौर*

जलगांव- 4 मई, 2012 को जैन भवन, हस्ती हीरा नगर, एम.आय.डी.सी में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का 50 वां दीक्षा-दिवस गुणानुवाद एवं तप-त्याग के साथ मनाया गया। वर्ष भर में 50 गाथाएँ कंठस्थ करने का संकल्प लिया गया। महासतीजी के पदार्पण से क्षेत्र में विशेष धर्म प्रभावना हुई। 6 मई 2012 को दोपहर 3 बजे से 4.30 बजे तक महासतीजी के सान्निध्य में नवकार महामंत्र के जाप का आयोजन किया गया, जिसमें 300 से भी अधिक लोग उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी के उपलक्ष्य में पिछले 2 वर्षों से लगातार हर माह के प्रथम रविवार को जाप का आयोजन किया जाता है।

जयपुर में बृहद् श्रावक-सम्मेलन

रत्नसंघीय परिवारों का बृहद् सम्मेलन गुलाबीनगरी-जयपुर में कार्तिक शुक्ला चतुर्थी एवं पंचमी शनिवार-रविवार दिनांक 17-18 नवम्बर, 2012 को आयोजित किया जा रहा है जिसमें आबाल-वृद्ध सभी संघ सदस्य सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

बृहद् सम्मेलन में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के सदस्य महानुभाव संघहित के विविध विषयों पर कार्यक्रमानुसार चिन्तन-विचार करेंगे। कार्यक्रम की रूपरेखा एवं सम्मेलन-स्थल आदि महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ यथा समय प्रदान करने का लक्ष्य है।

विनीतः

सुमेरसिंह बोथरा	**गौतमचन्द हुण्डीवाल**	**पूरणराज अबानी**
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

मदनगंज-किशनगढ़ में वीतराग-ध्यान शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. की सन्निधि में मदनगंज-किशनगढ़ में 7 से 17 मई 2012 तक वीतराग-ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। आर.के. कम्यूनिटी सेन्टर, मदनगंज-किशनगढ़ में आयोजित वीतराग-ध्यान शिविर में 124 साधकों ने भाग लेकर ध्यान का अभ्यास किया। इनके अतिरिक्त 18 महासतियाँ जी एवं 3 संतों ने भी दिन के समय में ध्यान-साधना का लाभ लिया। प्रमुख ध्यान-साधक एवं जैन विद्वान् श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा 90 वर्ष की वय में भी शिविर में निरन्तर मार्गदर्शन कर रहे थे। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. प्रातः 8 बजे से अपराह्न 4.30 बजे तक शिविर-स्थल पर रहकर साधकों को ध्यान-साधना का सुन्दर अभ्यास करा रहे थे। उनकी वाणी में साधना का बल है। अतः उसका साधकों पर विशेष प्रभाव रहा। 10 दिन के इस शिविर में पूर्णतः मौन रखा गया। उसकी परिपालना कराने में एवं अन्य व्यवस्थाओं में धर्म-सेवकों का योगदान सराहनीय रहा। देखभाल में किशनगढ़ संघ के श्री राजेन्द्र जी डांगी, श्री बंशीलाल जी कोचेटा आदि श्रावकों का सक्रिय सहयोग रहा। ध्यान-साधक श्री संजय जी अग्रवाल-जयपुर, श्री रेखराज जी-आरकाट, श्री नरेन्द्र जी सुराणा-बीकानेर, श्री नरेन्द्र जी डागा-मुम्बई, नेहा जी चोरडिया-जलगाँव, विरक्ता शीतल जी आदि की उल्लेखनीय सेवाएँ रही। संघ संरक्षक श्री नथमल जी हीरावत-जयपुर, श्री विनोद जी सुराणा-चेन्नई, श्री प्रेमचन्दजी जैन-जयपुर, श्री विनय जी डागा-जयपुर, श्रीमती सुशीला जी बोहरा-जोधपुर, श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगाँव, डॉ. धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर आदि ने भी पूरे 10 दिन रहकर ध्यान-साधना की।

जयपुर में ग्रीष्मकालीन शिविर

शिविरार्थियों द्वारा जोबनेर में आचार्यप्रवर के दर्शन

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी ग्रीष्मकालीन अवकाश में बालक-बालिकाओं के धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष यह शिविर 10 मई से सुबोध स्कूल में तथा 13 मई से अन्य नौ केन्द्रों पर लगाया जा रहा है। सभी दस केन्द्रों पर परीक्षा का आयोजन दिनांक 02 जून को किया जायेगा। इस शिविर में 5 वर्ष से 20 वर्ष की आयु के लगभग 1000 से अधिक बच्चे धार्मिक और नैतिक संस्कार ग्रहण कर रहे हैं।

शिविर के दौरान 27 मई को शिविरार्थी बच्चों ने पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. तथा अन्य सन्त-सती मण्डल के जयपुर से लगभग 45 कि.मी. दूर स्थित जोबनेर में

दर्शन किए। सभी शिविर-स्थलों के लगभग 500 बच्चों ने सन्त-दर्शन और प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया। सभी ने वेशषभूषा पहन कर सामायिक की और शान्तिपूर्वक प्रवचन श्रवण किया। श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. ने अपने प्रवचन में सभी शिविरार्थी बच्चों को शुभाशीष दिया और जीवन में सुसंस्कारों का महत्त्व समझाते हुए फरमाया कि जहाँ बालक विद्यावान, विनयवान एवं विवेकशील होता है, वहाँ उन्नति अवश्य होती है। पूज्य आचार्यप्रवर ने भी इस अवसर पर असीम कृपा करते हुए अपनी पीयूषमयी वाणी से उपस्थित सभी बालक-बालिकाओं और अन्य श्रावक-श्राविकाओं के मन को आप्लावित कर दिया। आपने प्रमुदितभाव से फरमाया कि इतनी बड़ी संख्या में बच्चों को सामायिक के सम्पूर्ण वेश में एक साथ सामायिक करते हुए देखने का अवसर कभी-कभी ही आता है। आपने अपने उद्बोधन में फरमाया कि यद्यपि सामायिक का लक्ष्य तो भीतर में समभाव आना है, परन्तु फिर भी बाहरी वेश का भी अपना महत्त्व है। साथ ही आपने कहा कि सभ्यता तो बाहरी दिखावा है और संस्कृति भीतर का खजाना है, जिसे सुसंस्कारों द्वारा ही जीवित रखा जा सकता है और व्यक्ति को संस्कार देने के लिये उसकी बालवय ही उपयुक्त है। जिस परिवार, समाज एवं देश के बालक सुसंस्कारित होगें उसका भविष्य उज्ज्वल है। अतः संघ और समाज इस प्रकार के धार्मिक शिविर आयोजित करके बच्चों में नैतिक संस्कारों का बीजारोपण करें।

इस यात्रा के दौरान जोबनेर श्री संघ ने शिविरार्थी बच्चों के भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था की।

48 स्थानों पर ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अन्तर्गत शिविर प्रभारी श्री जितेन्द्र जी डागा के मागदर्शन में इस वर्ष देश के विभिन्न 48 स्थानों पर 24 मई से 10 जून तक ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित हो रहे हैं। इन शिविरों में लगभग 4400 शिविरार्थी भाग ले रहे हैं। विस्तृत रिपोर्ट आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी। जोधपुर में अलग से 9 केन्द्रों पर इन्हीं तिथियों में ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर चल रहा है, जिनमें लगभग 1250 बालक लाभ ले रहे हैं।

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 22 जुलाई को होगी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 22 जुलाई 2012, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि आवेदन-पत्र एवं पाठ्यपुस्तकों की प्राप्ति हेतु शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें।
सम्पर्क सूत्र- सुशीला बोहरा-संयोजक-94141-33879, धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार-

93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय-0291-2630490, Email-info@jainratnaboard.com, Website- www.jainratnaboard.com

वीरसेवा मन्दिर, दिल्ली में व्याख्यान

श्रुत पंचमी के अवसर पर वीरसेवा मन्दिर, दरियागंज दिल्ली में 27 मई, 2012 को 'जैन दर्शन का भारतीयदर्शनों से तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन हुआ, जिसमें डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर ने वैदिक संस्कृति के साथ जैन संस्कृति का, डॉ. रमेशचन्द्र जैन-बिजनौर ने इस्लाम और जैन धर्म का, डॉ. वीरसागर जैन-दिल्ली ने ईसाई और जैनधर्म का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। प्रो. धर्मचन्द जैन, जोधपुर ने बौद्ध एवं जैन धर्म-दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। अध्यक्षता राष्ट्रपति सम्मानित प्राकृतभाषाविद् डॉ. राजाराम जैन ने की तथा मुख्य अतिथि वैज्ञानिक डॉ. सी.देवकुमार थे। वीरसेवा मन्दिर की स्थापना 'मेरी भावना' के रचयिता पं. जुगलकिशोर मुख्तार द्वारा की गई थी। संस्था द्वारा 'अनेकान्त' त्रैमासिक का प्रकाशन किया जाता है।

आचार्य हस्ती की स्मृति में गुणानुवाद एवं तप-त्याग

चामराजपेठ (बैंगलोर)- वैशाख शुक्ला अष्टमी 29 अप्रेल, 2012 को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ चामराजपेठ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ बैंगलोर (कर्नाटक) के संयुक्त तत्त्वावधान में 'चामराजपेठ जैन स्थानक' भवन में इतिहास मार्तण्ड सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक युगद्रष्टा पूज्य आचार्य भगवंत श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का पावन पुनीत स्मृति-दिवस अपार श्रद्धाभक्ति एवं दो-दो सामूहिक सामायिक साधना से हुक्म गच्छाधिपति **आचार्यप्रवर श्री विजयराज जी म.सा.** के सान्निध्य में धर्मध्यान पूर्वक मनाया गया।

चामराजपेठ स्थानक में आपने महत्त्वपूर्ण मार्मिक उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. इतिहास मार्तण्ड, युगद्रष्टा महापुरुष होने के साथ ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ संगम थे। महापुरुषों के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा प्रत्येक युग में समग्र मानव चेतना को जागृत करती रहती है। आचार्य श्री हस्ती का व्यक्तित्व सम्प्रदायातीत व अविरल था। वे मानव-मानव व जन-जन को सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्म से जोड़ते रहते थे। आचार्य श्री ने फरमाया कि हम संत को पूजें, पंथ को नहीं। इसका पैमाना सत्य है। संत सदैव निस्पृह और निर्लिप्त होते हैं। संत जीवन को सजाते हैं व बनाते हैं। प्रखर प्रवक्ता अनुभवी वरिष्ठ संत श्री अजीतमुनिजी म.सा. ने आचार्य श्री के प्रवचन के पूर्व फरमाया कि आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. संगठन एवं संघ एकता के प्रबल पक्षधर थे। वे

सम्प्रदायवाद के पक्षधर नहीं, अपितु जिनधर्म के पक्षधर थे। धर्मसभा में स्वाध्यायी श्री नवरतनमल जी भंसाली, श्री मांगीलाल जी जांगड़ा एवं श्री सज्जनराज जी मेहता ने गद्य-पद्य में गुणगान किए। आचार्यप्रवर ने उपस्थित श्रद्धालुओं को धोवन पानी पीने का संकल्प करवाकर महापुरुषों के प्रति श्रद्धासुमन समर्पित किए। *-गौतमचन्द ओस्तवाल, बेंगलौर*

जलगांव- वैशाखशुक्ला अष्टमी दिनांक 29 अप्रेल, 2012 को आचार्य भगवंत श्री हस्तीमल जी म.सा. की 21 वीं पुण्यतिथि रतनलाल सी.बाफना स्वाध्याय भवन में व्याख्यात्री महासतीजी श्री निशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में तप एवं त्याग के साथ मनाई गई। करीब 125-150 श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास, एकासन एवं दयाव्रत की आराधना की। श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा संघाध्यक्ष श्री दलीचंदजी जैन के हाथों डॉक्टर श्री राहुल भंसाली एवं सौ. प्रियंका भंसाली का संत-सतियों की विशेष सेवा हेतु शॉल, माला एवं धार्मिक पुस्तकों द्वारा सम्मान किया गया। श्री अशोक जी श्रीश्रीमाल का भी स्वधर्मी-वात्सल्य हेतु सम्मान किया गया। दोपहर में आचार्य भगवंत के जीवन पर आधारित प्रश्न मंच एवं भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

धुलिया- अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 21 वां पुण्य स्मृति-दिवस वैशाख शुक्ला 8 दिनाँक 29 अप्रेल, 2012 को तपस्वी श्री कानमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं महासती श्री सुशीला जी म.सा. आदि ठाणा 17 की सन्निधि में मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य श्री कानमुनि जी ने आचार्य भगवंत के संयमी-जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। इस दिन सामायिक, एकाशन, आयम्बिल एवं उपवास किए गए।

संक्षिप्त-समाचार

मल्लपुरा (आगरा)- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा.विभिन्न क्षेत्रों में विचरण करते हुए आगरा जिले के मल्लपुरा पधारे। उनके पदार्पण से यहाँ के श्रावक-श्राविकाओं, बालक-बालिकाओं एवं युवक-युवतियों में खुशी का वातावरण व्याप्त हो गया। सभी ने धर्म-ध्यान का लाभ लिया। उनके सान्निध्य में महावीर जयन्ती धर्म-ध्यान पूर्वक मनाई गई। इस ग्राम में प्रथम बार रत्नसंघ की साध्वीजी का पदार्पण हुआ है, जिनके उपदेश, आचरण एवं धर्मप्रेरणा से बच्चा-बच्चा प्रमुदित हो उठा। यहाँ रत्नसंघ की कार्यकारिणी का भी गठन हुआ है। श्रेयांस, शिवांगी, मिनी, प्रज्ञा आदि बालक-बालिकाओं ने अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति पत्रों के माध्यम से प्रेषित की है। वहाँ पहली बार छोटे-छोटे बालकों ने महासती जी के साथ 10 किलोमीटर का विहार कराया।

वैशाली- प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान में भगवान् महावीर के जन्म-कल्याणक महोत्सव के अवसर पर 'भगवान महावीर और अहिंसा' विषय पर 'जगदीशचन्द्र माथुर स्मृति व्याख्यानमाला' आयोजित की गई। डॉ. हरिश्चन्द्र सत्यार्थी, डॉ. जयकुमार उपाध्ये-नई दिल्ली, डॉ. विजयकुमार-वाराणसी, डॉ. अनेकान्त जैन ने भिन्न-भिन्न विषयों पर प्रकाश डाला। डॉ. शैलकुमारी, डॉ. संगीता अग्रवाल ने भी शोधालेख प्रस्तुत किए। डॉ. अनेकान्त जैन की पुस्तक 'दार्शनिक समन्वय की जैनदृष्टि-नयवाद' का लोकार्पण किया गया। वैशाली के इस संस्थान के निदेशक को अ.भा.दिगम्बर जैन महासभा की ओर से 'विद्वद्-रत्न' की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की ओर से दिनाँक 18 से 24 मई, 2012 तक आध्यात्मिक एवं नैतिक शिविर का आयोजन स्वाध्याय-भवन घोड़ों का चौक में किया गया। शिविर का समय 11.30 से 3.30 तक रखा गया। शिविर में हाउसिंग बोर्ड, प्रतापनगर, नेहरू पार्क, सरदारपुरा, सरस्वती नगर, घोड़ों का चौक, लक्ष्मी नगर, पावटा, महामंदिर, सिंहपोल आदि क्षेत्रों से 90 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार पहली से नवमी कक्षा तक का अध्ययन कराया गया। अध्ययन कराने में श्री धर्मचन्द जी जैन, रंगरूपमल जी डागा, अरूण जी मेहता, मूलचंद जी बाफना, प्रकाश जी सालेचा, रतन जी चोरडिया, अकल कंवर जी मोदी, कमला जी सुराणा, मोहिनी बाई जी कछवाह आदि ने योगदान किया। शिविर में शिविरार्थियों का मूल्यांकन करने हेतु परीक्षा का आयोजन किया गया। उनमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वालों को पुरुस्कार दिया गया। शिविर में सभी शिविरार्थियों को सांत्वना पुरस्कार दिये गये। शिविर में 50 महिलाओं ने बोर्ड की परीक्षा के फार्म भरे।

अजमेर- मणिपुञ्ज सेवा संस्थान में जैन समाज के अभावग्रस्त तथा टूटे-बिखरे परिवारों के बालकों को प्रवेश देकर जीवन-निर्माण हेतु शिक्षा, संस्कार, आवास, भोजन आदि की निःशुल्क/सशुल्क व्यवस्था है। अजमेर में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र सम्पर्क करें- प्रेमलता जैन, मणिपुञ्ज सेवा संस्थान, बी.के. कॉल नगर, सिनेबर्ड सिनेमा के आगे, पानी की टंकी के पास, पुष्कर रोड़, अजमेर (राज.), फोन : 9414355098

लासलगांव- श्री महावीर जैन विद्यालय वसतिगृह में 15 जून, 2012 से कक्षा 5 से 10 वीं तथा 11 से 12 वीं विज्ञान तथा आई.टी.आई के छात्रों को प्रवेश दिया जा रहा है। होनहार एवं आर्थिक स्थिति से दुर्बल छात्रों को संस्था की ओर से सहयोग दिया जाएगा। **सम्पर्क सूत्र-** ऑनरेटी सक्रेटरी, श्री महावीर जैन विद्यालय, लासल गांव, जिला-नासिक, फोनः 02550- 266358

लाडनूँ- जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय पिछले 21 वर्षों से जैनविद्या के प्रचार-प्रसार में निरन्तर कार्य कर रहा है। आपको ज्ञात हो कि अभी तक विश्वविद्यालय के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग में स्नातकोत्तर स्तर पर केवल जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विषय में M.A और M.Phil. का पाठ्यक्रम ही संचालित हो रहा था, परन्तु इस सत्र से विभाग में दर्शन (Philosophy) में भी एम.ए. का पाठ्यक्रम संचालित हो रहा है। प्रवेश फार्म हेतु सम्पर्क करें- **कुलसचिव**, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ, फोन : 01581-222110, 224332, **विभागाध्यक्ष-** 01581-224332, Web : www.jvbi.ac.in, email-jainism13@gmalil.com

बधाई/चुनाव

ब्यावर- श्रीमती मन्जू सांड धर्मपत्नी श्री चिरंजीलाल जी सांड, ब्यावर को ''राजस्थान के जैन मंदिरों का वास्तु वैभव : एक अध्ययन'' विषय पर शोध करने के उपलक्ष्य में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर की ओर से पीएच्.डी. की उपाधि प्रदान की गई। मन्जू ने यह शोध डॉ. पी.सी. जैन के निर्देशन में पूर्ण किया। डॉ. मन्जू स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी के रूप में पर्युषण पर्व पर महाराष्ट्र, दिल्ली, पंजाब, तमिलनाडू एवं कर्नाटक में सेवाएँ दे चुकी है।

उदयपुर- श्रीमती पुष्पा जैन धर्मपत्नी श्री रमेश जी खोखावत को जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर के द्वारा 'उपाध्याय पुष्कर मुनि का साहित्य : एक समीक्षात्मक अनुशीलन' विषय पर शोधकार्य करने पर पीएच्.डी. उपाधि प्रदान की गई है। डॉ. पुष्पा जैन ने यह शोधकार्य डॉ. देव कोठारी के निर्देशन में पूर्ण किया है।

चेन्नई- सुश्री एम.पूजा तातेड़ सुपौत्री श्री नेमीचन्द जी पुखराज जी तातेड़, रियाँ बड़ी ने सी.एस. की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की है। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के स्वाध्याय-भवन, साहुकारपेठ में विराजने पर पूजा तातेड़ ने तीन दिनों में 25 बोल तथा एक सप्ताह में प्रतिक्रमण कंठस्थ किया है।

बालोतरा- श्री ओसवाल समाज बालोतरा के त्रिवार्षिक चुनाव में सर्वसम्मति से श्री मदनराज जी चौपड़ा सुपुत्र श्री खींमराज जी चौपड़ा (कवास वाले) अध्यक्ष चयनित किए गए हैं। वे समाज सेवा एवं राजनीति क्षेत्र में सक्रिय हैं।

बालोतरा- समाजसेवी श्री ओमप्रकाश जी बांठिया श्री ओसवाल समाज बालोतरा के

पांचवी बार सर्वसम्मति से मंत्री चयनित किए गए हैं तथा श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी संघ बालोतरा में दूसरी बार उपाध्यक्ष चयनित हुए हैं। हाल ही में उन्हें नेपाल में 'गोल्ड स्टार एशिया इन्टरनेशनल अवार्ड' द्वारा सम्मानित किया गया है।

जोधपुर- सुश्री निधि नागोरी सुपुत्री श्रीमती अरूणा-नरपतराज नागोरी ने एम.बी.बी.एस. परीक्षा राजकीय मेडिकल कॉलेज, भावनगर से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है।

भोपाल- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ की नई कार्यकारिणी में श्री यशवंतसिंह बांठिया को अध्यक्ष एवं श्री अरविन्द चोरड़िया को सर्वसम्मति से मंत्री मनोनीत किया गया है।

बैंगलुरु- अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की कर्नाटक शाखा के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री एस. मोहनलाल जी मुथा तथा कर्नाटक जैन महिला कॉन्फ्रेंस की नव मनोनीत अध्यक्ष श्रीमती उषा राजेश जी मुथा ने अपने पद एवं गोपनीयता की शपथ 7 अप्रेल 2012 को नई दिल्ली में ग्रहण की।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के श्रेष्ठ परिणाम

अदिति सिंघवी

राहुल गांग

शिवांगी चौपड़ा

रचित भण्डारी

अर्पित बोहरा

वृत्तिको ओस्तवाल

प्रेक्षा ललवाणी

सिद्धार्थ जैन

1. अदिती सिंघवी सुपुत्री श्रीमती सन्ध्या एवं श्री मनोजकुमार जी सिंघवी, जोधपुर, दौहित्र श्री धनपतमल जी सेठिया। कक्षा 10 में A-1, CGPA-10
2. राहुल गांग सुपुत्र श्रीमती योगिता एवं श्री राजेश जी गांग तथा सुपौत्र श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर, कक्षा 10 में A-1, CGPA-10
3. शिवांगी चौपड़ा सुपुत्री श्रीमती अन्नपूर्णा एवं श्री महीपत राज चौपड़ा तथा सुपौत्री श्री नरपतराज जी चौपड़ा, जोधपुर, कक्षा-12 में 93.8%

4. श्री रचित भण्डारी सुपुत्र श्रीमती रचना एवं श्री सुरेश जी भण्डारी तथा सुपौत्र श्री वदेहचन्द जी भण्डारी,जोधपुर, दौहित्र श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी, जोधपुर, कक्षा-12 में 95.3 %
5. अर्पित बोहरा पुत्र श्री महावीर जी बोथरा-जलगांव, सुपौत्र श्री सोहनलाल जी बोथरा, भोपालगढ़, कक्षा-12 महाराष्ट्र बोर्ड में 91.33 %
6. वृत्तिका ओस्तवाल सुपुत्री श्रीमती कंचन एवं जिनेन्द्र कुमार ओस्तवाल, जोधपुर, कक्षा-12 (वाणिज्य वर्ग) 94.2 %
7. प्रेक्षा ललवाणी सुपुत्री श्रीमती संगीता एवं डॉ. गौतम ललवाणी (चार्टेड सिविल इंजीनियर), जोधपुर, कक्षा-12 (वाणिज्य वर्ग) 94.8%
8. सिद्धार्थ जैन (कवाड़) सुपुत्र श्रीमती सरिता एवं राजेन्द्र जी जैन-एडवोकेट, जोधपुर, कक्षा-12 (विज्ञान वर्ग) 93.4%

श्रद्धाञ्जलि

जलगांव- अनन्य गुरुभक्त सुश्रावक श्री दीपचन्द जी बाफना का 10 मई, 2012 को स्वर्गगमन हो गया। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतियों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं की सेवा-भक्ति में सदैव तत्पर रहते थे तथा नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करते थे। रत्नसंघ के प्रति उनकी एवं बाफना परिवार की समर्पित सेवाएँ रही हैं। स्वधर्मि-वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी बाफना परिवार सदैव अग्रणी रहा है।

जयपुर- श्री त्रिलोकचन्द जी मूसल सुपुत्र श्री कमलचन्दजी मूसल का 16 अप्रेल, 2012

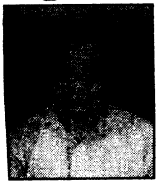

को अल्पायु में स्वर्गवास हो गया। आप एवं आपका पूरा परिवार आचार्यप्रवर एवं संघ के प्रति निष्ठावान हैं। श्री त्रिलोकचन्द जी नियमित लालभवन में सामायिक करते थे। जयपुर में ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिविर में सेवा प्रदान करते रहते थे। अल्पायु में ही आपने जमीकंद त्याग के प्रत्याख्यान ग्रहण कर लिये थे और आपने अपने जीवन में 5 अठाइयाँ तथा कई छोटी-मोटी तपस्याएँ की थी। आपको भक्तामरस्तोत्र, कल्याणमंदिर, पुच्छिसुणं आदि कंठस्थ थे। आपकी माताश्री श्रीमती मंजूजी मूसल का अधिकांश समय संघ एवं धार्मिक क्रियाकलापों में व्यतीत होता है।

चेन्नई- रत्नसंघ के आस्थावान श्रावक रत्न स्व. श्री माणकचंद जी कर्णावट की सुपौत्र-

वधू, श्री जवाहरलाल जी कर्णावट की पुत्रवधू एवं श्री देवेन्द्रकुमार जी कर्णावट की धर्मपत्नी **श्रीमती युविता (कांता) कर्णावट** का 31 वर्ष की वय में 13 मई, 2012 रविवार को चेन्नई में सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। वे धर्मपरायण श्राविका थी तथा संत-सतियों की सेवा में सदा तत्पर रहती थीं। सन् 2005 में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई चातुर्मास में आपने 9 की तपस्या की थी। आपके पति देवेन्द्रकुमार जी कर्णावट फोर्ड मोटर कंपनी में मैनेजर पद पर हैं। आपके दो सुपुत्र नमन और अरिहंत हैं। संघ-सेवी कुशलवक्ता श्री जवाहरलाल जी कर्णावट श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई एवं श्री एस.एस. जैन संघ साहुकारपेट चेन्नई के मंत्री पद को सुशोभित कर चुके हैं।

चेन्नई- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्रावक श्री गौतमचन्द जी चतुर मेहता सुपुत्र श्री रूपराज जी

मेहता का 64 वर्ष की आयु में 29 अप्रेल, 2012 को असामयिक स्वर्गवास हो गया। नित्यप्रति सामायिक करने वाले श्रावकरत्न ने चार बार अठाई तप की साधना की एवं एक बार मासखमण भी किया। सत्संग-सेवा और संत-समागम के रसिक श्रावकरत्न में सरलता, सहजता, सहिष्णुता के विशेष गुण थे। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के चेन्नई चातुर्मास में श्रावकरत्न ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सेवा-भक्ति का अच्छा लाभ लिया। आपके अनुज डॉ. प्रकाशचन्द जी मेहता, जोधपुर में संत-सतीवृन्द के श्रमणोचित औषधोपचार का भावनापूर्वक लाभ लेते हैं। आप भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर- 'दैनिक जागरण' समाचार पत्र के संस्थापक स्व. श्री माणक जी चोपड़ा की

धर्मपत्नी श्रीमती कमला चोपड़ा का तेरह दिन के संथारापूर्वक देवलोकगमन 24 मार्च की रात्रि को हो गया। मृदुभाषी, मिलनसार, त्याग व तपस्या की प्रतिमूर्ति एवं धर्मनिष्ठा की प्रतीक 76 वर्षीय श्रीमती कमला चोपड़ा ने गत 12 मार्च, 2012 को साध्वी प्रीति जी म.सा. एवं साध्वी मंजुला जी म.सा. से संथारा ग्रहण किया था और 24 मार्च की रात संथारे के साथ उनका देवलोक गमन हो गया। उनके सुपुत्र सुरेन्द्र चोपड़ा एवं मनीष चोपड़ा धर्मनिष्ठ हैं।

हैदराबाद- आदर्श श्रमणोपासिका श्रीमती कमला कंवर जी धर्मपत्नी परम गुरुभक्त श्री भंवरलाल जी डोसी का 12 मई, 2012 को स्वर्गवास हो गया। मूलतः ब्यावर निवासी-स्व. श्रेष्ठिवर्य सोनराज जी डोसी का परिवार रत्न संघ एवं धर्माचार्य के प्रति समर्पित अग्रणी परिवारों में से है। श्रीमती डोसी अपने पीछे संघसेवी युवारत्न सुपुत्र श्री प्रदीप जी एवं श्री

पारस जी डोसी का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। स्व. श्री सोनराज जी डोसी के चार सुपुत्र श्री भंवरलाल जी डोसी-हैदराबाद, श्री जवरीलाल जी डोसी-जोधपुर, श्री किस्तूरचन्द जी डोसी-ब्यावर, श्री प्रकाशचन्द जी डोसी-चेन्नई अपने क्षेत्र में संघ-सेवा में समर्पित हैं।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती चन्द्रकँवर जी मूथा धर्मपत्नी स्व. श्री पुखराज जी मूथा (ब्यावर वाले) का 28 अप्रेल, 2012 को 89 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जीवन सदा ही धर्मनिष्ठ एवं त्यागमय रहा। आपने अपने जीवनकाल में मासखमण, 17,15 दिवसीय एवं अनेक अठाई तप किए। जीवन पर्यन्त आपके रात्रि-भोजन का त्याग रहा। आप अपने पीछे 3 पुत्र, 4 पुत्रियों, पौत्र-पौत्रियों एवं पड़पौत्र से युक्त भरापूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी, सुश्रावक श्री किशोरचन्द जी बाफना का 22 मई, 2012 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ श्री बाफना साहब का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। उनका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में सदैव आपका योगदान रहता था एवं आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करते थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहते थे। आपने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया,जिसके फलस्वरूप बाफना परिवार संघ-सेवा में सदैव तत्पर है।

इन्दौर- श्री बसन्तलाल जी कटारिया सुपुत्र श्री गुलाबचन्द जी कटारिया निवासी सांभरलेक हाल मुकाम इन्दौर का 85 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। आप देव,गुरु और धर्म के प्रति आस्थावान सुज्ञ श्रावकरत्न थे। आपकी आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. तथा सन्त-सती मण्डल के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप प्रतिदिन माला जपने का ध्यान रखते थे। आप अपने पीछे 4 पुत्र एवं 3 पुत्रियों सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

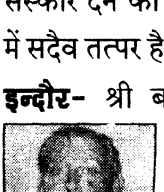

इन्दौर- श्री शंकरलाल जी जैन जरखोदा वाले का 31 मार्च, 2012 को निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, धर्मानुरागी एवं सेवाभावी होने के साथ पोरवाल समाज के प्रारम्भिक कार्यकर्त्ता रहे।

कुण्डेरा- सुश्राविका श्रीमती रामनिवासी बाई धर्मपत्नी स्व. श्री रामप्रताप जी पंचोली का

10 मई, 2012 को देहावसान हो गया। आप सरलस्वभावी, मृदुभाषी, व्यवहारकुशल एवं धार्मिक प्रवृत्ति की श्राविका थी। आप प्रतिदिन सामायिक करती थी तथा आपके रात्रिभोजन का त्याग था। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

भिवण्डी- सुश्रावक श्री पन्नालाल जी लोढ़ा का 61 वर्ष की उम्र में 11 मई, 2012 को स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति थी। आप प्रतिदिन सामायिक स्वाध्याय करते थे।

आगोलाई- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीलाल जी गोगड पुत्र स्व. श्री पन्नालाल जी गोगड

का 82 वर्ष की उम्र में 28 अप्रेल, 2012 को 2 घण्टे के संथारापूर्वक देहावसान हो गया। आप धर्मपरायण एवं हँसमुख रहने वाले श्रावक थे। आप धार्मिक कार्यों में सदा अग्रणी रहते थे। आप नित्य स्वाध्याय करते थे एवं बाल्यकाल से ब्रह्मचारी थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

अन्ध-विश्वास

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

आज कई लोग जहाँ देवत्व नहीं है वहाँ जाकर धोक दे रहे हैं। इधर-उधर भटक रहे हैं। उन्हें उस पर विश्वास है और वीतराग वाणी पर विश्वास नहीं। धर्म-दर्शन जिनवाणी का अंग है। जिसके भाग्य में सुख है उसे कोई भी दुःख नहीं पहुँचा सकता और जिसके भाग्य में दुःख है उसे कोई भी सुख में नहीं बदल सकता। हाँ, दुःख यदि सुख में बदलता है तो अपने पुरुषार्थ से। आपके भाग्य अच्छे हैं या बुरे, देव उसमें क्या करेगा? कहा भी है-

टुकड़ा काम आता नहीं, टूटी हुई शमशीर का।
देवता भी क्या करे, फूटी हुई तकदीर का।।

किसी के भाग्य में है ही नहीं तो देवता क्या दे देंगे? यह तो अन्धविश्वास है कि अमुक जगह जायेंगे, अमुक देवस्थान पर जायेंगे तो दुःख कम हो जायेंगे। यह विश्वास नहीं, अंधविश्वास है और अनादि काल से चला आ रहा है। जब चार जातियों के देव देने में समर्थ नहीं तो पत्थर पर मालीपाना लगाकर स्थापित जगह-जगह के देव क्या दे सकते हैं?

-'मान व्याख्यान-माला' से संकलित

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

4000/- मण्डल से प्रकाशित साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

740 श्री सुनील जी सांखला जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

13619 श्री निर्मलकुमारजी मेहता, डी-50, बापू नगर, सेंती (वेस्ट), चित्तौड़गढ़ (राज)
13620 Shri D. C. Suranaji, Road Sadulganj, Bikaner (Raj.)
13621 श्री कजोड़मलजी जैन, खोह, वाया-रोणिजाथान, जिला-अलवर (राजस्थान)
13622 श्री विकासजी छाजेड़, 94, लक्ष्मीनगर, पावटा सी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
13623 श्री दीपचंदजी सांखला, दीपक ट्रेडर्स, पोस्ट-समदड़ी, जिला-बाड़मेर (राजस्थान)
13624 श्री हेमन्त कुमारजी जैन, गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
13625 श्रीमती उषाजी जैन, बी-35, संजय नगर कॉलोनी, भरतपुर (राजस्थान)
13626 श्री आशीषजी नवलखा, कालों का मौहल्ला, जौहरी बाजार, जयपुर (राजस्थान)
13627 श्रीमती साधनाजी सुराणा, पारीक रेड़ियों की गली, बीकानेर (राजस्थान)
13628 श्री प्रतापमलजी कुम्भट, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13629 श्री पदमचंदजी गादिया, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13630 श्री सुरेशकुमारजी चोरड़िया, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13631 श्री सुमरेसिंहजी दरड़ा, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13632 श्री प्रकाशचंदजी दरड़ा, मदनगंज-किशनगढ़-305801, जिला-अजमेर (राज)
13633 श्री राजेन्द्रजी कोठारी, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13634 श्री सूरतसिंहजी मेहता, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13635 श्री घेवरचंदजी पीपाड़ा, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13636 श्री विनयकुमारजी जामड़, किशनगढ़ शहर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13637 श्री सुभाषचंदजी कोठारी, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13638 श्री विजयकुमारजी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13639 श्री विनीतजी गोठी, लोखण्डवाला कॉम्पलेक्स, कांदिवली, मुम्बई (महाराष्ट्र)
13640 श्री विनयकुमारजी मेहता, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13641 श्री राजेन्द्र कुमारजी बाफणा, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13642 श्री अभिनवजी कर्णावट, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13643 श्री सुभाषचंदजी बरड़िया, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13644 श्री सुरेन्द्रसिंहजी जामड़, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13645 श्री पारसमलजी डोसी, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13646 श्री सुरेन्द्रकुमारजी सकलेचा, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13647 श्री ताराचंदजी जैन (सेवानिवृत्त प्राचार्य), किशनगढ़ शहर, जिला-अजमेर (राज)
13648 श्री मनीष कुमारजी मेहता, किशनगढ़ शहर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13649 श्री धर्मवीरजी मेहता, किशनगढ़ शहर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13650 श्री ज्ञानचंदजी मेहता, किशनगढ़ शहर, जिला-अजमेर (राजस्थान)

13651 श्री योगेश कुमारजी बरड़िया, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13652 श्री पन्नालालजी बाफणा, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13653 श्री भागचंदजी कवाड़, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13654 श्री पूनमचंदजी बाफणा, किशनगढ़ शहर, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13655 श्री माणकचंदजी टिकलिया, गेगल, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13656 श्री महेन्द्र कुमारजी डांगी, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13657 श्री गजेन्द्रसिंहजी डांगी, श्रीगोपाल नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर (राजस्थान)
13658 श्री धनराजजी सोनी, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13659 श्री प्रेमचंदजी कोचेटा, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13660 श्री इंदरचंदजी मारू, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13661 श्री प्रेमचंदजी मेहता, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13662 श्री सूर्यप्रकाशजी कोठारी, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13663 Shri Ashishji Dangi, Andheri East, Mumbai (M.H.)
13664 श्री राजकुमारजी जैन, अम्बा प्रसाद तिवारी मार्ग, दौलतगंज, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
13665 श्री रविकुमारजी पिरोदिया, 50, लक्कड पीढा, रतलाम (मध्यप्रदेश)
13666 श्री भीकमचंदजी जैन, इमरतिया बेरा, पावटा सी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
13667 श्री ताराचंदजी जैन, फायसागर रोड़, अजमेर (राजस्थान)
13668 श्री नवनीतजी जैन, प्रेमराज राठी के सामने, किशनगढ़ शहर, अजमेर (राजस्थान)
13669 श्रीमती विपलाजी जैन, मेन बाजार, मुकेरिया, जिला-होशियारपुर (पंजाब)
13670 श्री प्रदीप कुमारजी जैन, कनक मंडी चौक के पास, होशियारपुर (पंजाब)
13671 श्री नेमकुमारजी सुराणा, बस स्टैण्ड के पीछे, जनता कॉलोनी, देवली, टोंक (राज)
13672 श्री चम्पकमलजी सुराणा, गौड़ सभा भवन के पास, रानी बाजार, बीकानेर (राज)
13673 श्री नितीनजी नाहर, केशव नगर, यूनिवर्सिटी रोड़, उदयपुर (राजस्थान)
13674 Shri Bharathji Bafna, Perambur, Chennai (Tamilnadu)
13675 श्री अमरसिंहजी फागणा, कोटखेड़ा-321411, जिला-भरतपुर (राजस्थान)
13676 श्री लोकेन्द्र कुमारजी जैन, 66/28, हीरा पथ, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

11000/- श्री मिर्मलजी जैन, बैंकॉक, सुपुत्र स्व. श्री धर्मचंदजी जैन (खींवसरा), मुम्बई, की सुपुत्री सौ.कां. अनिशाजी का शुभविवाह चि. सहजजी सुपुत्र श्री रिखबराजजी कोठारी, बैंकॉक के संग दिनांक 14 अप्रैल 2012 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

11000/- श्रीमती अनिलाजी, राजेशजी कोठारी, जयपुर, सुपुत्री सौ.कां. ईप्साजी सुपौत्री श्री जीतमलजी कोठारी, जयपुर के शुभविवाहोत्सव सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

5100/- श्री धर्मचंदजी, कमलकुमारजी, संजय कुमारजी, प्रियांशुजी मेहता, टूटू, श्री धर्मचंदजी मेहता धर्मसहायिका श्रीमती चाँदकँवरजी मेहता द्वारा पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पावन मुखारविंद से चौथे व्रत के खंध अंगीकृत करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

3100/- श्री भंवरलाल जी, प्रदीपकुमार जी, पारसमल जी डोसी, हैदराबाद, श्रीमती कमलाकंवर धर्मपत्नी श्री भंवरलाल जी डोसी की पुण्य स्मृति में उनके परिवार की ओर से भेंट।

2500/- श्री शांतिलाल जी, कल्पना बाई जी, आशीषकुमार जी लुणावत, बैंगलोर, चि. आशीष कुमार के विवाहोपलक्ष्य में भेंट।

2500/- श्री निर्मल कुमार जी मनोहर लाल जी बम्ब, बैंगलोर, अपने भानजे चि. आशीष कुमार के विवाह के अवसर पर मायरा भरने के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्रीमती अरूणाजी जैन धर्मपत्नि श्री संजीव कुमारजी जैन, होशियारपुर, अक्षय तृतीय के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती कमलादेवी तपस्वीलाल जी बाघमार, भावना विरेन्द्र जी बाघमार, प्रीति जीतेश जी बाघमार, जबलपुर द्वारा भेंट।

2100/- श्री अशोक कुमार जी सिंघवी, जोबनेर, परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के जोबनेर विराजने पर भेंट।

1100/- श्री बसन्तजी लोढ़ा, भिवण्डी, पूज्य पिताश्री पन्नालालजी लोढ़ा का 61 वर्ष की आयु में दिनांक 11 मई, 2012 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती सावित्रीजी, नरेन्द्रजी जैन (फाजिलाबाद वाले), हिण्डौनसिटी, सुपुत्र चि. नितिनजी का शुभविवाह सौ.कां. शिल्पाजी के संग 30 अप्रेल, 2012 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री पदमचंदजी, रतनचंदजी, धर्मचंदजी, अशोकजी जैन, इन्दौर, पूज्य पिताश्री बसन्तलालजी कटारिया की पुण्य स्मृति में सप्रेम भेंट।

1001/- श्री कमलचन्दजी मूसल, जयपुर, चि. त्रिलोकचंदजी मूसल का दिनांक 16 अप्रेल, 2012 को अल्पायु में स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

1000/- श्री हस्तीमलजी बसन्तीदेवीजी सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकात्ता, नागौर, बेंगलुरू, श्रीमती बसन्तीदेवीजी सुराणा के चौथे वर्षीतप का पारणा नागौर में परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की पावन नेश्राय में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री मोहनलालजी, महावीरचंदजी, राजेशजी मुथा, बेंगलुरू, कर्नाटक जैन क्रान्फ्रैन्स के नवनिर्वाचित अध्यक्ष पद पर श्री मोहनलालजी मुथा एवं कर्नाटक जैन महिला कान्फ्रैन्स की नवनिर्वाचित अध्यक्षा पद पर श्रीमती उषाजी धर्मपत्नी श्री राजेशजी मूथा के निर्वाचित होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्रीमती हंसकंवर जी सिंघवी धर्मपत्नी श्री गुलाबराज जी सिंघवी, जोधपुर, अपनी पुत्रवधू श्रीमती उषा जी सिंघवी धर्मपत्नी श्री महेन्द्र कुमार जी के वर्षीतप पारणा हेतु मदनगंज पधारकर आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में।

511/- श्री मनोजकुमार जी, विनोदकुमार जी जैन चौधरी, सवाईमाधोपुर, श्रीमती राजेश जी जैन धर्मपत्नी श्री त्रिलोकचन्द जी जैन चौधरी के वर्षीतप एकान्तर उपवास का पारणा व श्री त्रिलोकचन्द जी जैन के एक वर्षीय एकासन एकान्तर तप पारणा करने के उपलक्ष्य में सादर भेंट।

501/- श्री अमोलकचंदजी, कपूरचंदजी, बाबूलालजी, धरमचंदजी, मोहनलालजी जैन (जरखोदा वाले), इन्दौर, पूज्य श्री शंकरलालजी जैन का दिनांक 31 मार्च, 2012 को देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में सप्रेम भेंट।

501/- श्री देवेन्द्र कुमार जी, डॉ. महावीर प्रसाद जी जैन-सूरवाल, सवाईमाधोपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री रामकरण जी जैन की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।

501/- श्री उम्मेदचंदजी, दानमलजी, राजेन्द्रजी, ऋषभजी जैन, जयपुर, पूज्य पिताश्री हरकचंदजी जैन-बोहरा (जरखोदा वाले) की पन्द्रहवीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री शीतल प्रसादजी जैन, हिण्डौनसिटी, चि. रितेश सुपुत्र श्री शीतल प्रसादजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. आभाजी जैन सुपुत्री श्री महेन्द्र कुमार जी जैन के संग दिनांक 15 अप्रैल 2012 को सुसम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री शांतिलालजी एवं स्व. श्रीमती मैनाबाईजी दुधेड़िया, शूले-बेंगलुरू, पुत्रवधू श्रीमती मायादेवीजी धर्मपत्नी श्री नवरतनमलजी दुधेड़िया के वर्षीतप के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री अनिलजी नवलखा, जयपुर, सुपुत्र चि. आशीषजी नवलखा के पुत्ररत्न के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री प्रकाशचंदजी, रिखबचंदजी लोढ़ा, नाडसर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दूदू में सपरिवार दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री प्रकाशचंदजी, रिखबचंदजी लोढ़ा, नाडसर, परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के मुण्डवा में सपरिवार दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर, श्रीमती केशर कंवर एवं श्री चंचलमल जी गांग के विवाह की 46 वीं वर्षगांठ तथा अपने पौत्र राहुल गांग सुपुत्र श्रीमती योगिता-राजेश जी गांग के 16 वें जन्मदिवस पर भेंट।

500/- श्रीमती उषा जी धर्मपत्नी श्री नरेन्द्र कुमार जी सिंघवी, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री मनीष सिंघवी (सुपौत्र स्व. श्रीमती रतनकंवर-मांगीलाल जी सिंघवी) के आई.आई.टी. खडगपुर द्वारा बी.टेक करने पर।

500/- श्री गिरिराज जी पंचोली, कुण्डेरा-सवाईमाधोपुर, श्रीमती रामनिवासी देवी धर्मपत्नी श्री रामप्रताप जी पंचौली का दिनाँक 10 मई, 2012 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री नरपतराज जी नागौरी, जयपुर, अपनी सुपुत्री सुश्री निधि नागौरी के एम.बी.बी.एस. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने पर भेंट।

500/- डॉ. चन्दनबाला जी, जोधपुर, पूज्य पिताश्री जौहरीमल जी संखलेचा की 16 मई को 5 वीं पुण्य तिथि पर।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार प्राप्त

2000/- श्री हस्तीमलजी बसन्तीदेवीजी सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकात्ता, नागौर, बेंगलुरू, श्रीमती बसन्तीदेवीजी सुराणा के चौथे वर्षीतप का पारणा नागौर में परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की पावन नेश्राय में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

20000/- श्री विनयचन्दजी सुमनजी कोठारी, जयपुर, श्रीमान् चुन्नीलालजी ललवाणी 'प्राणीमित्र' की पुण्य स्मृति में मंडल से साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के प्रवचनों की पुस्तक 'जीवन-अमृत की छाँव' के पुन: प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

11000/- श्रीमती विजया जी मेहता एवं प्रदीपकुमारजी, प्रकाशकुमारजी, अरूणकुमारजी, सिद्धार्थजी, आशीष जी, अंकित जी, आदित्यजी, अनुरागजी, मानव जी बागरेचा मेहता परिवार, होसपेट-चेन्नई, द्वारा जीवदया में।

10000/- श्रीमती कमलादेवी बोथरा धर्मपत्नी स्व. श्री चन्द्रसिंह जी बोथरा, जयपुर, साहित्य प्रकाशनार्थ।

1100/- श्री विनय जी लुणावत, जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री राजेन्द्र जी लुणावत सुपुत्र स्व. श्री सुमेरमल जी लुणावत के 23 अप्रेल, 2012 को देवलोक गमन होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री सुकनराज जी गुगलिया, हैदराबाद, जीवदया हेतु भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

500/- श्री रामलक्ष्मण जी कुम्भट, जोधपुर, सुश्राविका श्रीमती उगमकंवर धर्मपत्नी श्री मगराज जी कुम्भट की द्वितीय पुण्यतिथि दिनाँक 04.06.2012 पर उनके परिवार की ओर से उनकी पावन स्मृति में भेंट।

आगामी पर्व

आषाढ कृष्णा 14	सोमवार	18.06.2012	चतुर्दशी, पक्खी
आषाढ शुक्ला 2	गुरुवार	21.06.2012	आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भ (इसके पश्चात् गाजबीज होने पर असज्झाय नहीं)
आषाढ शुक्ला 8	बुधवार	27.06.2012	अष्टमी
आषाढ शुक्ला 14-15	मंगलवार	03.07.2012	चातुर्मास प्रारम्भ
श्रावण कृष्णा 8	बुधवार	11.07.2012	अष्टमी
श्रावण कृष्णा 14	बुधवार	18.07.2012	चतुर्दशी, पक्खी
श्रावण कृष्णा 30	गुरुवार	19.07.2012	आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की 86 वीं पुण्य-तिथि

मान गुरुवर महान् हैं

श्री गजेन्द्र कुमार जैन

(तर्जः मुनिवर मान महान् है)

मान गुरुवर महान् हैं, रत्नवंश की शान हैं
जीवन इनका उन्नत-उज्ज्वल, जैनसंघ की आन हैं.....।। टेर।।
अचलचंद के थे उजियारे, छोटाबाई के जाये हैं
सेठिया कुल को खूब दिपाया, संयम पथ पर आये हैं
जिनशासन के ताज हैं, इस आरे की सौगात हैं.....।। 1।।
चौथे पद के ये हैं स्वामी, पच्चीस गुण के धारक हैं,
मन से करते गुरु पालना, शान्त चित्त के धारक हैं।
ज्ञान-क्रिया की खान हैं, सन्तों में ये महान् हैं.....।। 2।।
जिनशासन के तेज सितारे, जीवन इनका बोलता,
जो भी इनकी शरण में जाता, पथ से कभी न डोलता।
अंग-उपांगों के ज्ञाता हैं, जीवन के निर्माता हैं.....।। 3।।
'गजेन्द्र' करता गुरु वंदना, मान गुरु के चरणों में,
भवसागर से पार उतारो, सिद्धशिला के आंगन में।
टलते विषय-विकार हैं, गुरुवर का आधार है.....।। 4।।

-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान,
ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर (राज.)

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 66 से भी अधिक वर्षो से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 14 से 21 अगस्त 2012** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **15 जुलाई 2012** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
.....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स- 2636763, मो.-98280-32215 (संयोजक), 94610-13878 (सचिव), 94142-67824 (का. प्रभारी) ,ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के निवेदन को स्वीकार कर संघ द्वारा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 50 वें दीक्षा-दिवस के शुभ अवसर पर एक वर्ष के लिए आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना का विस्तार किया गया है।

इस योजना के माध्यम से गत 6 वर्षों से मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं । छात्र चयन समिति के पास से आवेदन-पत्र मंगवा सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार है-

नियमावली

1 आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।

2 आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।

3 आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।

4 आंमत्रित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा ।

5 छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	Up to Class 10th	11th & 12th	Graduation & Post Graduation	Professional Etc.
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

6 चयन-समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।

7 सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-B.Budhmal Bohra,No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79 Ph & Fax No.- 044-42728476,Email- guruhasti_scholarship@yahoo.co.in

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि:- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त है। आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है। आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org पर आवेदन-पत्र Download कर सकते हैं।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें।
– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाऊस खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की वृष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है ।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

213, Ashoka Road, Lashkar Mohalla
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan

Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)

Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

[redacted] BRANCHES : [redacted]

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

❖❖❖

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

❖❖❖

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

❖❖❖

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT BARS

DRI Plant

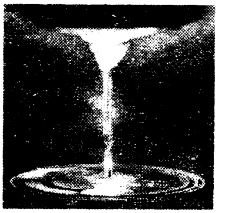
Electric Arc Furnace

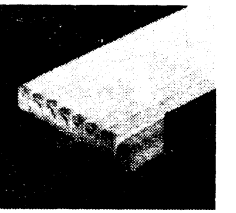
Billets

Rolling Mill

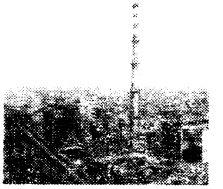
Captive Power Plant

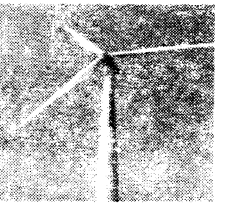
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

समस्त गुरु भाईयों को सादर जय जिनेन्द्र।

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत 1008 श्री हस्तीमल जी म. सा. एवं आचार्य हस्ती के पट्टधर सरल, निरपेक्ष, दीर्घदृष्टा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं शान्त–दान्त--गम्भीर, परम तेजस्वी उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म. सा. एवं संत–सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ, गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत छः वर्षों से युवारत्न छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्वि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर रुप से चल रही हैं।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के निवेदन को स्वीकार कर संघ द्वारा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म. सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के शुभ अवसर पर एक वर्ष के लिए आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना का विस्तार कर दिया गया हैं।

हमारा यह विश्वास है कि यह योजना न केवल छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से भी नींव का पत्थर साबित होगी। छात्रवृत्ति योजना के तहत् संचालित शिविरों के माध्यम से अनेक छात्र–छात्राएँ संघ के कर्मनिष्ठ स्वाध्यायी एवं ऊर्जावान कार्यकर्त्ता के रूप में उभरेगें।

आप सभी गुरुभाइयों से सनम्र निवेदन है कि इस योजना के उद्धेश्यों को सफल बनाने हेतु हम अपने गुरुभाइयों के व्यवहारिक एवं धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्वि हेतु इस योजना के आवदेन पत्र भरवाकर अपना कर्त्तव्य निभाएगें एवं आप स्वयं एवं संघ समर्पित गुरुभाइयों को इस योजना में अर्थ सहयोग करावें एवं छात्र–छात्राओं का भविष्य उज्जवल बनाने में सहायक बनें।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के प्रत्येक कार्यक्रम व आयोजन आपके स्नेह व निरन्तर सहयोग से ही गतिमान है, तथा इस योजना की सफलता में भी आपके गतिमान निरन्तर सहयोग की अपेक्षा है।

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते है, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है --

Scholarship Fund Bank A/c Details
A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168

सहयोग राशि भेजने एवं योजना संबंधित अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें--

1. **Ashok Kavad,** Chennai (9381041097)
2. **Sumtichand Mehta,** Pipar (9414462729)
3. **Mahendra Surana,** Jodhpur (9309087760)
4. **Budhmal Bohra,** Chennai (9444235065)
5. **Rajkumar Golecha,** Pali (9829020742)
6. **Manoj Kankaria,** Jodhpur (9414563597)
7. **Praveen Karnavat,** Mumbai (9821055932)
8. **Kushalchand Jain,** Sawai Madhopur (9460441570)
9. **Jitendra Daga,** Jaipur (9829011589)
10. **Mahendra Bafna,** Jalgaon (9422773411)
11. **Harish Kavad,** Chennai (9500114455)
12. **Manish Jain,** Chennai (9543068382)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)

098407 18382

2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.

S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.

NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES

NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS

NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 06 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जून, 2012 ★ आषाढ़, 2069

Kalpataru
AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज सुराणा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन